अक्तूबर में वृद्धि दर सुस्त पड़कर 0.4 प्रतिशत पर आई, आईआईपी में वृद्धि दर 13 माह के निचले स्तर पर-12

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान वक्फ संपत्ति विवरण पर समय सीमा बढ़ाने से किया सुप्रीम इन्कार-12

एस जयशंकर बोले- जैविक हथियार की चुनौती से निपटने को खाका तैयार करने की जरूरत-13

कोच ने की तारीफ कहा- फिटनेस और फॉर्म बरकरार विराट के भविष्य को लेकर सवाल ही नहीं उठता-14

6th वार्षिकोत्सव विशेषांक
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

अमृत विचार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

| लखनऊ |

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष द्वादशी 03:57 उपरांत त्रयोदशी विक्रम संवत 2082

मंगलवार, 2 दिसंबर 2025, वर्ष 35, अंक 303, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

संसद ड्रामा करने की जगह नहीं : मोदी

शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले प्रधानमंत्री बोले-विपक्ष इसे हताशा निकालने का मंच बना रहा

पहले दिन गूंजे एसआईआर बंद करो के नारे, बार बार गतिरोध के बाद लोस की कार्यवाही स्थगित

हंगामे के बीच एक विधेयक पारित, सरकार ने माना-देशभर के एयरपोर्ट्स पर साइबर अटैक हुए

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विपक्ष पर कड़ा हमला बोलते हुए कहा कि संसद ड्रामा करने की जगह नहीं है, यह काम करने की जगह है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विपक्ष संसद को चुनावी हार के बाद हताशा निकालने का मंच बना रहा है। संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले संसद परिसर में प्रधानमंत्री ने कहा कि सत्र को राजनीतिक ड्रामे का रंगमंच नहीं बनाना चाहिए, बल्कि यह रचनात्मक और परिणामोन्मुखी बहस का मंच होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि यदि विपक्ष चाहे तो वह उसे राजनीति में सकारात्मकता लाने के कुछ सुझाव देने को तैयार हैं। मोदी ने संसद की कार्यवाही बाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा, हमें जिम्मेदारी की भावना से काम करने की जरूरत है। पिछले सत्रों के दौरान संसदीय कार्यवाही बाधित करने के लिए विपक्ष पर निशाना साधते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, नाटक के लिए बहुत जगह है जो लोग यह करना चाहते हैं, वे इसे करते रहें। संसद नाटक के लिए जगह नहीं है, यह काम करने की जगह है। हाल में संपन्न बिहार विधानसभा चुनावों में राजग को मिली शानदार जीत से उत्साहित मोदी ने विपक्षी दलों पर कटाक्ष करते हुए कहा, यहां तक कि आप देश भर में ऐसा कर सकते हैं। आपने वहां बोला है जहां आप हार गए हैं। आप वहां भी बोल सकते हैं जहां आपको हार का सामना करना बाकी है। लेकिन संसद में, ध्यान नीति पर होना चाहिए, न कि नारों पर। बिहार में मतदाता सूची के एसआईआर का विरोध कर रहे विपक्षी सदस्यों के हंगामे के कारण संसद के मानसून सत्र में दोनों सदनों की कार्यवाही बार बार बाधित हुई थी। कहा कि पिछले 10 वर्षों से विपक्ष जो खेल खेल रहा है, वह अब जनता को स्वीकार नहीं है। मोदी ने उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन को राज्यसभा के सभापति के तौर पर पहले सत्र की अध्यक्षता के लिए बधाई दीं।

संसद सत्र की कार्रवाई के पहले दिन मौजूद प्रधानमंत्री मोदी, स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा व संसदीय कार्यमंत्री मंत्री किरेन रीजीजू। ● एजेंसी

सरकार एसआईआर पर चर्चा के खिलाफ नहीं : रीजीजू

नई दिल्ली। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रीजीजू ने राज्यसभा में जोर दिया कि सरकार मतदाता सूची के एसआईआर व चुनाव सुधारों पर चर्चा के खिलाफ नहीं है, लेकिन उसे जवाब देने के लिए कुछ समय दिया जाए। मंत्री के जवाब से असंतुष्ट विपक्ष ने सदन से बहिर्गमन किया। रीजीजू ने उच्च सदन में यह टिप्पणी उस समय की जब कांग्रेस नीत विपक्ष एसआईआर पर तत्काल चर्चा की मांग कर रहा था। उन्होंने कहा कि सरकार एसआईआर पर चर्चा की विपक्ष की मांग पर विचार कर रही है और इस मांग को खारिज नहीं किया गया है। विपक्ष की इस मुद्दे पर तत्काल चर्चा कराए जाने की मांग पर कहा कि वह एसआईआर पर चर्चा के समय के लिए शर्त नहीं रखे।

विपक्ष का हंगामा

पहले दिन लोकसभा में एसआईआर और कुछ अन्य मुद्दों को लेकर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के कारण सदन की बैठक दो बार स्थगन के बाद दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई। हंगामे के बीच ही लोकसभा ने 'मणिपुर माल और सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2025' पारित किया। विपक्ष की नारेबाजी के बीच ही वित्त मंत्री सीतारमण ने 'केंद्रीय उत्पाद शुल्क (संशोधन) विधेयक, 2025' व 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' पेश किया। सुबह 11 बजे सदन की बैठक राष्ट्रगान की धुन के साथ शुरू हुई। इससे पहले लोकसभा अध्यक्ष ने कुछ दिवंगत पूर्व सदस्यों के निधन की जानकारी दी जिसके बाद कुछ पल मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद बिरला ने महिला विश्वकप क्रिकेट और महिला कबड्डी विश्वकप में भारत की जीत पर खिलाड़ियों को बधाई दी। इसके बाद जैसे ही उन्होंने प्रश्नकाल शुरू करने का निर्देश दिया, कांग्रेस, सपा समेत विपक्षी दलों के सदस्य एसआईआर समेत कुछ मुद्दों पर चर्चा की मांग करते हुए अपने स्थानों पर खड़े हो गए। कुछ सदस्य आसन के समीप आ गए। बिरला ने कार्यवाही चलने देने की अपील की। वहीं सरकार ने माना-देशभर के एयरपोर्ट्स पर साइबर अटैक हुए थे।

सदन की लक्ष्मण रेखा का पालन करें सदस्य : राधाकृष्णन

नई दिल्ली। राज्यसभा के सभापति सीपी राधाकृष्णन ने सोमवार को उच्च सदन में अपने प्रथम संबोधन में सदस्यों से संविधान के प्रति निष्ठावान रहने और संसदीय आचरण की निर्धारित लक्ष्मण रेखा का पालन करने की अपील की। सोमवार को सभापति के तौर पर पहली बार सदन की कार्यवाही की अध्यक्षता कर रहे राधाकृष्णन ने अपने पहले भाषण में सदस्यों से संस्थानों का सम्मान करने और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का भी आह्वान किया।

तीन नवनिर्वाचित सांसदों ने राज्यसभा में शपथ ली

नई दिल्ली। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर से राज्यसभा के लिए नवनिर्वाचित तीन सदस्यों को सोमवार को सभापति सीपी राधाकृष्णन ने शीतकालीन सत्र के पहले दिन शपथ दिलाई। चौधरी मोहम्मद रमजान, सज्जाद अहमद किचलू और गुरविंदर सिंह ओबेरॉय समेत तीनों सदस्य सत्तारूढ़ नेशनल कांफ्रेस के हैं।

रेणुका चौधरी कुत्ते के साथ संसद पहुंचीं, विवाद खड़ा हुआ

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद रेणुका चौधरी सोमवार को अपनी कार में एक आवारा कुत्ते को लेकर संसद पहुंच गईं जिससे विवाद खड़ा हो गया और सत्तापक्ष के सांसदों ने उन पर नाटक करने का आरोप लगाया। विवाद के बीच रेणुका ने कहा कि जो लोग अंदर बैठे हैं वो काटते हैं, कुत्ते नहीं काटते। उनका कहना था कि वह आवारा जानवर को उठाकर पशु चिकित्सक के पास ले जा रही थीं। उन्होंने यह भी दावा किया कि सरकार को जानवर पसंद नहीं हैं और उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि आवारा कुत्ते को बचाने के खिलाफ कोई कानून नहीं है।

न्यूज ब्रीफ

सीमा पर 10,000 से अधिक बांग्लादेशी पकड़े गए: बीएसएफ

कोलकाता। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की पूर्वी कमान ने सोमवार को कहा कि पिछले एक साल में सीमापार से घुसपैठ करने या देश से बाहर जाने का प्रयास करते समय 10,263 बांग्लादेशियों को पकड़ा। सुरक्षा बल ने कहा कि हिरासत में लिए गए लोगों की संख्या घुसपैठ रोधी उपायों में की गई वृद्धि दर्शाती है, विशेष रूप से बांग्लादेश में अशांति के दौरान, जब बीएसएफ के जवानों ने अवैध प्रवासियों को भारत में प्रवेश करने से रोकने के लिए कड़ी निगरानी की।

वाणिज्यिक एलपीजी की दरें घटीं

नई दिल्ली। विमान ईंधन (एटीएफ) की कीमतों में 5 .4 प्रतिशत की सोमवार को वृद्धि की गई, जबकि वाणिज्यिक रसोई गैस की कीमतों में 10 रुपये प्रति सिलेंडर की कटौती की गई है। सरकारी तेल कंपनियों ने वैश्विक रुझानों के अनुरूप मासिक मूल्य संशोधन की घोषणा की है। सरकारी ईंधन खुदरा विक्रेताओं के अनुसार, दिल्ली में विमान ईंधन की कीमतें 5,133 .75 रुपये प्रति किलोलीटर बढ़कर 99,676 .77 रुपये प्रति किलोलीटर हो गईं। यह तीसरी मासिक वृद्धि है। एक नवंबर को कीमतों में करीब एक प्रतिशत और एक अक्टूबर को 3 .3 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी।

पराली जलाने को दोष नहीं दे सकते वायु प्रदूषण के कई अन्य कारक

- **शीर्ष कोर्ट ने कहा- प्रदूषण संकट पर सर्दियों में केवल रस्मी सुनवाई नहीं, नियमित निगरानी की जरूरत**
- **अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान के के लिए महीने में दो बार होगी सुनवाई**

नई दिल्ली, एजेंसी

उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के मुद्दे पर सुनवाई को केवल सर्दियों के महीनों में 'रस्मी' सुनवाई के तौर पर नहीं देखा जा सकता है, और इस समस्या के अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान खोजने के लिए महीने में दो बार सुनवाई की जाएगी। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने सामान्य विमर्श में एक अहम बदलाव करते हुए कहा, पराली जलाने का मुद्दा अनावश्यक रूप से राजनीतिक मुद्दा या अहम का मुद्दा नहीं बनना चाहिए।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने दिल्ली- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में वायु प्रदूषण के लिए पराली जलाने को मुख्य कारण बताए जाने पर सवाल उठाते हुए पूछा, कोविड के दौरान पराली जलाई जा रही थी, लेकिन फिर भी लोगों को साफ नीला आसमान क्यों दिखाई दे रहा था? इससे ज्ञात होता है कि इसके पीछे अन्य कारक भी हैं। न्यायमूर्ति सूर्यकांत के स्वयं का पैतृक निवास हरियाणा के हिसार में स्थित है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, हम पराली जलाने पर टिप्पणी नहीं करना चाहते, क्योंकि इसका बोझ उन लोगों (किसानों) पर डालना गलत है, जिनका इस न्यायालय में बहुत कम प्रतिनिधित्व है। प्रधान न्यायाधीश ने तात्कालिक और दीर्घकालिक उपायों में स्पष्टता की मांग करते हुए केंद्र से वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अन्य के विशिष्ट कदमों को बताने को कहा ताकि वह जान सके कि वायु प्रदूषण के खतरे से निपटने के लिये क्या अल्पकालिक और दीर्घकालिक कदम उठाए गए। शीर्ष अदालत ने इसी के साथ मामले की अगली सुनवाई के लिए 10 दिसंबर की तारीख तय की।

डिजिटल अरेस्ट मामलों में तुरंत एक्शन ले सीबीआई

नई दिल्ली। शीर्ष कोर्ट ने सीबीआई को देशभर में डिजिटल अरेस्ट घोटाले की एकीकृत जांच का सोमवार को निर्देश दिया और आरबीआई से पूछा कि वह साइबर अपराधियों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे बैंक खातों का पता लगाने और उन्हें फ्रीज करने के लिए एआई का इस्तेमाल क्यों नहीं कर रहा है? प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति बागची की पीठ ने पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक और तेलंगाना सहित गैर-राजग शासित सभी राज्य सरकारों से कहा कि वे अपने अधिकार क्षेत्र में डिजिटल अरेस्ट के मामलों की जांच के लिए सीबीआई को अनुमति दें। शीर्ष अदालत ने हरियाणा के एक बुजुर्ग दंपति की शिकायत पर स्वत: संज्ञान वाले मामले में निर्देश पारित करते हुए कहा कि साइबर अपराधी ज्यादातर वरिष्ठ नागरिकों को निशाना बनाते हैं और उनकी गाढ़ी कमाई हड़प लेते हैं।

एनआईए ने लखनऊ में कई घंटे खंगाला डॉ. शाहीन का घर, डिजिटल सामग्री की जब्त

दिल्ली विस्फोट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ। दिल्ली लाल किला मेट्रो स्टेशन के बाहर हुए बम धमाके की मास्टर माइंड डॉ. शाहीन शाहिद के खंदारी बाजार स्थित आवास पर सोमवार को एनआईए की टीम पहुंची। एनआईए के अधिकारियों ने यहां करीब छह घंटे तक पूरे घर की तलाशी ली। वहीं, भाई व पिता से लगातार पूछताछ की गई। तलाशी के दौरान घर के अंदर से कई दस्तावेज और डिजिटल डिवाइस बरामद हुए। जिनको जांच टीम साथ लेकर गई।

● खंदारी बाजार में छह घंटे तक रही एनआईए की टीम

इसके पहले टीम के आने की सूचना मिलते ही पर इलाके में भारी पुलिस तैनात कर दिया गया था। खंदारी बाजार की कई गलियों में आवागमन पर रोक लगा दी गई थी। टीम में फोरेंसिक विशेषज्ञ समेत आठ सदस्य शामिल थे। इसके अलावा दो अन्य टीमें भी लखनऊ के कई इलाकों में जांच कर रही थीं।

एनआईए ने कश्मीर में आठ स्थानों पर छापे मारे

नगर। एनआईए ने पुलवामा, शोपियां और कुलगाम जिलों में कई स्थानों पर छापेमारी की। टीम ने शोपियां में मौलवी इरफान अहमद वागे के आवास पर छापा मारा। वागे का नाम कट्टरपंथ को बढ़ावा देने और सफेदपोश आतंकी मॉड्यूल में लोगों की शामिल करने के मुख्य साजिशकर्ता के रूप में उभरा है। उसे अक्टूबर में पुलिस ने गिरफ्तार किया था और एनआईए ने कार विस्फोट मामले की जांच अपने हाथ में लेने के बाद उसे हिरासत में ले लिया था।

गोंडा में छात्रा की संदिग्ध मौत से कॉलेज में मचा हड़कंप

- **हॉस्टल के कमरे में फंदे से लटकता मिला शव, सुरक्षा इंतजामों पर उठे सवाल**

संवाददाता, गोंडा

अमृत विचार: नगर कोतवाली क्षेत्र के हारीपुर लखनऊ रोड स्थित एससीपीएम पैरामेडिकल कॉलेज में सोमवार शाम उस समय सनसनी फैल गई जब बीएएमएस सेकेंड ईयर की छात्रा महावीस खानम (22) का शव उसके हॉस्टल कमरे में फंदे से लटकता मिला। दरवाजा पूरे दिन बंद रहने पर साथी छात्राओं को शक हुआ और जब पुलिस की मौजूदगी में कमरा खोला गया तो छात्रा मृत अवस्था में मिली। घटना के बाद कॉलेज परिसर में दहशत का माहौल बन गया है।

घटना ने हॉस्टल सुरक्षा व्यवस्था और निगरानी पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। पुलिस जांच के बाद ही मौत की वजह स्पष्ट हो सकेगी। सोमवार शाम करीब पांच बजे साथी छात्राओं ने देखा कि महावीस के कमरे का दरवाजा सुबह से बंद है। आवाज देने पर भी कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर उन्होंने कॉलेज प्रबंधन को सूचना दी। इसके बाद नगर कोतवाली पुलिस को बुलाया गया। पुलिस ने दरवाजा खुलवाया तो अंदर महावीस का शव फंदे से झूलता मिला। यह दृश्य देख छात्राएं सहम गईं।

फॉरेंसिक टीम की जांच भी नहीं दे सकी कोई सुराग

सूचना पर पहुंची फॉरेंसिक टीम ने कमरे की बारीकी से जांच की, लेकिन शुरुआती जांच में कोई विशेष सुराग नहीं मिला। कमरे से कोई सुसाइड नोट भी बरामद नहीं हुआ। पुलिस मामले को संदिग्ध आत्महत्या मानकर जांच कर रही है, हालांकि आत्महत्या की वजह स्पष्ट नहीं है।

क्लास अटेंड कर दोपहर में लौटी थी हॉस्टल

कॉलेज के निदेशक अजीताभ दुबे ने बताया कि छात्रा ने सोमवार को आधे दिन तक क्लास अटेंड की थी। दोपहर में वह हॉस्टल के कमरे में वापस चली गई थी। "शाम को दरवाजा बंद होने की सूचना मिली तो तुरंत पुलिस को बुलाया गया। छात्रा ने यह कदम क्यों उठाया, इसका कोई कारण सामने नहीं है।

परिजनों को सूचना, जांच सभी पहलुओं पर

नगर कोतवाली प्रभारी निरीक्षक विवेक त्रिवेदी ने बताया कि परिजनों को घटना की जानकारी दे दी गई है। उनके आने के बाद पंचनामा कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि पुलिस मामले की हर एंगल से जांच कर रही है।

आचार संहिता को कानूनी रूप देने से इसे लागू करने में आएगी रुकावट: विधि आयोग

- **संसद की संयुक्त समिति को दी अपनी राय**

नई दिल्ली, एजेंसी

विधि आयोग ने कहा है कि आदर्श आचार संहिता लागू करने के लिए कानून लाने से चुनावों के दौरान इसके क्रियान्वयन में रुकावट आएगी और हो सकता है कि निर्वाचन आयोग की शक्ति कम हो जाए, जो स्वतंत्र, निष्पक्ष और समय पर चुनाव कराने के अनुकूल नहीं होगा।

लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने से जुड़े विधेयकों का अध्ययन कर रही संसद की संयुक्त समिति को दी गई अपनी राय में, विधि आयोग ने कहा कि आदर्श आचार संहिता की 'सबसे बड़ी ताकत' इसकी तेजी से सुधार करने की क्षमता में है।

उसने कहा, चुनाव सख्ती से समय पालन करते हुए होते हैं, जिसके कारण उल्लंघन पर कुछ दिन या घंटों के भीतर ही ध्यान देना होता है, ताकि चुनावी प्रक्रिया को ऐसा नुकसान न हो जिसकी भरपाई ही न हो सके। विधि आयोग ने कहा कि अगर आदर्श आचार संहिता (एमसीसी) वैधानिक हो जाती है, तो उल्लंघन के बाद औपचारिक कानूनी कार्रवाई शुरू हो जाएगी, जिससे न्यायिक पड़ताल शुरू हो सकती है।

2001 में भी आयोग ने ऐसा ही पक्ष रखा था

आयोग ने चेतावनी दी कि फैसले की प्रक्रिया हमेशा तेज, निर्णायक और असल कार्रवाई की जरूरत को पूरा नहीं कर सकती। निर्वाचन आयोग के एक अधिकारी ने याद दिलाया कि 2001 के आसपास, जब आयोग से चुनाव सुधार के बारे में पूछा गया था, तो उसने ऐसा ही पक्ष रखा था। विधि आयोग ने कहा कि मौजूदा प्रणाली निर्वाचन आयोग को अनुच्छेद 324 के तहत अपनी संपूर्ण शक्तियों का इस्तेमाल करके बिना किसी प्रक्रियागत देरी के समय पर दखल देने की इजाजत देती है।

निर्देश | मुख्यमंत्री योगी ने कहा- धान उठान, मिल मैपिंग की प्रक्रिया और सरल होगी

धान खरीद के बाद भुगतान में देरी नहीं करेंगे बर्दाश्त

- **1,984 करोड़ रुपये किसानों के खातों में ट्रांसफर, सीएम ने सभी किसानों का धान खरीदने का दिया निर्देश**

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिए हैं कि धान क्रय केंद्र पर आने वाले प्रत्येक किसान का धान खरीदा जाए और भुगतान समय पर सीधे उनके खाते में पहुंच जाए। चेतावनी दी कि भुगतान में देरी किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं होगी। उन्होंने धान उठान, मिल-मैपिंग और अन्य प्रक्रियाओं को और सरल बनाने पर भी जोर दिया, ताकि खरीद सुचारु और निरंतर गति में बनी रहे।

मुख्यमंत्री ने सोमवार को आवास पर शासन के शीर्ष अधिकारियों के साथ धान खरीद की स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि धान खरीद की गति तेज हो और किसानों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। बैठक में बताया गया कि इस वर्ष कॉमन धान का एमएसपी 2369 रुपये और ग्रेड-ए का 2389 रुपये प्रति क्विंटल तय हुआ है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 69 रुपये अधिक है। अधिकारियों ने जानकारी दी कि 30 नवंबर तक 1,51,030 किसानों से 9.02 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा जा चुका है और 1,984 करोड़ रुपये से अधिक की राशि सीधे किसानों के खातों में भेजी गई है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि भुगतान में देरी किसी भी स्तर पर स्वीकार्य नहीं होगी।

आंगनबाड़ी में फोर्टिफाइड चावल की आपूर्ति के निर्देश : मुख्यमंत्री ने यह भी निर्देश दिया कि मिड-डे मील और आंगनबाड़ी केंद्रों में फोर्टिफाइड चावल की सप्लाई निर्बाध रूप से सुनिश्चित की जाए। इसके लिए पर्याप्त उपलब्धता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि एफआरके सप्लाई सुचारु रखने हेतु वेंडरों की संख्या बढ़ाई जाए और तकनीकी अड़चनों का तत्काल समाधान किया जाए। बैठक में बताया गया कि अब तक लगभग 2,130 मीट्रिक टन एफआरके गुणवत्ता परीक्षण में उत्तीर्ण हुआ है।

खाद-बीज की कमी नहीं होनी चाहिए

बैठक में खाद और बीज की उपलब्धता पर भी चर्चा हुई। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि किसी भी जिले में खाद या बीज की कमी नहीं होनी चाहिए और किसानों को दोनों वस्तु आसानी से उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग स्टॉक और आपूर्ति की नियमित समीक्षा सुनिश्चित करें।

धान क्रय केंद्रों की संख्या होगी 5 हजार

राज्य कुल 4,227 खरीद केंद्र संचालित हैं। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि क्रय केंद्रों की संख्या बढ़ाकर 5000 की जाए, ताकि किसानों को अपने गांव-कस्बे के निकट ही सुविधा उपलब्ध हो सके। उन्होंने खरीद केंद्रों पर आवश्यकता के अनुसार मैनपावर बढ़ाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि केंद्र पर भीड़ न लगे और किसानों को वापस न जाना पड़े, यह प्रशासन की जिम्मेदारी है।

अमृत विचार

लखनऊ, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

बेरोजगार युवाओं को आईटीआई रोजगार मेले में अवश्य बुलाएं

अमृत विचार, लखनऊ : उप्र. कौशल विकास मिशन निदेशक पुलकित खरे ने निर्देश दिया है कि पिछले तीन वर्षों में प्रशिक्षित ऐसे युवाओं का विस्तृत डाटाबेस तैयार किया जाए जिन्हें अब तक रोजगार प्राप्त नहीं हुआ है। ऐसे सभी युवाओं की हर माह 21 तारीख को आईटीआई में आयोजित रोजगार मेले में अनिवार्य सहभागिता सुनिश्चित की जाए, जिससे उन्हें उपलब्ध अवसरों का लाभ मिल सके। मिशन निदेशक ने निर्देशित किया कि सभी मंडलों में मंडल स्तरीय प्रतियोगिता 10 दिसंबर तक अनिवार्य रूप से आयोजित की जाए। प्रतियोगिता बाद प्रत्येक कौशल क्षेत्र से अवरोही क्रम में पांच-पांच पात्र अभ्यर्थियों के नाम मिशन कार्यालय को उपलब्ध कराए जाएं। उन्होंने बताया कि मिशन द्वारा प्रतियोगिता के लिए सेट ए एवं सेट बी के पासवर्ड-कोडेड गोपनीय प्रश्नपत्र जिलों को भेजे जाएंगे। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि जनपद स्तर पर चयनित अभ्यर्थियों को प्राथमिकता के साथ मंडल स्तर की प्रतियोगिता में प्रतिभाग कराना सुनिश्चित किया जाए, ताकि उन्हें राज्य स्तर तक आगे बढ़ने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो सके। मिशन निदेशक ने बताया कि जीरो पावर्टी अभियान की समीक्षा मुख्यमंत्री कार्यालय स्तर से की जा रही है, जिसमें चिन्हित परिवारों एवं स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें स्व-रोजगार तथा वेज-एम्प्लॉयमेंट से जोड़ने की दिशा में मिशन द्वारा निरंतर कार्य किया जा रहा है।

रैली निकालकर एड्स से बचाव की दी जानकारी

संवाददाता, प्रतापगढ़। अमृत विचार : विश्व एड्स दिवस पर सोमवार को सीएमओ कार्यालय से जागरूकता रैली निकाली गई। इसके अलावा सीएमओ कार्यालय के शास्त्री सभागार में एड्स जागरूकता पर संगोष्ठी हुई। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एएन प्रसाद व एआरटी/एसएसके के नोडल डॉ. मनोज खत्री ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। रैली श्रीराम चौराहा, चौक घंटाघर होते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय पर समाप्त हुई। इसके अलावा संगोष्ठी का आयोजन मुख्य चिकित्सा अधिकारी के शास्त्री सभागार में हुआ। इसमें बाधाएं होगी दरकिनार एचआईवी और एड्स पर होगा सशक्त प्रहार विषय पर चर्चा हुई। संगोष्ठी में मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि सही जानकारी एवं बचाव से एड्स जैसी भयावह बीमारी से बचा जा सकता है। इस अवसर पर जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. राजेश कुमार, सीएमएस डॉ. शैलेन्द्र कुशवाहा डॉ. राकेश त्रिपाठी, लैब टेक्नीशिएन, एआरटी स्टाफ, एनटीईपी स्टाफ एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

25 हजार आरोग्य मंदिर और 81 मेडिकल कॉलेजों के साथ यूपी बना देश में मॉडल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

विकसित यूपी कॉन्क्लेव

- **विकसित भारत 2047 के लक्ष्य में उप्र. भूमिका निर्णायक: ब्रजेश पाठक**

कार्यक्रम को संबोधित करते उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, मंच पर मौजूद अन्य।

अमृत विचार : उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि हमारा संकल्प है कि 2047 तक उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता को वही अत्याधुनिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हों, जो आज केवल महानगरों में मिलती हैं। हमारी कोशिश है कि एडवांस मेडिकल सुविधाएं जिले और तहसील स्तर तक पहुंचें और उत्तर प्रदेश विकसित भारत के स्वास्थ्य मॉडल का नेतृत्व करे।

उप मुख्यमंत्री सोमवार को राजधानी स्थित निजी होटल में 'विकसित यूपी कॉन्क्लेव ' में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा निर्धारित विकसित भारत 2047 के विज़न को साकार करने में उप्र. की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। इसके लिए राज्य सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार में ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं। इस वक्त प्रदेश में 25 हजार से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर, 3500 से अधिक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 200 से अधिक विशिष्ट अस्पताल और 81 मेडिकल कॉलेज संचालित हो रहे हैं। इतना ही नहीं, निःशुल्क एंबुलेंस सेवा 102-108 का रेस्पॉन्स टाइम कम किया गया है, जिससे आपातकालीन सेवाओं की गति और दक्षता बढ़ी है। उन्होंने बताया कि सरकार संस्थागत प्रसव दर को बढ़ाते हुए मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करने पर निरंतर कार्य कर रही है। विभिन्न स्वास्थ्य सेवाएं अब जिला अस्पतालों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) पर उपलब्ध कराई जा रही हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों को बड़ी राहत मिली है।

चिकित्सा स्वास्थ्य राज्य मंत्री मयंकश्वर शरण सिंह ने कहा कि विकसित उप्र. ही विकसित भारत का मार्ग प्रशस्त करेगा और इसमें स्वास्थ्य क्षेत्र की भूमिका निर्णायक रहेगी। आर्थिक प्रगति का आधार स्वस्थ जनसंख्या है और इसी दिशा में प्रदेश सरकार निरंतर सुधार कर रही है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश अवस्थी, जी.एन. सिंह, स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव अमित कुमार घोष, प्रमुख सचिव नियोजन आलोक कुमार, सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य ऋचु महेश्वरी, सचिव स्वास्थ्य एवं निदेशक एनएचएम पिंकी जोवेल, सचिव चिकित्सा शिक्षा अपर्णा यू, स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. रतनपाल सुमन, विशेष सचिव धीरेन्द्र सचान, तथा आर्यका अखौरी सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी एवं विशेषज्ञ उपस्थित रहे।

लखनऊ का रामसागर मिश्र, कानपुर का डफरिन समेत 14 अस्पताल बनेंगे हाईटेक

- **अमृत विचार, लखनऊ :** गुणवत्ता युक्त चिकित्सकीय सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रदेश के 14 अस्पतालों को आधुनिक उपकरणों से लैस किया जाएगा। इसके लिए राज्य सरकार ने 9.80 करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृत प्रदान की है। ये जानकारी सोमवार को उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने दी। उन्होंने बताया कि लखनऊ के बीकेटी क्षेत्र के साढ़ामऊ स्थित रामसागर मिश्र संयुक्त चिकित्सालय में 2.70 करोड़ रुपये से उपकरण खरीदे जाएंगे। बलरामपुर जिला महिला चिकित्सालय को 1.52 करोड़ रुपये, रायबरेली जिला चिकित्सालय को 1.56 करोड़ रुपये, महाराजगंज जिला संयुक्त चिकित्सालय को 1.16 करोड़ रुपये, कानपुर नगर के एएचएम डफरिन चिकित्सालय को 16.47 लाख रुपये, बागपत जिला संयुक्त चिकित्सालय को 28.55 लाख रुपये की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति को मंजूरी दी गई है। इस धनराशि से उपकरण आदि खरीदे जाएंगे। इसी तरह गोरखपुर के 100 शैय्या क्षय रोग सह सामान्य चिकित्सालय में 51.59 लाख रुपये, जिला चिकित्सालय में 78.45 लाख रुपये अत्याधुनिक मशीनें स्थापित की जाएंगी। हमीरपुर के दीवान शत्रुघ्न सिंह संयुक्त चिकित्सालय को 3.35 लाख रुपये की प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई है। बस्ती हरैया के 100 शैय्या महिला चिकित्सालय में 8.68 लाख रुपए की मशीनें लगेंगी। इटावा के डॉ. भीमराम आंबेडकर संयुक्त जिला चिकित्सालय में 38.96 लाख, वाराणसी में मानसिक चिकित्सालय में प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज भवन निर्माण के लिए उपलब्ध कराई गई भूमि से चिकित्सालय परिसर को अलग किया जाएगा। चहारदीवारी निर्माण के लिए 1.27 करोड़ रुपए अवमुक्त किए गए हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ आईपीएस 2023 और 2024 बैच के प्रशिक्षु आईपीएस अधिकारी।

जीरो टॉलरेंस के साथ कानून-व्यवस्था को दें सर्वोच्च प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

2023 बैच के आईपीएस व 2024 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों ने की सीएम से की भेंट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) 2023 और 2024 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों को ''संवाद, संवेदनशीलता और सकारात्मकता'' का मंत्र दिया। उन्होंने कहा कि जीरो टॉलरेंस के साथ कानून-व्यवस्था को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। उत्तर प्रदेश जैसा विशाल राज्य पुलिस के लिए अनेक चुनौतियां लेकर आता है, इसलिए प्रशिक्षु अवधि को सीखने, समझने और अपने पुलिसिंग मॉडल को मजबूत बनाने का सुनहरा अवसर मानें।

सीएम आवास पर सोमवार को 23 प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ मुख्यमंत्री ने औपचारिक भेंट के दौरान कहा कि जिलों में प्रशिक्षण के दौरान यह सीखना सबसे आवश्यक है कि वास्तविक समस्याओं का प्रभावी और संतुष्टिपरक समाधान कैसे किया जाए। उन्होंने जोर देकर कहा कि पुलिस हमेशा फर्स्ट रिस्पांडर होती है। आपकी तत्परता, भाषा और प्राथमिकता पर ही पीड़ित का विश्वास टिका होता है। उन्होंने प्रशिक्षु अधिकारियों से कहा कि पुलिस सेवा में सत्यनिष्ठा, अनुशासन और मानवीय दृष्टि ही सबसे बड़ी पूंजी है। आपका आचरण आने वाले वर्षों में न केवल कानून-व्यवस्था को दिशा देगा, बल्कि प्रदेश की सुरक्षा और जनता के विश्वास को भी मजबूत करेगा। मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से महिलाओं के प्रति अपराध, साइबर क्राइम और अवैध ड्रग्स के नेटवर्क के खिलाफ सतर्कता बढ़ाने पर जोर दिया।

उन्होंने कहा, अपराध की प्रकृति तेजी से बदल रही है, इसलिए आपकी प्रतिक्रिया और तैयारी भी उतनी ही आधुनिक और त्वरित होनी चाहिए। डिजिटल फॉरेंसिक, साइबर टूल्स और तकनीक का कुशल उपयोग सीखें। मुख्यमंत्री ने ''थाना, सर्किल व पुलिस लाइन'' तीनों की कार्यप्रणाली, संसाधनों और चुनौतियों को समझने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इन तीनों स्तरों का सामंजस्य ही किसी जिले की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करता है।

जनप्रतिनिधि से संवाद गरिमापूर्ण और संयत होना चाहिए

- मुख्यमंत्री ने जनप्रतिनिधियों के साथ संवाद को लेकर कहा कि यह गरिमापूर्ण और संयत होना चाहिए। कैजुअल अप्रोच पुलिस अधिकारी के लिए उचित नहीं है। जनप्रतिनिधि जनता की आवाज होते हैं, उनके साथ तालमेल कानून-व्यवस्था को और प्रभावी बनाता है।

थाना पुलिसिंग की नींव

- योगी ने प्रशिक्षुओं को सलाह दी कि प्रशिक्षण अवधि में थाने का चार्ज, उसके प्रशासन, विवेचना, ड्यूटी मैनेजमेंट और स्थानीय विवादों की प्रकृति को बहुत बारीकी से समझें। उन्होंने कहा कि थाना पुलिसिंग की नींव है। ह्यूमन इंटेलिजेंस आज भी किसी भी पुलिस अधिकारी का सबसे बड़ा हथियार है। स्थानीय लोगों से संवाद, फील्ड में उपस्थिति और विश्वास ही आपको मजबूत बनाते हैं।

आज काशी तमिल संगमम् के चौथे संस्करण में शामिल होंगे मुख्यमंत्री

अमृत विचार, लखनऊ: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ काशी तमिल संगमम् के चौथे संस्करण के उद्घाटन समारोह में शामिल होने हेतु मंगलवार को वाराणसी पहुंचेंगे। उत्तर और दक्षिण भारत को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने वाला यह महत्त्वपूर्ण आयोजन अब अपने चौथे संस्करण में प्रवेश कर चुका है। कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ मंगलवार को नमो घाट पर होगा।

उद्घाटन समारोह में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि, पुडुचेरी के उपराज्यपाल के कैलाश नाथ सहित अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थिति दर्ज कराएंगे।

स्वार्थ को छोड़कर संसद को सुचारु रूप से चलाएं सांसद

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : ससंद के शीतकालीन सत्र को लेकर बसपा प्रमुख मायावती ने सत्ता और विपक्ष, दोनों को नसीहत दी है। उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट में कहा कि राजनीतिक स्वार्थ को छोड़कर संसद को सुचारू रूप से चलाने और सार्थक चर्चा करना जनहित में होगा।

बसपा प्रमुख ने कहा कि संसद के शीतकालीन सत्र के इस बार काफी हंगामेदार होने की संभावना है, परंतु हमारी पार्टी चाहती है कि संसद सुव्यवस्थित व शांतिपूर्ण तरीके से संचालित हों, जिससे देश व जनहित के जरूरी मुद्दों, राजधानी दिल्ली आदि शहरों में वायु प्रदूषण, वोटर लिस्ट के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) को लेकर व्यावहारिक तौर पर हो रही परेशानियों एवं आपत्तियों व इस कार्य के मुख्य कर्ताधर्ता बीएलओ की दिक्कतों, उनके द्वारा की जा रही खुदकुशी आदि की घटनाओं पर सही से चर्चा हो सके।

नियोक्ताओं के पास अप्रैल 2026 तक मौका, कराएं कर्मियों का पंजीयन

प्रेसवार्ता में ईपीएफओ के आयुक्त प्रथम ने दी जानकारी

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

ईपीएफओ कार्यालय में प्रेसवार्ता में जानकारी देते आयुक्त प्रथम अश्विनी कुमार गुप्ता।

अमृत विचार: कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने नामांकन अभियान 2025 के तहत नियोक्ताओं को विशेष अवसर दिया है। इसमें वे 1 जुलाई 2017 से 31 अक्टूबर 2025 के बीच जुड़े उन कर्मचारियों को पंजीकृत कर सकते हैं, जो किसी कारणवश ईपीएफ कवर से वंचित रह गए हैं। नियोक्ताओं के पास उन्हें पंजीयन कराने का आखिरी मौका अप्रैल 2026 तक का है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पात्र कर्मचारियों को स्वैच्छिक पंजीकरण द्वारा सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाना है।

यह जानकारी सोमवार को क्षेत्रीय भविष्य निधि संगठन के आयुक्त प्रथम अश्विनी कुमार गुप्ता ने दी। आयोजित प्रेसवार्ता में उन्होंने बताया कि यदि कर्मचारियों से अंशदान नहीं काटा गया, तो कर्मचारी अंशदान माफ किया जाएगा। नियोक्ता को केवल नियोक्ता अंशदान धारा 7 क्यू का ब्याज प्रशासनिक शुल्क 100 रुपये क्षति शुल्क देना होगा। जिन प्रतिष्ठानों पर धारा 7ए, पैरा 26बी या पैरा 8 (ईपीएस-1995) के अंतर्गत जांच चल रही है, वे भी पात्र रहेंगे, और उन्हें केवल 100 रुपये नाममात्र क्षति शुल्क देना होगा। ईपीएफओ ऐसी किसी भी स्थिति में स्वतः कार्रवाई नहीं करेगा।

पहली बार नौकरी करने वालों को 15,000 की सहायता

- आयुक्त ने कहा कि पहली बार नौकरी करने वालों को सीधे 15,000 रुपये की सरकारी सहायता प्रति वर्ष किस्तों में बतौर प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। पहली किस्त 6 महीने पूर्ण होने पर, दूसरी किस्त 12 महीने पूरे करने पर उपलब्ध कराई जाएगी। यह राशि प्रधानमंत्री-विकसित भारत रोजगार योजना (पीएम-वीबीआरवाई) के तहत दी जाएगी। इसे बढ़ावा देने के लिए तिथि को 1 अगस्त 2025 से 31 जुलाई 2027 तक के लिए लागू किया गया है। इसका कुल बजट 99,446 करोड़ रुपये रखा गया है और इससे 3.5 करोड़ औपचारिक नौकरियां सृजित करने का लक्ष्य है। इस दौरान क्षेत्रीय कर्मचारी निधि संगठन के आयुक्त द्वितीय आशीष कुमार के साथ प्रतीश सिंह सहित कई अधिकारी मौजूद रहे। आयुक्त प्रथम ने बताया कि क्षेत्राधिकार के 6 जिले लखनऊ, सीतापुर, हरदोई, लखीमपुर खीरी, बाराबंकी, रायबरेली में पंजीकृत संख्या 39,580 प्रतिष्ठान में 5,16,109 अंशधारक सदस्य और 70,000 पेंशनर्स है।

जनता दरबार में बच्चे को दुलराते मुख्यमंत्री योगी।

पुलिस से जुड़े मामलों में निष्पक्षता व पारदर्शिता जरूरी : योगी

- **अमृत विचार, लखनऊ :** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को जनता दर्शन में प्रदेश भर से आने वाले फरियादियों की समस्याएं सुनीं और प्रत्येक को त्वरित व निष्पक्ष समाधान का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि पुलिस से जुड़े मामलों में निष्पक्षता और पारदर्शिता सर्वोपरि है। किसी भी स्तर पर लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।मुख्यमंत्री ने जिलों में तैनात पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई से जुड़े मामलों के समाधान में किसी प्रकार की ढिलाई न बरती जाए। उन्होंने विशेष रूप से कहा कि जमीनी विवाद, राजस्व और पुलिस-प्रशासन से जुड़े मामलों में कार्रवाई निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध होनी चाहिए। योगी ने यह भी कहा कि पुलिस आयुक्त, एडीजी, एसएसपी और एसपी स्वयं निगरानी रखें और सुनिश्चित करें कि जनता को न्याय समय पर मिले। जनता दर्शन में दो पीड़ितों ने मुख्यमंत्री से अतिरिक्त आर्थिक सहायता की गुहार लगाई। सीएम योगी ने उनकी बात सुनने के बाद तत्काल आश्वासन दिया कि सरकार उनके साथ है। उन्होंने कहा कि चिकित्सा और संकट से जुड़े मामलों में सरकार नियमित रूप से सहायता दे रही है। आप एस्टिमेट बनवाकर दें, सरकार मदद सुनिश्चित करेगी। कार्यक्रम में अभिभावकों के साथ आए बच्चों को मुख्यमंत्री ने स्नेहपूर्वक दुलारा। उन्हें चॉकलेट दी, हालचाल पूछा और मन लगाकर पढ़ने की प्रेरणा दी। सोमवार के जनता दर्शन में 42 से अधिक फरियादी पहुंचे।

गांव में बारात देखने गए बालक की हत्या कर खेत में फेंका शव

संवाददाता, प्रतापगढ़

- **मृतक बच्चे के दादा की तहरीर पर अज्ञात के खिलाफ दर्ज हुआ हत्या का केस**

अमृत विचार : अंतू थाना क्षेत्र के चौबेपुर गांव के बाबू लाल वर्मा रविवार रात करीब आठ बजे अपने दोनों बेटों 10 साल के आर्यन, सात साल के यश और बड़े भाई उमेश के साथ करीब 300 मीटर दूर उल्ले के घर आई बारात देखने गए थे। रात करीब आठ बजे सभी लौट आए लेकिन यश फिर से बारात में चला गया। रात 10 बजे तक नहीं लौटा तो पिता उसे बुलाने चले गए। यश नहीं मिला तो बाबूलाल परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उसकी तलाश करने लगे। सूचना पर पुलिस भी पहुंची लेकिन दो घंटे बाद लौट गई।

सोमवार सुबह करीब 7 बजे बारात वाले स्थान से 200 मीटर दूर मिठाई लाल सरोज के बटाई पर लिए सरसों के खेत में वह घायल मिला। उसे तुरंत सीएचसी ले जाया गया लेकिन उसकी मौत हो चुकी थी। सूचना मिलते ही एसपी दीपक भूकर, एएसपी पश्चिमी वृजनंदन राय, सीओ सिटी आईपीएस प्रशांतराज हुड्डा, एसओ अंतू आनंदपाल सिंह मौके पर पहुंचे। परिजनों और गांव के लोगों से जानकारी लेने के बाद पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं गांव में अवैध संबंध के चलते बच्चे की हत्या की चर्चा रही। बच्चे के माता-पिता एक दूसरे पर हत्या का आरोप लगाते रहे। मामले में मृतक बच्चे के दादा संतरात वर्मा ने अज्ञात के खिलाफ हत्या का केस दर्ज कराया है। पुलिस मामले की पड़ताल कर रही है।

ढेकाही गांव में श्रीमद्भागवत कथा में झूमते श्रद्धालु। अमृत विचार

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की निकली झांकी, झूम उठे श्रद्धालु

संवाददाता, प्रतापगढ़। अमृत विचार : सदर ब्लॉक के ढेकाही गांव में वृंदावन धाम के कथा व्यास मुकेश आनन्द जी महाराज के मुखारबिंद से चल रही श्रीमद्भागवत कथा में सोमवार को भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया गया। जन्म होते ही नंद घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की ..गीत गूंजने लगा। उत्सव में श्रद्धालु खुशी से नाचने गाने लगे। भगवान की मनमोहक झांकी निकलने पर कथा व्यास ने प्रसङ्ग में कहा कि श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं केवल मनोरंजन नहीं बल्कि जीवन के गूढ़ संदेशों से परिपूर्ण हैं। नन्हें बालक के रूप में श्रीकृष्ण ने पूतना वध और यशोदा माता की गोद में खेलते हुए अपने दिव्य स्वरूप का परिचय दिया। प्रसङ्ग में कहा कि सच्चे धर्म और भक्ति के सामने प्रकृति भी नतमस्तक हो जाती है। इस दौरान मुख्य यजमान पुष्पा सिंह, प्रधान अरुण सिंह, दिनेश सिंह, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप फाउंडेशन के विनोद सिंह, राकेश सोमवंशी, बृजेश कुमार शुक्ल, राजू रजक, नरेन्द्र बहादुर सिंह, निर्भय सिंह, अरुण कुमार सिंह महाराष्ट्र, ओम प्रकाश सिंह, शैलेश सिंह, धीरेंद्र सिंह, सनी सिंह, भानू सिंह, अरविन्द सिंह, धर्मेंद्र सिंह, निर्भय सिंह, रोशन सिंह, किशुन दास सिंह, लक्ष्मी सिंह, उदय प्रताप सिंह, जिला पंचायत सदस्य मुन्ना सिंह आदि मौजूद रहे।

साप्ताहिक बाजार में रंजिशन युवक की गोली मारकर हत्या

संवाददाता, प्रतापगढ़

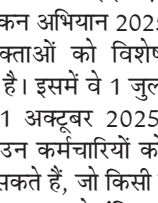

तशकील (फाइल फोटो)

अमृत विचार : जिले के सांगीपुर के कमयनपुर गांव में सोमवार को लगे भीड़भाड़ वाले साप्ताहिक बाजार में आए युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। बगल गांव के युवक ने रंजिश को लेकर तमंचे से उस पर गोली चला दी। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया।

लालगंज के उधरनपुर निवासी 26 वर्षीय तशकील किसी काम से सांगीपुर के कमयनपुर में लगी बाजार में सोमवार शाम आया था। वह किसी से बातचीत कर रहा था कि इसी बीच शाम करीब सवा पांच बजे उसे तमंचे से गोली मारकर एक हमलावर भागने लगा। तशकील घायल होकर मौके पर गिर पड़ा। लोगों ने हमलावर को दौड़ाया तो वह गांव के विनोद सोनी के घर के तीसरे मंजिल की छत पर चढ़ गया। पुलिस के अनुसार हमलावर अमान पुत्र अमजद निवासी असांव सांगीपुर है। वह छत से ही कहता रहा कि तशकील ने उसे मारा था, गाली दी थी। कई बार बेइज्जत किया था, इसलिए गोली चला दी। पुलिस ने मशक्कत करके उसे छत पर जाकर पकड़ा व उसके पास से तमंचा बरामद किया। पकड़े जाने के बाद वह कहने लगा कि तशकील भी तमंचा लिए था, छीना झपटी में गोली चल गई। भरे बाजार घटना से अफरा-तफरी मच गई। लोगों के अनुसार तशकील और अमान दोनों दिल्ली में रहकर मजदूरी करते थे। इनका आए दिन वहां विवाद होता था। इसी को लेकर वह मौके की तलाश में था। विवाद व रंजिश में वारदात की गई। सीओ लालगंज आशुतोष मिश्र ने बताया कि आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। रंजिश में घटना हुई है।

एक मुश्त बकाया जमा कर उठाएं योजना का लाभ : एके शर्मा

बिजली बिल राहत योजना कार्यक्रम में बोलते मंत्री एके शर्मा।

कुंडा, प्रतापगढ़। अमृत विचार : बिजली बिल राहत योजना का शुभारंभ सोमवार को नगर विकास, शहरी समग्र विकास, नगरीय रोजगार, गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग के मंत्री एके शर्मा ने कुंडा सब स्टेशन पर किया।

जिले की बकाया सूची हाथ में लेकर उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में उपभोक्ता ऐसे हैं जिन्हें पता ही नहीं है कि कनेक्शन कब हुआ और उनका बिजली का बिल आता रहा। जो साल दर साल बढ़ता गया। इससे बिजली विभाग का लाखों रूपया उन पर बकाया है। ऐसे भी उपभोक्ता हैं जिन्होंने बहुत लंबे समय से बिजली बिल का भुगतान नही किया है। लाखों रूपये बकाया है। सरकार का यह अभियान उपभोक्ताओं के लिए एक अच्छा अवसर है। इस अवसर पर राजेश मिश्र राजन, भूपेंद्र पांडेय, रूपा गौतम, नगर पंचायत अध्यक्ष पति शिव कुमार तिवारी, नगर पंचातय अध्यक्ष प्रतिनिधि आशुतोष जायसवाल डिंपू, उदय शंकर पांडेय, ज्ञान प्रकाश, अतुल शुक्ल, सुमन साहू आदि मौजूद रहे।

न्यूज ब्रीफ

रुद्र महायज्ञ में भंडारे का हुआ आयोजन

सीतापुर, अमृत विचार : कमलापुर स्थित श्री रुद्र महायज्ञ नागेश्वर नाथ धाम में आठवी दिवस पर विशाल भंडारे का आयोजन हुआ। श्रद्धालुओं ने यज्ञशाला की परिक्रमा कर बाबा नागेश्वर बाबा से मनोकामना पूर्ण के लिए प्रार्थना की। इस दौरान काफी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। बता दें कि कार्यक्रम सोमवार तक चलेगा।

दिन भर चलीं ठंडी हवाएं, लुढ़का पारा

सीतापुर, अमृत विचार : जिले में ठंडी हवाएं चलीं। ऐसे में पारा लुढ़कर दो दिन नीचे चला गया। दिन का अधिकतम तापमान 24 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। देर शाम बढ़ी ठंडक के चलते आवागमन पर असर देखने को मिला। उधर, नगर पालिका लहरपुर में ठंड से राहत के लिए कस्बे में आठ स्थानों पर अलाव जलाए गए। नपा अध्यक्ष हाजी जावेद अहमद ने बताया लोगों को ठंड से राहत देने के लिए पालिका परिषद कार्यालय में रैन बसेरा भी बनाया गया है।

छुट्टा मवेशी बन रहे हादसों का सबब

सीतापुर, अमृत विचार : हाईवे स्थित कमलापुर इलाके में छुट्टा मवेशी हादसे का कारण बन रहे हैं। हलांकि इसको लेकर जिलाधिकारी के खास निर्देश हैं। लेकिन स्थानीय स्तर पर कोई ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। किसान आयुष, रमेश, रवि, सोबरन आदि का कहना है कि छुट्टा गोवंश हाइवे पर हादसे का कारण बन रहे हैं, साथ ही फसलों को भी नुकसान पहुंचा रहे हैं।

महिला से घर में घुसकर छेड़छाड़, केस दर्ज

हरगांव, सीतापुर : इलाके के एक गांव में महिला के साथ छेड़छाड़ का गंभीर मामला सामने आया। आरोप है कि पति ने छेड़छाड़ का प्रयास किया। चीख पुकार के बीच लोग जमा हो गए। तब कहीं जाकर आरोपी फरार हुआ। मामले में पीड़िता ने पुलिस को तहरीर दी। एसओ बलवंत शाही का कहना है कि पीड़िता की शिकायत पर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

विद्यार्थियों ने पढ़े गीता के अध्याय

महोली, सीतापुर : प्रज्ञानम् सत्संग आश्रम में श्री गीता जयन्ती के उपलक्ष्य पर आश्रम में प्रात : से ही महामण्डलेश्वर स्वामी अनन्तानन्द सरस्वती के सानिग्ध में गीता के श्लोकों का पाठ प्रारम्भ हुआ। तीन घंटे चले गीता पाठ में आश्रम द्वारा संचालित प्रज्ञानम वेद विद्यालय के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने भी गीता के श्लोकों का शुद्ध एवं छन्दमय पाठ सुनाया। विद्यालय के विद्यार्थियों को गीता के अध्याय कंठस्थ कर सुनाने पर पुरस्कार राशि एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए। आश्रम में विशाल भंडारे का आयोजन भी किया गया।

राहत योजना ने दी उपभोक्ताओं को छूट

लहरपुर, सीतापुर : बिजली बिल राहत योजन के तहत विद्युत पावर हाउस पर एक बिल राहत शिविर का आयोजन किया गया। उपखंड अधिकारी अंचल कुमार मिश्रा ने बताया कि 31 उपभोक्ताओं ने बिजली बिल में छूट के लिए अपना पंजीकरण कराया व बिल संशोधन के लिए 17 उपभोक्ताओं ने प्रार्थना पत्र दिए। जिसमें से 16 उपभोक्ताओं की शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण किया गया। शिविर में छूट के लिए 2.65 हजार उपभोक्ताओं द्वारा जमा कराए गए, जिसमें से राहत योजना के तहत 2.10 हजार रुपए की छूट 4 लाख, 75000 के बिलों में प्रदान की गई। इस मौके पर प्रमुख रूप से उपभोक्ता सलीम, मोहम्मद कासिम, विपिन कुमार, सुलेमान, अली हसन, शत्रोहन, राधेश्याम आदि उपस्थित थे।

2 डॉक्टर का 1 तो बीपीएम का 15 दिन का रुका वेतन

सीएचसी परसेंडी का डीएम ने देर रात किया औचक निरीक्षण

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

सीएचसी का निरीक्षण कर जानकारी लेते जिलाधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार: जिलाधिकारी डॉ. राजागणपति आर ने रविवार देर रात सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परसेण्डी का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण में कई कमियां सामने आईं, जिस पर डीएम ने कड़ा रुख अपनाते हुए तीन कर्मचारियों के वेतन रोकने और नोटिस जारी किए। डीएम ने कहा कि सरकारी अस्पतालों में चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता से किसी भी कीमत पर समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। डीएम ने औचक निरीक्षण के दौरान इमरजेंसी वार्ड, लेबर रूम, एनबीएसयू रूम और मातृ सुरक्षा केंद्र का बारीकी से निरीक्षण किया। इस दौरान एमओआईसी अनुपस्थित मिले, जिस पर डीएम ने उनका एक दिन का वेतन रोकने के निर्देश दिए। इसी तरह चिकित्सक सुनील द्वारा मातृ सुरक्षा केंद्र संचालित न किए जाने पर उनका एक दिन का वेतन रोकते हुए नोटिस जारी किया गया। डीएम ने बीपीएम द्वारा रजिस्टर अद्यतन न करने पर कड़ी नाराजगी जताई और उनका 15 दिन का वेतन रोकने के आदेश दिए। उन्होंने अस्पताल परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों का भी निरीक्षण किया और स्टाफ की गतिविधियों की नियमित निगरानी करने को कहा। नर्स ड्यूटी कक्ष में रजिस्टर की जांच के दौरान उन्होंने निर्देश दिए कि ड्यूटी चार्ट अनिवार्य रूप से चस्पा किया जाए ताकि व्यवस्था पारदर्शी रहे। डीएम ने कहा कि शासन की मंशा है कि हर मरीज को सरकारी अस्पतालों में बेहतर उपचार मिले और कर्मचारियों को अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करना चाहिए। इस दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेश कुमार सहित अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

प्रसाधन की सुविधा नदारद, परेशानी

सीतापुर, अमृत विचार: मिश्रिख नगर पालिका व तहसील मुख्यालय होने के बाद भी नगर में यात्री प्रतीक्षालय की सुविधाएं नदारद है। नहर चौराहे से सिधौली, लखनऊ, नैमिषारण्य, सीतापुर, कुतुबनगर, पिसावां के लिए यात्री वाहनों से यात्रा करते हैं। समय बीतने के बावजूद यात्री प्रतिक्षालय नहीं है। शौचालय के लिए बड़ी समस्या महिला यात्रियों को उठानी पड़ती है। कस्बा वासियों का कहना है कि तीस साल पहले तत्कालीन सांसद रामलाल राही ने प्रतीक्षालय का निर्माण कराया था, प्रतीक्षालय की जो थोड़ी बहुत जगह है उस पर अतिक्रमण है। कस्बा वासी सचिन, अमित आदि ने यात्री प्रतीक्षालय और प्रसाधन सुविधा की मांग की गई है।

एडीओ पर कार्रवाई न होने से बिफरे पदाधिकारी

मछरेहटा, सीतापुर

बैनर फाड़ने को लेकर अतिरिक्त न्यायिक मजिस्ट्रेट अंजली सिंह को ज्ञापन देते सवर्ण आर्मी के लोग। अमृत विचार

अमृत विचार: ब्लॉक परिसर के सामने लगे सवर्ण आर्मी के पदाधिकारियों के फोटोयुक्त बैनर को फाड़े जाने के मामले ने तूल पकड़ा है। घटना के विरोध में सवर्ण आर्मी खुले तौर पर सामने आई है और प्रशासन से कड़ी कार्रवाई की मांग की है। संगठन के पदाधिकारियों के मुताबिक ब्लॉक कार्यालय के पास अरुण शुक्ल के घर के नजदीक लगा बैनर कथित तौर पर एडीओ पंचायत संदीप कुमार के निर्देश पर सफाईकर्मियों द्वारा हटाया गया था। इस पर संगठन के सदस्य सुशील शुक्ला ने आपत्ति दर्ज कराते हुए डीएम को पत्र भेजकर इसकी शिकायत की थी। एक सप्ताह बीत जाने के बावजूद कार्रवाई न होने पर सवर्ण आर्मी सोमवार को जिला मुख्यालय पहुंची। प्रदेश उपाध्यक्ष शिवम तिवारी के नेतृत्व में संगठन ने जिलाधिकारी को संबोधित ज्ञापन एसडीएम अंजली सिंह को सौंपा। ज्ञापन में मांग की गई कि सवर्ण समाज के विरोधी मानसिकता वाले एडीओ पंचायत को हटाकर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए। कार्रवाई न होने की स्थिति में संगठन आंदोलन करेगा। इस दौरान जिलाध्यक्ष कपिल श्रीवास्तव, सुशील शुक्ला, सुरेश पांडेय, प्रभाकर पांडेय, कोमल सिंह, अमित, सर्वेश, स्वयंवर सिंह, अभिषेक, अशोक तिवारी, शिवाकांत मिश्र, धीरज पंडित सहित कई सदस्य मौजूद रहे।

सड़क दुर्घटनाओं में 2 की मौत, एक घायल

सीतापुर, अमृत विचार: जिले में सोमवार को अलग-अलग स्थानों पर हुए सड़क हादसों में दो लोगों की मौत हो गई, जबकि एक घायल का इलाज अस्पताल में चल रहा है। पिसावां में बाइक सवार की पिकअप से टकराने के बाद मौत हो गई, जबकि संदना में ट्रैक्टर-ट्रॉली की चपेट में आ गए। दोनों घटनाओं में पुलिस ने मामले दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पहली घटना पिसावां थाना क्षेत्र के कुतुबनगर मार्ग पर पनहैया पुल के पास हुई। राम मुकुंद अपनी बाइक से जा रहे थे कि सामने से आ रही डाला पिकअप से उनकी टक्कर हो गई। सिर पर हेलमेट न होने के कारण उन्हें गंभीर चोटें आईं और वह मौके पर ही दम तोड़ दिया। चालक वाहन लेकर फरार हुआ, लेकिन पुलिस ने उसे चंद्रा रेलवे क्रॉसिंग पर पकड़ लिया। थाना प्रभारी वीरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि आवश्यक करवाई की जा रही है। दूसरा हादसा संदना थाना क्षेत्र में हुआ। कुर्सी गांव में 52 वर्षीय मिहीलाल अपने साथी को टीबी की दवा दिलाने गोंदलामऊ जा रहे थे। यूपी ग्रामीण बैंक के पास खड़ी ट्रैक्टर-ट्रॉली अचानक आगे बढ़ गई और मिहीलाल की बाइक से टकरा गई। उन्हें सीएचसी ले जाया गया जहां मृत घोषित कर दिया गया।

सड़क के किनारे काटी गई हरियाली

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

- एसडीएम रेंजर बोले, कुछ पेड़ों का दिया गया है परमिट, बाग में लगे पेड़ काटे तो होगी कार्रवाई

अमृत विचार: खैराबाद की फलपट्टी पर सिंडीकेट की नजर है, ऐसे में हर वो करतब किये जा रहे है, जिससे प्लाटिंग की जा सके। ऐसा ही कुछ दिन के उजाले में हुआ। खैराबाद से सटे विष्णुनगर चौराहे पर सड़क किनारे हरियाली काटी गई। सीतापुर-बहराइच मार्ग पर कट रही बाग को लेकर जब रेंजर से जानकारी ली गई तो उन्होंने कहा कि कुछ आम के पेड़ फल नहीं दे रहे थे। ऐसे में उन्हें काटने की अनुमति का परमिट दिया गया है। अगर बाग काटी जाएगी तो कार्रवाई होगी। किस पर, इस सवाल का जवाब जिम्मेदार नहीं दे सके। उधर, दिन के उजाले में आम के पेड़ों को अधाधुंध मशीन और मजदूरों का देर शाम तक काटा जाता रहा। बताते हैं कि करीब में सिंडीकेट आलीशान प्लाटिंग कराने जा रहा है।

जनसूचना का अधिकार देता है सहूलियत

पदुम नारायण द्विवेदी।

सीतापुर, अमृत विचार : सीतापुर आए राज्य सूचना आयुक्त पदुम नारायण द्विवेदी ने बताया कि जनसूचना अधिकार आमजन को राहत देता है। इससे बड़ी से बड़ी समस्याओं के हल भी निकलते रहे हैं। उन्होंने बताया कि कोई भी व्यक्ति जन सूचना अधिकार अधिनियम के तहत विभिन्न प्रकार की सूचनाएं संबंधित विभाग के जनसूचना अधिकारी से मांग सकता है। ये प्रक्रिया ऑफलाइन के साथ साथ ऑनलाइन भी है। बताया कि सूचनाएं न देने पर अपील की जा सकती है। यदि उसके बावजूद सूचना नहीं मिलती तो उप्र सूचना आयोग के माध्यम से शिकायत की जा सकती है। जिसके आधार पर जनसूचना अधिकारी से सवाल-जवाब के साथ कार्रवाई भी की जाती है। बताया आवेदक को सूचना प्राप्त कराना प्रथम दायित्व है।

कटेसर चौकी इंचार्ज लाइन हाजिर

सीतापुर, अमृत विचार : एसपी ने व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के उद्देश्य से फेरबदल किया। हरगांव थाने की कटेसर चौकी पर तैनात रहे उप निरीक्षक भारत कुमार यादव को लाइन हाजिर किया। इसी कड़ी में खैराबाद टप्पा खजुरिया चौकी प्रभारी विकास यादव को कटेसर भेजा। उधर, इंस्पेक्टर सुरेश यादव क्राइम शाखा हरगांव से क्राइम शाखा रामपुर मथुरा भेजे गए हैं। निरीक्षक वीरेंद्र कुमार पुलिस लाइन से क्राइम इंस्पेक्टर थाना हरगांव स्थानांतरित किया गया है।

शिविर में 27 मरीज ऑपरेशन के लिए चयनित

मरीज का परीक्षण करते चिकित्सक। अमृत विचार

महोली, सीतापुर : फलाहारी मंदिर रोड स्थित बड़गांव में आंख अस्पताल द्वारा सोमवार को नि :शुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में कुल 67 मरीजों की आंखों की जांच की गई। इनमें से 27 मरीजों को ऑपरेशन के लिए चयनित किया गया, जबकि अन्य मरीजों को जांच के बाद आवश्यक दवाएं वितरित की गईं। शिविर में डॉ. रामकिशोर शुक्ला और डॉ. साध्वी वर्मा की मेडिकल टीम ने मरीजों की विस्तृत जांच की। शिविर आयोजक आनंद प्रताप सिंह ने बताया कि इसी स्थान पर इससे पहले भी कई नेत्र शिविर सफलतापूर्वक लगाए गए हैं, जिनका लाभ बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों को मिला है।

बकाया भुगतान को लेकर किया प्रदर्शन

सीतापुर, अमृत विचार : शाहजहांपुर मार्ग स्थित अड़बेनिया ग्रंट में स्थित फैक्ट्री के कर्मचारियां ने कलेक्ट्रेट परिसर में पहुंचकर प्रदर्शन किया और फिर ज्ञापन सौंपा। धीरज श्रीवास्तव, अखिलेश, आशुतोष आदि का कहना है कि फैक्ट्री में कार्यरत कर्मचारियों का बकाया दो माह का वेतन नहीं दिया जा रहा है। बिना अग्रिम सूचना दिए फैक्ट्री भी बंद कर दी गई है। ऐसे में आजीविका पर संकट आ गया है। महेश, अरुण, विनोद, शत्रोहन आदि का दावा है कि यदि समय से भुगतान नहीं किया गया तो वे लोग 3 दिसंबर को फैक्ट्री गेट पर धरना और प्रदर्शन करेंगे।

पराली जलाने पर किसान पर लगा जुर्माना

मिश्रिख, सीतापुर : तहसील क्षेत्र में पराली जलाने के मामले में राजस्व विभाग ने एक किसान पर 2500 रुपये का जुर्माना लगाया है। यह कार्रवाई भूड़पुरवा मजरा रूपपुर में हुई। जानकारी के अनुसार, सोमवार शाम उप जिलाधिकारी (एसडीएम) शैलेंद्र कुमार मिश्रा क्षेत्र का भ्रमण कर रहे थे। इसी दौरान उन्होंने सड़क किनारे एक खेत में पराली जलती हुई देखी। एसडीएम ने तत्काल अपना वाहन रुकवाकर मौके पर पहुंचकर किसान को पराली न जलाने की कड़ी चेतावनी दी। जांच में खेत मालिक की पहचान भूड़पुरवा निवासी सोमपाल पुत्र कढ़िले के रूप में हुई। राजस्व विभाग ने सोमपाल पर 2500 रुपये का जुर्माना लगाया।

वाहन का हुआ चालान तो भड़की निषाद पार्टी

बिसवां, सीतापुर : निषाद पार्टी आईटी सेल के जिलाध्यक्ष संदीप कश्यप बिसवां में आयोजित पार्टी की बैठक में शामिल होने जा रहे थे। आरोप है चौकी भोलागंज बिसवां मार्ग पर तैनात सब इंस्पेक्टर महेश गंगवार ने उनका चालान कर दिया। पदाधिकारियों ने आरोप लगाया उसी समय उसी रास्ते से कई अन्य वाहन भी जा रहे थे, जिन पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। संदीप कश्यप और कार्यकर्ताओं ने सब इंस्पेक्टर महेश गंगवार के खिलाफ आवश्यक विभागीय कार्रवाई की मांग की।

लेजर मशीन गन का आर्मी कैंप में ट्रायल

लेजर गन दिखाता छात्र शैलेंद्र। अमृत विचार

महमूदाबाद, सीतापुर : विकास खण्ड पहला क्षेत्र के बिचपरी गांव के युवा आविष्कारक ने स्वचालित भारत रक्षा लेजर मशीन गन बनाई है। दक्षता को लेकर एनसीसी ने छात्र को नकद राशि देकर सम्मानित किया। मशीन का आर्मी कैंप में परीक्षण हुआ है। छात्र शैलेंद्र कुमार के मुताबिक, हाई-टेक सुरक्षा प्रणाली सीमा पर घुसपैठ रोकने में सहायक है। बताया कि ये मशीन सेंसर तकनीक पर कार्य करती है। इंटर की पढ़ाई पूरी करने वाले शैलेंद्र का दावा है कि इससे पहले वे 22 और अविष्कार कर चुके हैं।

बाइक की टक्कर से बुजुर्ग की मौत

महमूदाबाद, सीतापुर : बिसवां रोड स्थित बाबाबाग के पास सड़क हादसा हुआ। हरसिंहपुर, पोस्ट शमसाबाद निवासी 82 वर्षीय बनवारी लाल पुत्र पुत्तीलाल सड़क किनारे खड़े थे, तभी सामने से आ रही तेज रफ्तार बाइक ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। घायल बुजुर्ग को सीएचसी महमूदाबाद पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। बताते हैं कि मोटर साइकिल पर चार लोग सवार थे।

घर-घर पहुंचे स्वयंसेवी, दिया राष्ट्रीय चेतना का संदेश

लहरपुर, सीतापुर: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अंतर्गत संघ द्वारा क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों में सोमवार को व्यापक गृह संपर्क अभियान चलाया गया। सेमरिया सलारपुर, जल्लापुर, सोंसरी समेत कई गांवों में स्वयंसेवक घर-घर पहुंचे और लोगों से संवाद स्थापित किया। अभियान खंड सहकार्यवाह आलोक शुक्ला तथा खंड बौद्धिक प्रमुख विनय शुक्ला के मार्गदर्शन में संचालित हुआ। स्वयंसेवक अमन मिश्रा, शिवम्, अर्जुन, करण, शिवा, शिवम पाधा, रौनक शाक्य, सौरभ वर्मा, आदित्य वर्मा सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। स्वयंसेवकों ने समाज में सहभागिता बढ़ाने, राष्ट्रभाव जागृत करने तथा संगठन की गतिविधियों की जानकारी देते हुए लोगों को भारत माता का चित्र वितरित किया। स्वयंसेवक अमन मिश्रा ने बताया कि व्यापक संपर्क अभियान का उद्देश्य हिंदुत्व की भावना को मजबूत करना व लोगों को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ना है।

कलाकारों के बीच चले लाठी और डंडे वीडियो वायरल

इमलिया सुल्तानपुर, सीतापुर:। थाना क्षेत्र में दो नाटक कंपनियों के कलाकारों के बीच शराब पीने के बाद विवाद हुआ। बढ़ती कहासुनी के बाद सड़क पर मारपीट होने लगी। थाने से कुछ दूरी पर खुली सड़क पर लाठी-डंडों से हुई यह मारपीट राहगीरों ने मोबाइल में कैद कर सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। दोनों कलाकार नौआ में कार्यक्रम कर लौट रहे थे। रास्ते में शराब पीने के बाद नाटक में रोल को लेकर कहासुनी हुई और एक कलाकार ने दूसरे पर हमला बोल दिया। घटना में ओमप्रकाश गौतम निवासी नौआ महमूदपुर घायल हुए, जबकि दूसरा पक्ष नसरुद्धीन बताया गया है।

जांच टीम पहुंची तो बंद मिला अस्पताल, अभिलेख जब्त

संवाददाता सीतापुर

अमृत विचार: रेउसा कस्बे के तंबौर मार्ग स्थित बालाजी हॉस्पिटल में प्रसूता की मौत के बाद डीएम सख्त हो चले हैं। तूल पकड़ते मामले के बीच परिजनों के आरोपों को गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी ने त्रि-सदस्यीय जांच समिति गठित कर 24 घंटे में विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। इस बीच, जांच टीम के अस्पताल पहुंचने पर अस्पताल बंद मिला और स्टाफ का कोई पता नहीं चला। क्षेत्र में एक माह के भीतर दूसरी घटना से सेहत महकमे से जुड़े ज़िम्मेदारों की कार्यप्रणाली भी सवालों के कटघरे में हैं। थानगांव थाना क्षेत्र के चिरैया गांव निवासी गया प्रसाद की पत्नी गायत्री देवी (30) की ऑपरेशन के बाद बिगड़ी हालत और रास्ते में मौत के बाद रविवार को परिजनों ने अस्पताल के बाहर शव रखकर हंगामा किया था। परिजनों ने डॉक्टर पर उपचार में लापरवाही का आरोप लगाया था। घटना के तुरंत बाद अस्पताल संचालक ताला लगाकर फरार हो गया था। रविवार देर शाम जिलाधिकारी ने एसडीएम बिसवां शिखा शुक्ल, डिप्टी सीएमओ डॉ. संजय श्रीवास्तव और स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. खुर्शीद जैदी की जांच समिति गठित की। टीम बालाजी हॉस्पिटल पहुंची तो मुख्य गेट बंद मिला और कोई कर्मचारी नहीं पाया गया। समिति ने आसपास के लोगों से घटनाक्रम की जानकारी जुटाई और अभिलेख भी जब्त किए। हालांकि रेउसा सीएचसी अधीक्षक डॉ. अनंत मिश्र पहले ही अस्पताल के संचालन पर रोक लगा चुके हैं।

ईगल आई की निगरानी में रहेगा शहर

ईगल कंट्रोल रूम की जानकारी देते एसपी अंकुर अग्रवाल। अमृत विचार

सीतापुर, अमृत विचार: शहर में पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय परिसर में अत्याधुनिक ईगल सीसीटीवी कंट्रोल रूम का शुभारंभ किया। 155 हाई-रिजॉल्यूशन कैमरों से लैस यह सिस्टम शहर की सुरक्षा व्यवस्था को हाई-टेक बनाते हुए अपराध नियंत्रण, यातायात प्रबंधन और त्वरित पुलिस कार्रवाई को नई मजबूती देगा। सुरक्षा तंत्र को और मजबूत बनाने के लिए सोमवार को एसपी अंकुर अग्रवाल ने नवनिर्मित ईगल सीसीटीवी कंट्रोल रूम का फीता काटकर उद्घाटन किया। यह कंट्रोल रूम अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित है, जिसमें 155 हाई-रिजॉल्यूशन कैमरों के जरिए शहर के प्रमुख चौराहों, बाजारों, संवेदनशील क्षेत्रों तथा भीड़भाड़ वाले स्थानों की 24×7 निगरानी की जाएगी। मॉनिटरिंग सिस्टम की उन्नत तकनीक पुलिस टीम को वास्तविक समय में हर गतिविधि पर नजर रखने में सक्षम बनाएगी। इससे चोरी, छेड़छाड़, दुर्घटना, ट्रैफिक जाम या किसी भी आपराधिक घटना की सूचना मिलते ही त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित हो सकेगी। एसपी ने कहा कि यह प्रणाली शहर में सुरक्षा की भावना को मजबूत करेगी और कानून-व्यवस्था को नई गति देगी। कार्यक्रम में सहयोग करने वाले गणमान्य लोगों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

पशुपालकों को दवा वितरित करते पशु चिकित्सक दिनेश पाल। अमृत विचार

340 पशुओं को दी राहत की डोज

नेरी, सीतापुर : विकासखंड महोली के नेरी गांव में पंचायत भवन परिसर में आयोजित खंड स्तरीय पशु आरोग्य शिविर में बड़ी संख्या में पशुपालक पहुंचे। शिविर में पशुओं से जुड़ी बीमारियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ उनका उपचार भी किया गया। शिविर में खुरपका-मुंहपका सहित मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण किया गया। इसके अलावा बांझपन और अन्य रोगों से प्रभावित कुल 340 पशुओं की जांच कर दवाएं वितरित की गईं। पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार ने पशुपालकों को पशुओं में होने वाली बीमारियों तथा उनके रोकथाम के उपायों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। शिविर में रामनरेश पाल, अमित मौर्य, सतीश पाल, महेंद्र पाल यादव, हर्ष पांडेय, प्रधान नूरहसन शाह समेत कई पशुपालक मौजूद रहे।

जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते सीएमओ। अमृत विचार

एड्स से बचाव को लेकर निकाली रैली

सीतापुर, अमृत विचार : सीएमओ डॉ. सुरेश कुमार की अध्यक्षता एवं जिला क्षय अधिकारी डॉ. मनोज कुमार देशमणि के निर्देशन में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर एचआईवी/एड्स जैसे विषय पर जन जागरूकता के लिए कार्यक्रम आयोजि हुआ। परेड मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेश कुमार द्वारा हरी झण्डी दिखाकर प्रारम्भ की गयी। परेड में कुल 140, एनएसएस व एनसीसी के विद्यार्थी द्वारा प्रारम्भ की गयी, जिसका आयोजन एसोसिएट प्रो. विजय प्रकाश, प्रभारी एनएसएस आरएमपी डिग्री कालेज, प्रोफेसर पवन कुमार यादव, प्रभारी एनसीसी के मार्गदर्शन में हुआ। जिला क्षय रोग अधिकारी द्वारा एड्स के बारे मे जागरूक किया गया। दिशा क्लस्टर सीतापुर से पुष्कर सिंह सीपीएम, अम्बरीश दुबे सीएसओ, सौरभ श्रीवास्तव डीएमडीओ एवं टीबी एचआईवी कोआर्डिनेटर रमेश चन्द्र मौर्या द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया। इस दौरान आशीष दिक्षित, उदय प्रताप, बिन्नी मिश्रा, राजीव सहित अन्य उपस्थित रहे।

किसान व सुरक्षाकर्मियों के बीच हुई हाथापाई

हरगांव, सीतापुर : अवध शुगर एंड एनर्जी लिमिटेड चीनी मिल हरगांव में ट्राली ले जाने को लेकर विवाद हुआ। बातचीत बढ़ने पर सुरक्षाकर्मियों और किसानों के बीच हाथापाई हुई। किसानों का आरोप है कि सुरक्षाकर्मियों ने बंदूक तान दी, फिलहाल आरोप-प्रत्यारोप की जांच इलाका पुलिस कर रही है। बताते हैं कि देर रात किसान ट्राली लेकर अंदर जा रहे थे। मुख्य सुरक्षा अधिकारी जेएन सिंह के मुताबिक, चालक सचिन ने मानक से अधिक गन्ना तुलवाने के लिए मिल में हंगामा किया। आरोप ये भी है कि सुरक्षा कर्मियों के साथ मारपीट की गई और गनमैन से बंदूक छीनने का प्रयास किया। उधर, किसानों ने मिलकर्मियों पर उत्पीड़न और मनमानी का आरोप लगाया। अधिशाषी उपाध्यक्ष गन्ना शरद सिंह ने बताया कि सचिन के विरुद्ध थाने पर शिकायत की गई है। थानाध्यक्ष हरगांव बलवंत शाही का कहना है कि मामले में जांच की जा रही है।

डीएम ने लिपिक को दी प्रतिकूल प्रविष्टि

कार्यालय संवाददाता, सीतापुर

बीएसए से जानकारी लेते जिलाधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार: डीएम ने बीएसए कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान कई पटलों पर अव्यवस्था, साफ-सफाई में लापरवाही आदि सामने आई। डीएम ने आरटीआई रजिस्टर अद्यतन न मिलने पर एक लिपिक के विरुद्ध प्रतिकूल प्रविष्टि, वहीं आईजीआरएस पटल पर लिपिक के अनुपस्थित मिलने पर एक दिन का वेतन रोके जाने के निर्देश दिए। उन्होंने निलंबित शिक्षकों की फाइलें तीन माह में हर हाल में निस्तारित करने और सभी महत्वपूर्ण कक्षों में सीसीटीवी लगाने के आदेश जारी किए। डीएम डॉ. राजागणपति आर ने सोमवार को उक्त कार्यालय में पहुंचकर जनसूचना अधिकारी कक्ष, बीएसए कक्ष, एमडीएम सेक्शन, कार्यवाही पटल, आईजीआरएस पटल आदि का निरीक्षण किया। निरीक्षण में आरटीआई रजिस्टर अद्यतन न मिलने पर लिपिक राम सहारे पर प्रतिकूल प्रविष्टि करने और संबंधित कक्ष में सीसीटीवी कैमरा लगवाने के निर्देश दिए। निलंबित शिक्षकों की फाइलें देखने के बाद डीएम ने स्पष्ट निर्देश दिया कि तीन माह के भीतर सभी निलंबन फाइलों का निस्तारण हर हाल में किया जाए। कार्यालय की खराब साफ-सफाई व्यवस्था पर उन्होंने बीएसए अखिलेश प्रताप सिंह को कड़ी चेतावनी देते हुए तुरंत सफाई व्यवस्था सुधारने के निर्देश दिए। आईजीआरएस पटल पर लिपिक दिलीप त्रिवेदी अनुपस्थित मिले।

अमृत विचार

लखनऊ, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

अलग-अलग सड़क हादसों में 4 युवकों व अधेड़ की गई जान

हादसे के बाद परिजनों में मची चीख-पुकार

कार्यालय संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। सदर व अजगैन कोतवाली और फतेहपुर चौरासी व बेहटा मुजावर थाना क्षेत्र में वाहनों की टक्कर से चार लोगों की मौत हो गई। हादसे की खबर से परिजनों में चीख पुकार मच गई। संबंधित क्षेत्र की पुलिस ने जांच कर पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंपे हैं।

कानपुर नगर के नौबस्ता थानाक्षेत्र के खाड़ेपुर निवासी रवि राजपूत (30) मजदूरी करता था। वर्तमान में वह गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के मरहला चौराहा के पास किराए का कमरा लेकर रहता था। रविवार रात वह बेटे डुग्गू की तबियत खराब होने पर सिरप लेने की बात कह कर घर से निकला था। लेकिन वह वापस नहीं लौटा। देररात उसे लखनऊ- कानपुर हाईवे पर सदर कोतवाली क्षेत्र के शेखपुर नरी गांव के सामने अज्ञात वाहन उसकी बाइक में टक्कर मारकर भाग निकला। इसमें वह गंभीर घायल हो गया। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल पहुंचाया। जहां उसकी मौत हो गई। पास मिले परिचय पत्र से पुलिस ने उसकी पहचान कर परिजनों को सूचना दी। हादसे की खबर से परिजनों में चीख पुकार मच गई। पत्नी शेनू, मां फूलन देवी रो-रोकर बेहाल रहीं। पिता राम सजीवन गुजरात में एक साबुन फैक्ट्री में काम करता है।

रवि राजपूत।

रविवार को वह गुजरात जाने के लिए निकला था। लेकिन बेटे की मौत की सूचना से मोर्चरी लौटा। पिता ने बताया कि उसके दो बेटों में बड़ा बेटा मनोज दिव्यांग था। उसकी पहले मौत हो चुकी है। बताया कि रवि पर कर्ज था। इस पर कानपुर वाला मकान बेचकर वे लोग किराए के मकान में रह रहे थे। दरोगा अंजनी सिंह ने बताया कि शव का पोस्टमार्टम कराया गया है। टक्कर मारने वाले वाहन का पता लगाया जा रहा है।

फैक्ट्री श्रमिक की सड़क हादसे में गई जान

फतेहपुर चौरासी। महमदपुर गांव निवासी राम नरेश (30) पुत्र कल्लू दही औद्योगिक क्षेत्र में एक फैक्ट्री में श्रमिक था। रविवार देर रात वह फैक्ट्री से घर लौट रहा था। तभी गांव से दो किमी पहले थानाक्षेत्र के रूपपुर चंदेला गांव के सामने अज्ञात वाहन ने उसे टक्कर मार दी। इसमें वह गंभीर घायल हो गया। पिता ने बताया कि किसी राहगीर ने उसे घायल पड़ा देख उसके फोन से परिजनों को सूचना दी। इस पर परिजन उसे सफीपुर सीएचसी लाए। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। यह सुनते ही पत्नी रामदेवी बेहाल हो गई। बेटे की मौत से मां जमुना भी बदहवाश है। पिता ने बताया कि वह दो भाइयों में उमेश से बड़ा था। उसके दो बेटे आयुष (5) व कार्तिक (3) हैं। एसओ ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि वाहन की तलाश की जा रही है।

राम नरेश।

वाहन की टक्कर से बहनोई की मौत, साला घायल

बांगरमऊ। बेहटा मुजावर थानाक्षेत्र के पोहपी खेड़ा गांव निवासी विजय (30) पुत्र स्व. बोडे हरियाणा के फरीदाबाद में आनलाइन खाद्य सामान आपूर्ति करने का काम करता था। रविवार सुबह वह फुफेरे साले की शादी में शामिल होने आया था। देररात वह बांगरमऊ कोतवाली क्षेत्र के प्रेमगंज निवासी साले जितेंद्र के साथ बाइक में पीछे बैठ कर फतेहपुर चौरासी थानाक्षेत्र के देवरिया गांव से बारात में शामिल होने तड़वा गांव जा रहा था। तभी थानाक्षेत्र के सुसुमऊ गांव के पास अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। इसमें विजय गंभीर घायल हो गया। वहीं जितेंद्र चोटिल हो गया। उसकी सूचना पर पहुंचे परिजन घायलों को सीएचसी लाए। जहां से डॉक्टर ने उसे लखनऊ रेफर कर दिया। लेकिन वहां पहुंचने से पहले उसकी सांसे थम गई। इस पर परिजन शव लेकर गांव लौट आए। पति का शव देख पत्नी लक्ष्मी सदमे में आ गई। चचेरे भाई सुरेश ने बताया कि वह 3 भाइयों में छोटा था। उसके दो बेटियों में लच्छू (4) व चार माह की गुड़िया है। एसओ ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया परिजनो की सूचना पर शव का पोस्टमार्टम कराया गया है।

कार ने बाइक में मारी टक्कर, किशोर की मौत

बांगरमऊ, अमृत विचार। बेहटा मुजावर थानाक्षेत्र के नारायणखेड़ा निवासी अनिल अपने 14 वर्षीय बेटे संतोष व चचेरे भाई मंगे के साथ भांजे की बारात में शामिल होने हरदोई जिले के सिंधवल गांव गया था। जहां से लौटते समय बीती रात बांगरमऊ-संडीला मार्ग पर सई नदी पुल के पास कार ने बाइक में टक्कर मार दी। इसमें बाइक सवार तीनों लोग घायल हो गए। जिन्हें हरदोई जिले के कासिमपुर सीएचसी में भर्ती कराया गया। जहां संतोष को डाक्टर ने मृत घोषित कर दिया। वहीं पिता अनिल व चाचा मंगे को रेफर कर दिया गया। घटना की सूचना पर हरदोई पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। चर्चा है कि टक्कर मारने8 वाली कार भी उसी बारात में गई थी।

डंपर की टक्कर से स्कूटी सवार की गई जान

नवाबगंज। अजगैन कोतवाली क्षेत्र के सरांय इंदल गांव निवासी कन्हैया लाल शर्मा (55) पुत्र स्व. सुंदर लाल कानपुर के हरबंश मोहाल थानाक्षेत्र के तेलियानी मोहल्ला में किराए के मकान में रहकर हालासी रोड में एक दुकान में काम करता था। सोमवार सुबह वह खेती के काम से गांव जा रहा था। तभी लखनऊ-कानपुर हाईवे पर कोतवाली क्षेत्र के मिश्रीगंज गांव के सामने डंपर ने उसकी स्कूटी में टक्कर मार दी। इसमें वह गंभीर घायल हो गया। लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे सीएचसी भेजा। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। हादसे के बाद चालक डंपर छोड़कर भाग निकला। जिसे पुलिस ने कोतवाली में खड़ा कराकर परिजनों को हादसे की सूचना दी। खबर मिलने पर पहुंचा इकलौता बेटा गौरव शव देख बिलख उठा। बताया कि मां मांडवी की दो साल पहले बीमारी से मौत हुई थी। अब पिता भी साथ छोड़ गए। अजगैन कोतवाल सुरेश सिंह ने बताया कि टक्कर मारने वाले डंपर को पकड़ लिया है।

न्यूज ब्रीफ

महिला जनसुनवाई कार्यक्रम 5 दिसंबर को

उन्नाव, अमृत विचार। राष्ट्रीय महिला आयोग नई दिल्ली की सदस्या अर्चना मजूमदार 5 दिसंबर को महिलाओं की समस्याओं के निदान हेतु महिला जनसुनवाई कार्यक्रम में पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस (निरीक्षण भवन) में प्रतिभाग करेंगी। यह जानकारी जिला प्रोबेशन अधिकारी ने दी।

अन्ना मवेशी से टकरा कर बाइक सवार गंभीर

नवाबगंज। दही थानाक्षेत्र के गांव बारिगंवा निवासी चंदन (42) पुत्र नजर अली सोमवार शाम किसी काम से चमरौली गांव बाइक से आया था। वापस लौटते समय लालपुर गांव के पास सड़क पर अचानक अन्ना मवेशी आ गया। जिससे टकराकर वह गंभीर घायल हो गया। सूचना पर पहुंचे पीआरवी कमांडर शिव कुमार सरोज व चालक सचिन ने चंदन को अपने वाहन से सीएचसी नवाबगंज पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सक ने उसे गंभीर देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

हाईवे पर डामरीकरण से पूरे दिन रेंगे वाहन

शुक्लागंज। सोमवार को एनएचएआई ने लखनऊ-कानपुर हाईवे पर कर्मी बिझलामऊ के पास डामरीकरण कार्य शुरू कराया। सुबह से काम तेज होने पर सड़क पर बैरियर लगाकर आधा मार्ग बंद कर दिया गया। मशीनें व निर्माण सामग्री सड़क पर फैलने से रास्ता संकरा हो गया और वाहनों को एक-एक कर निकलना पड़ा। संकरी लेन के कारण हाईवे पर जाम की स्थिति बन गई और कई वाहन लंबे समय तक फंसे रहे। हाईवे पर जगह-जगह बने गड्ढों की मरम्मत के लिए एनएचएआई टीम तैनात की गई थी। लेकिन कार्य के दौरान कानपुर की ओर जाने वाले वाहनों की रफ्तार थम-सी गई। सुबह 11 बजे से शाम चार बजे तक वाहन रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे, जिससे यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ी। करीब पांच घंटे बाद डामरीकरण के प्रमुख हिस्से के पूरा होने पर बैरियर हटाए गए और यातायात धीरे-धीरे सामान्य हो सका।

बिजली बिल राहत योजना में पहले दिन हुए 12 रजिस्ट्रेशन

शुक्लागंज। शासन की बिजली बिल राहत योजना 2025-26 का पहला चरण सोमवार से शुरू हुआ। इसकी शुरुआत होते ही बड़े बकायेदार गंगाघाट सब स्टेशन पहुंचे और शिविर में रजिस्ट्रेशन कराकर लाभ लेना शुरू किया। पहले दिन 12 उपभोक्ताओं ने पंजीकरण कराया और ब्याज माफी के साथ 25 प्रतिशत मूलधन छूट का फायदा लिया। विभाग को पहले दिन करीब डेढ़ लाख का राजस्व जमा हुआ। विद्युत बिजली विभाग की ओर से नगर पालिका परिसर व गायत्री नगर में भी शिविर लगाए गए। जबकि सब स्टेशन पर अलग से रजिस्ट्रेशन काउंटर लगा। एसडीओ राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि अधिक से अधिक उपभोक्ता योजना का लाभ ले सकें इसके लिए नगर के विभिन्न मोहल्लों में क्रमवार शिविर लगेंगे। विभाग का लक्ष्य है कि बकाया बिजली बिलों की वसूली बढ़ाकर उपभोक्ताओं को राहत दी जा सके।

अभियान चलाकर 20 ऑटो सीज

शुक्लागंज। रविवार को कानपुर जाते समय उन्नाव सांसद के जाम में फंस जाने के बाद गंगाघाट कोतवाली पुलिस ने यातायात व्यवस्था सुधारने के लिए सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। सोमवार को पुलिस टीम ने नो पार्किंग जोन में खड़े वाहनों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया। कोतवाली प्रभारी अजय कुमार सिंह, बालूघाट चौकी इंचार्ज गजेन्द्र सिंह तथा गंगाघाट पुलिस टीम ने पोनी रोड तिराहे से बालूघाट मोड़ तक सड़क किनारे खड़े ई-रिक्शा, टेंपो और ऑटो की जांच की। इस दौरान नो पार्किंग क्षेत्र में खड़े 20 ऑटो सीज कर दिए गए।

हाईस्कूल व इंटर परीक्षा के लिए बनाए गए 122 केंद्र

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। माध्यमिक शिक्षा परिषद उप्र प्रयागराज के सचिव द्वारा वर्ष 2026 की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा के लिए 122 परीक्षा केंद्रों का निर्धारण किया गया है।

डीआईओएस सुनील दत्त ने बोर्ड सचिव द्वारा जारी किए गए परीक्षा केंद्रों में कितने छात्र किन-किन विद्यालयों में परीक्षा देंगे इसका भी आवंटन कर दिया है। उन्होंने कहा है कि बोर्ड से चयनित परीक्षा केंद्रों के संबंध में यदि कोई आपत्ति या शिकायत हो तो संस्था, विद्यालय के छात्र, अभिभावक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक युक्तियुक्त कारण व साक्ष्य सहित जनपदीय केन्द्र निर्धारण समिति के समक्ष निर्धारित प्रारूप (संलग्न) पर अपना ऑनलाइन प्रत्यावेदन माध्यमिक शिक्षा परिषद के पोर्टल upmsp.edu.in पर 4 दिसम्बर 2025 तक प्रस्तुत कर सकते हैं। इस तिथि के बाद कोई भी प्रत्यावेदन मान्य नहीं होगा।

जिले में हैं 414 माध्यमिक विद्यालय

माध्यमिक शिक्षा परिषद उप्र प्रयागराज की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षा 18 फरवरी से 12 मार्च तक होनी है। जिले में 41 राजकीय, 59 सहायता प्राप्त व 314 वित्तविहीन माध्यमिक विद्यालय हैं। इस वर्ष हाईस्कूल में 39163 व इंटर में 41245 छात्र पंजीकृत हैं। इन छात्रों के लिए बोर्ड द्वारा 122 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। यह केंद्र जिला स्तर की प्रस्तावित समिति की आख्या के आधार पर प्रस्तावित किए गए हैं। पहले दिसंबर को बोर्ड सचिव द्वारा परीक्षा केंद्रों की सूची जारी की गई है। अब आपत्तियां 4 दिसंबर तक मांगी गई हैं। ताकि किसी प्रकार की त्रुटि हो तो उसे सुधारा जा सके।

पंचायत सचिवों ने हाथों में काली पट्टी बांधकर किया आंदोलन

बांगरमऊ, उन्नाव, अमृत विचार। ब्लॉक कार्यालय परिसर में विभिन्न समस्याओं को लेकर सभी पंचायत सचिवों ने सोमवार को हाथों में काली पट्टी बांधकर शांतिपूर्ण सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की। सचिवों के अनुसार शासन द्वारा मांगे न माने जाने तक विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

ग्राम पंचायत अधिकारी व ग्राम विकास अधिकारी समन्वय समिति की ब्लाक इकाई द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया कि अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराए बिना पंचायत सचिवों के निजी मोबाइल व सिम से फेसियल रिकाग्निशन बेस्ड अटेंडेंस सिस्टम जरिए पंचायत सचिवों की उपस्थिति के शासकीय पत्र से पूरे प्रदेश के सचिवों में रोष व भय व्याप्त है। साथ ही शासन द्वारा उन पर जबरन थोपे गए फार्मर रजिस्ट्री, एग्रो स्टैक सर्वे, गौशाला प्रबंधन, आयुष्मान हेल्थ कार्ड, फैमिली आईडी, विभिन्न पेंशन के सत्यापन, आपरेशन कायाकल्प व पराली प्रबंधन आदि गैर विभागीय कार्यों के लिए दबाव बनाया जा रहा है। इस परिस्थिति के चलते पंचायत सचिव बीमारी से ग्रस्त होने के साथ विभिन्न दुर्घटनाओं का शिकार भी हो रहे हैं। पंचायत सचिवों का कहना है कि यदि शासन द्वारा इन समस्याओं से निजात न दी गई तो 5 दिसंबर से सभी पंचायत सचिव शासकीय ह्वाट्सएप ग्रुपों से खुद को पृथक कर लेंगे। जबकि 10 दिसंबर से सभी सचिव निजी वाहन से सरकारी कार्य नहीं करेंगे और 15 दिसंबर को सभी सचिव अपने डोंगल ब्लाक कार्यालय में जमा कर देंगे। पंचायत सचिवों ने कहा कि समस्याओं के समाधान तक उनका प्रदर्शन जारी रहेगा। प्रदर्शन में ब्लॉक के पंचम लाल, जंग बहादुर, सुभाष गौतम, आशीष सिंह पटेल, रोहित सिंह, रबीना व विमल आनंद जी सुमन आदि शामिल रहे।

प्रदर्शन करते पंचायत सचिव। अमृत विचार

प्रदर्शन में शामिल हुए नवाबगंज के सचिव

नवाबगंज, अमृत विचार। सोमवार को विकासखंड कार्यालय में ग्राम विकास अधिकारी व पंचायत अधिकारियों ने बांह पर काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन की शुरुआत की। इसका मुख्य कारण शासन द्वारा एफआरएस प्रणाली पर दिन में तीन बार उपस्थिति देने के निर्देश और अन्य विभागों के अतिरिक्त कार्य हैं। जिनका वे विरोध कर रहे हैं। कार्यालय में ब्लॉक समन्वय समिति का गठन किया गया। जिसमें दिलीप मिश्र को अध्यक्ष व आशीष पटेल को मंत्री चुना गया। अध्यक्ष दिलीप मिश्रा ने कहा कि सत्याग्रह के दौरान सरकारी कार्य नहीं रोके जाएंगे। 1 से 4 दिसंबर तक काली पट्टी बांधकर कार्य किया जाएगा। 5 दिसंबर को विकासखंड कार्यालय में सांकेतिक धरना होगा। इसके बाद मुख्यमंत्री को ज्ञापन दिया जाएगा। बताया कि 10 दिसंबर से इंजन चालित वाहनों का उपयोग बंद कर साइकिल या सार्वजनिक परिवहन से क्षेत्र भ्रमण किया जाएगा तथा 15 दिसंबर से ई-ग्राम स्वराज पोर्टल पर भुगतान के लिए उपलब्ध डोंगल को वापस कर दिया जाएगा।

मांगें पूरी न होने तक जारी रहेगा आंदोलन

बिछिया। ब्लॉक मुख्यालय में सोमवार को सचिवों ने मांगों को लेकर काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया। उनका कहना है कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होंगी वे विरोध जारी रखेंगे। उन्होंने सरकार से उनकी मांगों पर ध्यान देने का आग्रह किया। सचिवों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगों पर जल्द विचार नहीं हुआ तो आंदोलन और व्यापक होगा। इसमें सचिव ओमशंकर तिवारी, शिवांक शुक्ला, महेश चंद्र, मनीष, रणंजय सिंह आदि रहे।

काम पर लौटीं हड़ताल पर गई आशाबहुएं

नवाबगंज, अमृत विचार। मानदेय सहित अन्य समस्याओं के समाधान को लेकर ब्लाक नवाबगंज क्षेत्र की आशा बहुएं कार्य बहिष्कार कर कलम बंद हड़ताल पर चली गई थीं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अधिकारियों से वार्ता के बाद करीब एक माह बाद आशाबहुओं ने हड़ताल समाप्त करने का पत्र सीएचसी अधीक्षक को सौंपा है।

बता दें कि नवाबगंज ब्लाक क्षेत्र में कार्यरत आशा बहुएं मानदेय वृद्धि व लंबित भुगतान आदि समस्याओं के लिए आशा बहू कल्याण समिति के बैनर तले 1 नवंबर से कलम बंद हड़ताल पर थीं। आशा बहू कल्याण समिति की नवाबगंज ब्लॉक अध्यक्ष उमा देवी ने बताया कि आशा बहुओं के लंबित भुगतान, मानदेय वृद्धि समेत अन्य समस्याओं के समाधान के लिए वह सभी एक माह से कलम बंद हड़ताल पर थीं। बीती 28 नवम्बर को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के महानिदेशक व अन्य अधिकारियों से उनकी मांगों व समस्याओं को लेकर वार्ता हुई। जिसमें लंबित भुगतान, मानदेय वृद्धि आदि समस्याओं पर सहमति बनी है। बताया कि इसके बाद आशा बहू कल्याण समिति ने हड़ताल समाप्ति की घोषणा की है।

गौशालाओं को तिरपाल से ढककर रखें : डीएम

गौशाला का निरीक्षण करते जिलाधिकारी गौरांग राठी। अमृत विचार

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। जिलाधिकारी गौरांग राठी ने नगर पालिका परिषद उन्नाव अंतर्गत गौशाला का निरीक्षण किया। इसमें उन्होंने पशुओं को ठंड से बचाव के इंतजाम, हरा चारा, खली, चोकर, पशु आहार, भूसा व पानी सहित अन्य जरूरी व्यवस्थाएं देखीं।

जिलाधिकारी ने ईओ नगर पालिका परिषद उन्नाव को निर्देशित किया कि ठंड में पशुओं को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। चारों ओर से गौशाला को तिरपाल से ढककर रखा जाए। पशुओं को ठंड में कोई भी दिक्कत हुई तो कड़ी कार्रवाई की जाएगी। कहा कि बीमार पशुओं का इलाज समय से हो यह ध्यान रखा जाए। गौशाला में खली, चोकर व भूसा पर्याप्त हो। भूसा के साथ पशुओं को हरा चारा, खली, चोकर, पशु आहार मिलाकर दिया जाए। कहा कि गौवंश की देखभाल में किसी प्रकार की लापरवाही न हो यह विशेष ध्यान दिया जाए। जिलाधिकारी ने सभी गोवंशों की ईयर टैगिंग कराने के निर्देश भी दिये।

एआरटीओ प्रवर्तन के तीन हमराही सिपाही निलंबित

उन्नाव। जिले की सीमा से ओवरलोड वाहनों पास कराने के चल रहे खेल का एसटीएफ ने भांडा फोड़ा था। जिसके बाद पूरे मामले का ठीकरा दोनों एआरटीओ प्रवर्तन के हमराही तीन सिपाहियों के सिर फोड़ते हुए उन्हें निलंबित किया गया।

कानपुर एसटीएफ के दारोगा राहुल सिंह परमार ने बीती 11 को ओवरलोडिंग का खेल पकड़ा था। इसमें शामिल सुनील सचान पुत्र शिवशंकर निवासी जवाहरनगर घाटमपुर कानपुर, प्रदीप सिंह पुत्र उदयभान सिंह निवासी स्योहि ललरपुर, थाना घाटमपुर कानपुर, श्रीकिशन पुत्र भगवानदीन निवासी नारायच, थाना भौंडाहा हमीरपुर, तारिक व नियाज अहमद निवासी हिरन नगर सदर कोतवाली पर रिपोर्ट दर्ज की गई थी। एआरटीओ प्रवर्तन संजीव कुमार सिंह के हमराही प्रदीप व रंजीत, प्रवर्तन द्वितीय प्रतिभा गौतम के हमराही सुरेंद्र की मिलीभगत से गिट्टी, मौरंग व बालू के ओवरलोड वाहनों के मालिकों से मोटी रकम लेकर जिले की सीमा पार कराते थे। ट्रक चालकों से की गई वसूली का हिस्सा परिवहन विभाग कर्मियों तक भी जाता है। उन्होंने स्वीकार किया था कि वे इस काम में दो साल से लिप्त थे। इस मामले को संज्ञान में लेकर परिवहन निदेशालय ने आरोपी सिपाही प्रदीप, रंजीत व सुरेंद्र को निलंबित कर दिया।

सिटी डायरी

सुपरवाइजर को सम्मानित करते डीएम व एडीएम।

एसआईआर कार्य पूर्ण करने पर सुपरवाइजर सम्मानित

उन्नाव। डीएम गौरांग राठी ने विशेष प्रागाढ़ पुनरीक्षण अभियान 2026 के दृस्टिगत बांगरमऊ विधानसभा के सुपर वाइजर यज्ञ प्रसाद दीक्षित द्वारा एसआईआर कार्य गणना प्रपत्रों के वितरण, संग्रह, डिजिटाइजेशन व अन्य संबंधित कार्यों को शत-प्रतिशत पूर्ण किये जाने पर कलक्ट्रेट कार्यालय में प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया। डीएम ने कहा कि आप द्वारा बहुत ही परिश्रम व लगन के साथ सौंपे गए दायित्वों निर्वहन को समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया है। यह सम्मानित करने योग्य हैं। इसी तरह अन्य बीएलओ व सुपरवाइजर द्वारा भी पूरी तन्मयता परिश्रम और लगन के साथ ईमानदारी से एसआईआर का कार्य करें तो समय से पूर्व ही एसआईआर का कार्य पूर्ण हो सकेगा। इस दौरान एडीएम वित्त एवं राजस्व सुशील कुमार गोंड, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी अशुतोष सहित आदि मौजूद रहे।

नाले के ऊपर रखी टंकी में डाला जाता केमिकल।

माघ मेले को लेकर पालिका ने बड़े नालों में बॉयोरेमिडिएशन प्रक्रिया कराई शुरू

शुक्लागंज। जनवरी माह में प्रस्तावित माघ मेले को लेकर शुक्लागंज में तैयारियां तेज हैं। मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को स्वच्छ गंगाजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। जिलाधिकारी गौरांग राठी ने निर्देश दिए थे कि गंगा में गिरने वाले सभी नालों को तत्काल प्रभाव से रोका जाए और जल शोधन की प्रभावी व्यवस्था की जाए। इसी क्रम में नगर पालिका गंगाघाट ने सोमवार को नगर के तीन बड़े नालों इंद्रा नगर, शक्ति नगर और मिश्रा कॉलोनी में बॉयोरेमिडिएशन प्रक्रिया शुरू कराई। इन नालों से लंबे समय से गंदा पानी सीधे गंगा में गिर रहा था, जिससे जल प्रदूषित हो रहा था।

सरैयां आरओबी स्थल के पास रखे लोहे के गार्डर।

सरैयां रेलवे क्रॉसिंग पर आरओबी के लिये रेलवे ने मंगवाये लोहे के गार्डर

शुक्लागंज। सरैयां रेलवे क्रॉसिंग पर बनाए जा रहे आरओबी के निर्माण कार्य में सेतु निगम और रेलवे दोनों की जिम्मेदारी तय की गई है। सेतु निगम की ओर से आरओबी का कार्य तेजी से कराए जा रहे हैं, लेकिन रेलवे से जुड़े कार्य अभी तक रुके हुए हैं। इधर रेलवे की ओर से आरओबी के मुख्य हिस्से में लगने वाले लोहे के गार्डर मंगवाए गए हैं। दिल्ली से पहुंचे इन गार्डरों को मेगा ब्लॉक मिलने के बाद सरैयां क्रॉसिंग के पास रखना शुरू किया गया है। कार्यदायी संस्था के अनुसार अनुसार रेलवे पटरियों के ऊपर कुल 30 लोहे के गार्डर लगाए जाएंगे।

नगर में जाम से निजात दिलाने को प्रशासन सक्रिय, एसपी ने किया निरीक्षण

पोनी रोड तिराहे के पास जाम को लेकर चर्चा करते एसपी।

शुक्लागंज। नवीन गंगापुल पर लगने वाले जाम से नगर वासियों को राहत दिलाने के लिए पुलिस प्रशासन ने एक बार फिर मोर्चा संभाला है। सोमवार शाम एसपी जय प्रकाश सिंह, सीओ सिटी दीपक यादव के साथ नगर पहुंचे और जाम की स्थिति का मौके पर निरीक्षण किया। अधिकारियों ने बालूघाट स्थित टेंपो स्टैंड, पोनी रोड तिराहा व अन्य भीड़भाड़ वाले पॉइंटों पर पहुंचकर जमीनी हकीकत परखी। निरीक्षण के दौरान इंस्पेक्टर अजय कुमार सिंह को यातायात व्यवस्था दुरुस्त करने को लेकर स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए। एसपी ने बताया कि सरैयां रेलवे क्रॉसिंग पर आरओबी निर्माणाधीन होने के कारण नवीन पुल पर वाहनों का दबाव बढ़ गया है। संकरी सड़क के चलते यहां जाम की समस्या गंभीर हो जाती है। कहा कि आरओबी बनते ही यातायात सामान्य हो सकेगा।

मुहिम सीएमओ ने रैली को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

विश्व एड्स दिवस पर रैली निकाल किया जागरूक

कार्यालय संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। जिला अस्पताल परिसर से विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता रैली निकाली गई। जिसे सीएमओ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जो शहर के प्रमुख स्थानों से होते हुए जिला अस्पताल में समाप्त हुई।

विश्व एड्स दिवस पर जिला अस्पताल परिसर से सीडीओ कृति राज व सीएमओ डॉ. सत्य प्रकाश ने जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसमें एनसीसी कैडेटों, स्वास्थ्य कर्मियों, आशा-आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, सामाजिक संगठन के लोगों ने पंपलेट बांटकर आमजन को एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूक किया। रैली गांधी नगर चौराहा, छोटा चौराहा व बड़ा चौराहा आदि मार्गों से होकर वापस जिला अस्पताल में समाप्त हुई।

हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना करतीं सीडीओ कृति राज, सीएमओ। अमृत विचार

सीएमओ ने कहा कि विश्व एड्स दिवस प्रतिवर्ष 1 दिसंबर को एचआईवी संक्रमण व एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से मनाया जाता है। बताया कि अभी भी कई लोग इस बीमारी के लक्षणों, बचाव व उपचार के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं रखते। इससे उन्हें समय पर इलाज नहीं मिल पाता। उन्होंने स्पष्ट किया कि एचआईवी छूने, साथ बैठने, भोजन साझा करने या सामान्य संपर्क से नहीं फैलता। यह केवल असुरक्षित यौन संबंध, संक्रमित सुई, संक्रमित रक्त के संपर्क व गर्भावस्था या स्तनपान के दौरान मां से बच्चे में फैल सकता है। कहा कि जागरूकता व सावधानी ही इस संक्रमण से बचने का प्रभावी तरीका है।

रैली में स्वास्थ्य कर्मियों ने लोगों से अपील की कि यदि उन्हें एचआईवी से संबंधित कोई लक्षण महसूस हों तो उसे छिपाएं नहीं बल्कि तुरंत नजदीकी सरकारी अस्पताल में जांच कराएं। बताया कि जिला अस्पताल में इंटीग्रेटेड काउंसलिंग एंड टेस्टिंग सेंटर में निःशुल्क जांच, परामर्श व इलाज की सुविधा उपलब्ध है। बताया कि समय पर इलाज होने से संक्रमित व्यक्ति भी सामान्य जीवन जी सकता है।

न्यूज ब्रीफ

मारपीट के दो मामलों में 6 पर रिपोर्ट दर्ज

उन्नाव, अमृत विचार। माखी थानाक्षेत्र के अलग-अलग गांव में हुई मारपीट में पुलिस ने पीड़ितों की तहरीर पर पुलिस 6 पर रिपोर्ट दर्ज की है। थानाक्षेत्र के मैथी टीकुर गांव निवासी सूर्य पाल ने पुलिस को तहरीर देकर अपनी बेटी कोमल के पति सचिन, उसके भाई सतीश व पड़ोसी चंद्रशेखर पर मारपीट करने आरोप लगाया है। वहीं थानाक्षेत्र के परमनी गांव निवासी रामनरेश ने जमीन के बंटवारे की रंजिश में भाई मनोज, सुजीत व शिवा पर मारपीट करने का आरोप लगाते हुए तहरीर दी है। एसओ योगेश सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर 6 लोगों पर रिपोर्ट दर्ज की गई है।

कार की टक्कर से बाइक सवार घायल

शुक्लागंज उन्नाव, अमृत विचार। फतेहपुर जिले के चांदपुर निवासी वीर सिंह यादव सोमवार शाम बाइक से आजाद मार्ग चौराहे से मरहला चौराहे की ओर जा रहे थे। धनइयां गांव के पास पीछे से आई तेज रफ्तार कार ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। वीर सिंह सड़क पर उछलकर गिर पड़े और गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल को 108 एम्बुलेंस से अस्पताल भेजा और कार चालक की तलाश शुरू कर दी है।

दबंग ने सरेआम ऑटो चालक से की मारपीट

बाराबंकी : अमृत विचार। कोतवाली नगर क्षेत्र के नबीगंज मोड़ पर सवारी उतार रहे ऑटो चालक को दबंग ने पीट दिया। पीड़ित ऑटो चालक लवकुश कुमार निवासी अतरौली थाना जैदपुर ने बताया कि 27 नवंबर की सुबह वह नबीगंज के पास कंपनी के सामने सवारी उतार रहा था। इसी दौरान आरोपित मोहम्मद आशिफ निवासी पल्हरी चौराहा ने गाली–गलौज की और लात–घूंसे से मारने लगा।

नाले का पुनर्निर्माण बना लोगों के लिए समस्या

उचित यातायात प्रबंधन व वैकल्पिक मार्ग व जल निकासी न होने से स्थानीय व्यापारी व लोग परेशान

संवाददाता, बांगरमऊ उन्नाव

नाला निर्माण के दौरान फैली अव्यवस्था। अमृत विचार

अमृत विचार। नगर के हरदोई–उन्नाव मार्ग किनारे नौनिहालगंज बाजार के सामने नाले के पुनर्निर्माण के लिये जेसीबी से खुदाई का काम चल रहा है। जिससे नागरिकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जेसीबी से हो रही खुदाई के कारण मार्ग संकरा हो गया है। जिससे दिनभर जाम लगता रहा है। नागरिकों व व्यापारियों ने नगर पालिका प्रशासन से जल्द समस्या के समाधान की मांग की है।

बता दें कि नगर के उत्तरी छोर पर बसे मोहल्लों की जल निकासी के लिए कई दशकों पूर्व स्थानीय प्रशासन द्वारा पक्के नाले का निर्माण कराया गया था। इस नाले का पानी नगर के हरदोई-उन्नाव व लखनऊ मार्ग होते हुए कल्याणी नदी में जाता है। इसके अलावा नगर के मध्य स्थित नौनिहालगंज बाजार व आसपास के मोहल्लों का गंदा पानी भी इसी नाले में गिरता है। पहले इस पक्के नाले की चौड़ाई करीब 20 फीट व गहराई 10 फीट थी। कस्बे की आबादी बढ़ती गई और जमीन कीमती होती गई। लोगों ने नाले पर मकान बनाकर कब्जा कर लिया। नाला सिकुड़ता चला गया। गैर जिम्मेदार नागरिकों द्वारा प्लास्टिक व कचरा डालने से नाला छोटी नाली बनकर रह गया। इस दौरान पालिका प्रशासन मूकदर्शक बना रहा। परिणाम स्वरूप मामूली बारिश में भी नगर का नौनिहालगंज बाजार व प्रमुख मार्ग तालाब में तब्दील होने लगे। हालांकि नाला सफाई के नाम पर नगर पालिका प्रशासन हर वर्ष जेसीबी से औपचारिकताएं पूरी करता है। किंतु इससे जलभराव की समस्या का समाधान नहीं होता है। अंततः जल भराव की समस्या से निजात दिलाने के लिए नगर पालिका प्रशासन ने पुराने नाले के स्थान पर नए नाले का निर्माण शुरू किया है। लेकिन पालिका के ठेकेदार द्वारा योजनाबद्ध तरीके से निर्माण कार्य न करने से नागरिकों को मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का मानना है कि यदि नाला खुदाई से पहले जल निकासी की वैकल्पिक व्यवस्था कर ली जाती तो सड़क व बाजार में गंदे पानी और कीचड़ का जमाव न होता। पूर्व पालिका उपाध्यक्ष सुधीर मिश्रा सद्धू, व्यापारी नेता रवि कांत गुप्ता, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के नगर मंत्री शुभम रस्तोगी व एडवोकेट रामपाल यादव आदि का कहना है कि नाले का निर्माण जरूरी है। लेकिन उचित ट्रैफिक प्रबंधन व वैकल्पिक मार्ग न होने से आमजन को दिक्कतें झेलनी पड़ रही हैं।

व्यापारियों ने बताया कि सड़क अवरुद्ध होने से ग्राहकों की आवाजाही प्रभावित हो रही है। जिससे कारोबार पर असर पड़ रहा है। नागरिकों ने नगर पालिका प्रशासन से मांग की है कि नाला निर्माण कार्य के दौरान ट्रैफिक व्यवस्था बेहतर की जाए और जरूरत पड़ने पर डायवर्जन की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। वहीं पालिका प्रशासन ने कहा कि नाला निर्माण जल्द पूरा करने का प्रयास चल रहा है। जल्द ही लोगों को राहत मिलेगी।

पत्नी मायके से हुई फरार, पति ने फंदे से लटक कर की खुदकुशी

उन्नाव, अमृत विचार। करीब डेढ़ माह पूर्व मायके गई पत्नी अपने 3 साल के बेटे को छोड़कर किसी और के साथ चली गई। इससे आहत पति ने कमरे में फंदे से लटककर जान दे दी। पुलिस ने दरवाजा तोड़कर शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। बिहार थानांतर्गत रायपुर खरही गांव निवासी संजू लोध (35) पुत्र स्व. श्रीपाल ने खुदखुशी कर ली। परिजनों को इसकी जानकारी सोमवार सुबह तब हुई जब उसके 3 साल के बेटे सुभाष की रोने की आवाज सुन परिजन कमरे के पास पहुंचे। दरवाजा अंदर से बंद होने पर खिड़की से झांककर देखा तो संजू कमरे की छत पर लगे कुंडे में साड़ी के फंदे से लटक रहा था। बड़े भाई वंश बहादुर ने बताया कि संजू मजदूरी करता था। करीब डेढ़ माह पूर्व वह पत्नी रानी व बेटे के साथ थानाक्षेत्र के बंदोहा गांव अपनी ससुराल गया था। जहां से उसकी पत्नी बेटे को छोड़कर किसी और के साथ चली गई थी। ससुरालियों के साथ उसने पत्नी को बहुत तलाश किया लेकिन पता न लगने पर वह बेटे को लेकर घर लौट आया। तभी से वह परेशान रहता था। एसओ राहुल सिंह ने बताया कि परिजनों की सूचना पर शव का पोस्टमार्टम कराया है।

बाइक टकराने के विवाद में हुई मारपीट, युवक की मौत

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। मौरावां थानाक्षेत्र के असरेंदा गांव के मजरा दिरपाल गंज निवासी शैलेंद्र कुमार (24) पुत्र सरजू प्रसाद बीती शनिवार शाम अपनी पत्नी मंजू लता के साथ रायबरेली जिला के बड़ापूरा गांव एक मांगलिक कार्यक्रम में शामिल होने गया था। तभी मौरावां-बछरावां मार्ग पर रायबरेली जिला की सीमाक्षेत्र के इचौली चौराहे पर उसकी बाइक की दूसरी बाइक से टक्कर हो गई थी। इसमें दोनों में कहासुनी हो गई। इस पर दूसरी बाइक सवार युवकों ने शैलेंद्र की पिटाई कर दी। इसमें वह गंभीर घायल हो गया। उसे बछरावां के सीएचसी लाया गया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया था। रविवार देररात रायबरेली में पोस्टमार्टम होने के बाद शव घर पहुंचने पर कोहराम मच गया। वह चार भाइयों में दूसरे नंबर पर था। उसकी मौत से पत्नी मंजूलता, मां निर्मला, भाई राजेंद्र, विजेंद्र व रामकरन बेहाल रहे। सोमवार को गांव के बाहर परिजनों ने अपने खेत में उसका अंतिम संस्कार कर दिया। एसओ मौरावां कुंवर बहादुर सिंह ने बताया कि घटनास्थल से संबंधित थाने में रिपोर्ट दर्ज की गई है। पुलिस आगे की कार्रवाई कर रही है।

बिना नंबर प्लेट व मॉडीफाइड साइलेंसर वाली बाइक सीज

बिलग्राम, हरदोई, अमृत विचार। ट्रैफिक पुलिस ने शुक्रवार को बिलग्राम नगर के मुख्य चौराहे पर नियम विरुद्ध चल रहे वाहनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की। अभियान के दौरान एक बिना नंबर प्लेट की बाइक पकड़ी गई, जिसके चालक के पास किसी भी प्रकार के वाहन संबंधी कागज़ात मौजूद नहीं थे। ट्रैफिक विभाग के दीवान मुरारी और राजेश सिंह ने बताया कि बाइक में मानक विहीन मॉडीफाइड साइलेंसर लगा था। चालक न तो नंबर प्लेट का पालन कर रहा था और न ही वाहन के दस्तावेज साथ रखे हुए था। बाइक को मौके पर ही सीज कर दिया गया।

8 शिक्षकों को पुरानी पेंशन योजना का लाभ

संवाददाता, उन्नाव

अमृत विचार। माध्यमिक शिक्षा चयन बोर्ड द्वारा जिन शिक्षकों का विज्ञापन 2005 के पहले हुआ था तथा उन्हें कार्यभार 2005 के बाद सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कराया गया है उन शिक्षकों को पुरानी पेंशन योजना का लाभ शासन के निर्देशानुसार दिया गया है। जिले के आठ शिक्षकों के इसके अंतर्गत आने से उन्हें पुरानी पेंशन योजना से अच्छादित किया गया है।

अपर शिक्षा निदेशक माध्यमिक सुरेंद्र तिवारी द्वारा दिए आदेश में कहा गया है कि कार्यालय शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) उप्र प्रयागराज निदेशालय स्तर पर गठित समिति से निर्णय के बाद 8 शिक्षकों को शासनादेश में निहित व्यवस्था के आलोक में पुरानी पेंशन योजना से आच्छादित किया जाता है। पुरानी पेंशन योजना का लाभ पाने वालों में प्रवेश सिंह शिक्षकआदर्श इंटर कालेज पाठकपुर असोहा, दिलबाग सिंह प्रवक्ता एमडीएबीएम इंटर कॉलेज दुबेपुर, महेंद्र बहादुर प्रवक्ता सुभाष इंटर कालेज बांगरमऊ, दिलीप सिंह प्रवक्ता, सुधाकर दत्त शुक्ला शिक्षक, सुल्तान अहमद प्रवक्ता, निर्मल राय प्रवक्ता, गिरीश शुक्ला प्रवक्ता सभी एचएमकेडी इंटर कालेज मोहान को अपर शिक्षा निदेशक माध्यमिक द्वारा पुरानी पेंशन योजना के तहत आच्छादित करने के निर्देश दिए गए हैं।

शिक्षिका ने पूरा किया एसआईआर का कार्य, एसडीएम ने किया सम्मानित

एसआईआर कार्य करतीं शिक्षिका संजू मौर्य।

सफीपुर उन्नाव, अमृत विचार। जिले में इस समय एसआईआर का कार्य प्रगति पर है। इसे देखते हुए यूपी निर्वाचन आयोग ने इसकी समय सीमा 11 दिसम्बर तक बढ़ा दी है। परंतु सफीपुर तहसील क्षेत्र की एक शिक्षिका ने मेहनत व लगन से कार्य करते हुए अपना 100 फीसदी देते हुए अपना कार्य समय से पहले पूर्ण कर दिया। इस पर एसडीएम शिवेंद्र वर्मा ने प्रशस्तिपत्र देकर उसे सम्मानित किया। बता दें कि कन्या प्राथमिक विद्यालय सफीपुर की शिक्षिका संजू मौर्य बूथ संख्या 63 के अंतर्गत उम्मीद राय बाजार व मीर बाजार में मतदाता पुनरिक्षण कार्य के लिए बीएलओ बनी थीं। जिन्होंने अपना 100 फीसदी देते हुए समय सीमा के पहले एसआईआर कार्य पूर्ण कर संपूर्ण कागज जमा कर दिए। इससे एसडीएम सफीपुर ने शिक्षिका को प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया और अन्य बीएलओ को इनसे सीख लेने का संदेश दिया।

मथुरा से आई टीम ने बंदरों को पकड़कर जंगल में छोड़ा

संवाददाता, शाहाबाद, हरदोई

शाहाबाद नगर पालिका द्वारा पकड़े गए बंदर जाल के अंदर।

अमृत विचार। नगर पालिका परिषद द्वारा बंदरों को पकड़ने का कार्य तीव्र गति के साथ चल रहा है। सोमवार को सुबह 7:00 से पूर्वाह्न 11:30 बजे तक बंदरों को पकड़ने का कार्य युद्धस्तर पर मथुरा से आई हुई टीम ने किया।

सोमवार को 60 बंदरों को पकड़ा गया जबकि रविवार को 90 बंदर पकड़े गए थे। इन सभी बंदरो को गोला गोकर्णनाथ के जंगलों में छोड़ दिया गया। शाहाबाद नगर क्षेत्र में बंदरों के बढ़ते हुए आतंक के कारण नगर पालिका परिषद द्वारा एक सराहनीय पहल शुरू की गई है। बंदरों को पकड़ने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। दो दिन से मथुरा से आई बंदर पकड़ने की टीम बंदरों को पकड़ने का कार्य कर रही है। नगर पालिका कर्मचारी रंजीत सिंह की देखरेख में बंदरों को पकड़ने का कार्य किया जा रहा है। 150 बंदर पकड़े जाने के बाद नागरिकों को काफी राहत मिली है।

संदिग्ध हालात में किशोरी की हुई मौत

हरदोई, अमृत विचार। 17 वर्षीय किशोरी की घर के अंदर संदिग्ध हालात में मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस पहुंची तो परिजनों ने फांसी लगा कर आत्महत्या करने की बात कही। टड़ियावां थाने के शंकरपुर मजरा लालपुर भैंसरी निवासी बहादुर की 17 वर्षीय पुत्री रोशनी की रविवार की देर रात घर के अंदर संदिग्ध हालात में मौत हो गई। पुलिस ने रात में ही शव को कब्जे में लिया। सोमवार सुबह रोशनी के घर के तीन लोग ही पोस्टमार्टम हाउस के बाहर खड़े दिखाई दिए। आत्महत्या के बारे में पूछने पर परिजन कुछ नहीं बता सके। वहीं कुछ ग्रामीणों ने किशोरी की मौत में ऑनर किलिंग की भी आशंका जाहिर की है।

बीएसए ने किया स्कूलों का निरीक्षण

संवाददाता, मल्लावां, हरदोई

अमृत विचार। ब्लाक के अलग-अलग विद्यालयों का नवागंतुक बीएसए डॉ अजीत सिंह ने निरीक्षण कर शिक्षा की गुणवत्ता, एमडीएम, अभिलेख और एसआईआर की प्रगति देखी।उन्होनें एसआईआर के प्रति जागरूकता बढ़ाने के निर्देश दिए।

सोमवार को बीएसए डॉ अजीत सिंह ने प्रसिद्ध शिव मंदिर सुनासीर नाथ पहुंचकर पूजन अर्चन किया। उन्होनें खुद के गोद लिए प्राथमिक विद्यालय हीरापुर का निरीक्षण किया। छात्र-छात्राओं से प्रश्न पूछकर विद्यालय के शैक्षिक स्तर का परखा। बीएसए ने विद्यालय की स्वच्छता व एमडीएम के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने कंपोजिट विद्यालय तेजीपुर में प्रधानाध्यापिका ज्योति मिश्रा से विद्यालय के अभिलेख मांगकर देखे। उसके बाद एमडीएम की गुणवत्ता और साफ सफाई देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होनें छात्र छात्राओं की उपस्थिति बढ़ाने तथा प्रांगण को स्वच्छ रखने के निर्देश दिए। उसके बाद गंगारामपुर कन्या पाठशाला ने बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता देखी और बच्चों से नियमित ड्रेस पहनकर आने को कहा। उन्होंने एसआईआर की प्रगति भी परखी। यहां पर मतदाता संख्या 781 के सापेक्ष 512 एसआईआर फॉर्म जमा होने की जानकारी प्राप्त हुई। उन्होनें लोगों में एसआईआर के प्रति जागरूकता बढ़ाने के निर्देश दिए।

माता-पिता प्रथम शिक्षक : सुरेशानंद

सांडी, हरदोई, अमृत विचार। सांडी मुख्यालय से लगभग पाँच किलोमीटर दूर विकास खंड बिलग्राम के ग्राम डाभा में चल रहे पैंतीसवें सतचंडी महायज्ञ महोत्सव में प्रतिदिन भक्ति, यज्ञ, अनुष्ठान और आध्यात्मिक परिवेश का उत्साह देखने को मिल रहा है। बुधवार को आयोजित मुख्य प्रवचन में कनखल, हरिद्वार से पधारे श्री 1008 स्वामी सुरेशानंद सरस्वती जी महाराज कहा कि माता–पिता समाज के प्रथम शिक्षक हैं, और उनका प्रत्येक व्यवहार बच्चे के भविष्य का आधार बनता है। उन्होंने माँ पार्वती और भगवान शिव के दिव्य मिलन का उदाहरण देते हुए कहा कि "यदि माता–पिता का मार्गदर्शन न मिलता तो देवी पार्वती को भी देवों के देव महादेव की अर्धांगिनी बनने का सौभाग्य न मिलता।

जीआईसी मैदान में होगी खेलकूद प्रतियोगिता

उन्नाव, अमृत विचार। विश्व दिव्यांग दिवस पर 3 दिसम्बर को राजकीय इंटर कॉलेज के मैदान में दिव्यांग बच्चों की खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इसका उद्घाटन जिलाधिकारी गौरांग राठी सुबह साढ़े 11 बजे करेंगे। बीएसए शैलेश कुमार पांडे ने बताया कि प्रतियोगिता में तहसील स्तरीय दिव्यांग बच्चों की खेलकूद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट स्थान पाने वाले बच्चे प्रतिभाग कर सकते हैं। इसके साथ जिले में चल रही दिव्यांग संस्थाओं के बच्चे भी प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर सकते हैं। जिला समन्वयक शशि प्रभा श्रीवास्तव ने बताया कि समेकित शिक्षा के तहत परिषदीय विद्यालयों में पढ़ रहे दिव्यांग बच्चों की राज्य परियोजना निदेशक के निर्देश पर यह प्रतियोगिता आयोजित की गई है।

कार्यालय नगर निगम, अल्मोड़ा

पत्रांक : 1521/30-1/नि०नि० 2025-2026/ दिनांकः 01 दिसम्बर, 2025

कोटेशन सूचना

एतद्द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम अल्मोड़ा क्षेत्रान्तर्गत बन्ध्याकरण हेतु बंदरों को पकड़कर वन विभाग के रेस्क्यू सेन्टर तक पहुंचाये जाने हेतु इच्छुक फर्मों/व्यक्तियों के कोटेशन आमन्त्रित किये जाते हैं। कोटेशन की शर्तें एवं विस्तृत जानकारी दिनांक 02.12.2025 से 17.12.2025 तक कार्यालय नगर निगम अल्मोड़ा के वन अनुभाग से तक प्राप्त की जा सकती है। कोटेशनदाताओं द्वारा निर्धारित प्रारूप में आवश्यक दस्तावेजों सहित कोटेशन दिनांक 18.12.2025 को अपरान्ह 1:00 बजे तक कार्यालय नगर निगम अल्मोड़ा में प्रस्तुत किये जा सकेंगे। निर्धारित तिथि व समय के उपरान्त प्राप्त होने वाले कोटेशनों पर विचार नही किया जायेगा। प्राप्त कोटेशन तद्दिनांक को अपराह्न 2:00 बजे उपस्थित कोटेशनदाताओं व नगर आयुक्त नगर निगम अल्मोड़ा तथा मा० महापौर नगर निगम अल्मोड़ा द्वारा प्राधिकृत अधिकारियों के समक्ष के सम्मुख खोले जायेंगे। कोटेशन स्वीकृत / अस्वीकृत करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी को निहित होगा।

नगर आयुक्त, नगर निगम, अल्मोड़ा — महापौर, नगर निगम, अल्मोड़ा

झांसा देकर दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

रामनगर, बाराबंकीः

अमृत विचार। राजस्थान ले जाकर युवती से शादी करने, गर्भपात कराने व मन भर जाने पर बाराबंकी लाकर बस अड्डे पर छोड़ चले जाने की घटना में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। पीड़िता की तहरीर पर आरोपी युवक को नामजद किया गया है।

बताते चलें कि रामनगर थाना क्षेत्र के एक गांव की रहने वाली युवती को गांव का ही रोहित सिंह उसे 26 फरवरी को बहला–फुसलाकर राजस्थान ले गया। गुमशुदगी दर्ज होने पर पुलिस दबाव के चलते रोहित युवती को राजस्थान से वापस रामनगर लेकर आया, जहां कोर्ट में बयान होने के बाद दोनों पति-पत्नी की तरह रहने लगे और पुनः राजस्थान चले गए। तहरीर के अनुसार युवती लगभग तीन माह के गर्भ से थी। रोहित ने अपने भाई भाभी से मिलकर 10 नवंबर को उसे गाजियाबाद ले जाकर उनके कमरे में रखा। फिर 14 नवंबर को बिना उसकी इच्छा एक अस्पताल में जबरन गर्भपात करा दिया। आरोप है कि इसके बाद आरोपी के पिता भी आए और स्पष्ट कहा कि रोहित तुम्हे नहीं रखेगा, तुम कहीं और शादी करो। उसने इनकार किया, तो परिवार के लोगों ने जाति सूचक गालियां व जान से मारने की धमकी दी। युवती के अनुसार, उससे पहले ही धोखे से एक शपथ पत्र भी लिखवा लिया गया था। 20 नवंबर की शाम आरोपी उसे गाजियाबाद से ट्रेन से बाराबंकी लेकर आया और बहाने से गायब हो गया। रोहित वापस आया और न ही फोन पर संपर्क किया।

युवती से की छेड़छाड़ विरोध पर पिता को पीटा

फतेहपुर, बाराबंकी : अमृत विचार। नगर क्षेत्र के एक मोहल्ले में सो रही युवती के साथ छेड़छाड़ करते पकड़े गए युवक ने पिता की पिटाई कर दी और धमकी देते हुए फरार हो गया। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पीड़ित पिता ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार देर रात वह घर के सहन में चारपाई पर सो रहे थे। अचानक आहट होने पर उनकी आंख खुली तो देखा कि उनकी पुत्री की रजाई में घुसकर पड़ोस का युवक राहुल छेड़छाड़ कर रहा है। जब पिता ने उसे पकड़ा तो आरोपी ने गालियां देते हुए लात–घूंसों से हमला कर दिया।

अतिरिक्त कार्यभार के विरोध में सांकेतिक आंदोलन

देवा, बाराबंकी : अमृत विचार। ऑनलाइन हाजिरी प्रणाली और मूल दायित्वों से इतर बढ़ते विभागीय कार्यभार के विरोध में देवा ब्लॉक के सभी ग्राम पंचायत सचिवों ने सोमवार से 5 दिसंबर तक सांकेतिक आंदोलन शुरू कर दिया। पहले दिन सचिव ब्लॉक परिसर में एकत्र हुए और काली पट्टी बांधकर शासन–प्रशासन के प्रति नाराजगी जताई। सचिवों का कहना है कि उन पर अनियमित रूप से अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ थोपे जाने से ग्राम पंचायतों के मूल कार्य प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि मांगें न माने जाने पर आंदोलन को और तेज किया जाएगा। सांकेतिक हड़ताल के समर्थन में ग्राम पंचायत अधिकारी संघ के अध्यक्ष अनुज वर्मा समेत आशीष पटेल, सुमित पांडे, यशवंत सिंह, कुंवर स्वरूप, शैलेंद्र सिंह, नागेंद्र कुमार, नीरज गोंड, श्रीकांत वर्मा, आलोक भास्कर, जुगल किशोर और प्रदीप कुमार सहित कई सचिव मौजूद रहे। इसके अलावा रामनगर में भी पंचायत सचिवों ने काली पट्टी बांधकर सोमवार से विरोध प्रदर्शन शुरू किया। यह विरोध चार दिसंबर तक जारी रहेगा और पांच दिसंबर को जिलाधिकारी के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा।

उत्तर प्रदेश सरकार
लोक निर्माण विभाग

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
Office of Executive Engineer
प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, श्रावस्ती
Provincial Division, P.W.D., Shrawasti

पुलिस लाइन, भिनगा–श्रावस्ती–271831
Police Line, Bhinga-Shrawasti
Phone No. 05250-222961
E-Mail: pdpwdswt2012@gmail.com

पत्रांक : 3 1 4 4 /ई–टेण्डर/2025–26 दिनांक : 20–11–2025

अल्प कालीन ई–निविदा सूचना

1. अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, श्रावस्ती द्वारा महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश की ओर से उ0प्र0 लोक निर्माण विभाग में 'ए', 'बी', 'सी' एवं 'डी' श्रेणी (मार्ग कार्य) के पंजीकृत निविदादाताओं से ई–टेण्डरिंग के माध्यम से जनपद श्रावस्ती के निम्न वर्णन के अनुसार मार्ग मरम्मत हेतु कार्य की निविदा प्रतिशत दरो के आधार पर आमंत्रित की जाती है।

क्र0 सं0	जनपद	कार्य का नाम	कार्य की लागत (रू0 लाख में)	बिड सिक्योरिटी (रू0 लाख में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (समस्त करों सहित रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6	7
विधानसभा क्षेत्र–भिनगा						
1	श्रावस्ती	वित्तीय वर्ष 2025–26 में विन्डोहवा सम्पर्क मार्ग के किमी0–1 में विशेष मरम्मत का कार्य।	13.57	1.36	945.00	02 माह
2	श्रावस्ती	वित्तीय वर्ष 2025–26 में बेचईपुरवा ककराघाट किमी0–18 से पड़री सम्पर्क मार्ग के किमी0–1(550) में विशेष मरम्मत का कार्य।	28.32	2.84	945.00	02 माह

2. ई–प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से निविदायें प्रकाशित होने की तिथि :– दिनांक 05–12–2025 से पूर्व।
3. बिड डाक्यूमेन्ट की उपलब्धता एवं बिड–सबमिट करने का माध्यम–
(क) बिड डाक्यूमेन्ट आन–लाइन दिनांक 05–12–2025 से 20–12–2025 तक उपलब्ध रहेगी, जो आन–लाइन http://etender.up.nic.in पर ही सबमिट किया जायेगा।
(ख) निविदा डालने हेतु निविदादाता को उपरोक्त वेब–साइट पर पंजीकरण कराना अनिवार्य है। निविदायें आन–लाइन डालने हेतु निविदादाता के पास किसी डिजिटेल सिग्नेचर सार्टिफिकेट सर्टिफाइंग अथोरिटी द्वारा जारी डिजिटेल सिग्नेचर सार्टिफिकेट होना अनिवार्य है।
(ग) ई–प्रोक्योरमेण्ट के माध्यम से निविदायें डालने की अन्तिम तिथि 20–12–2025 पूर्वान्ह 12.00 बजे तक एवं टेकनिकल क्वालिफिकेशन पार्ट–1 दिनांक 20–12–2025 अपराह्न 12.30 बजे से कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, श्रावस्ती में खोला जायेगा। विस्तृत विवरण http://etender.up.nic.in देखा जा सकता है।
(घ) निविदादाता को निविदा प्रपत्र मूल्य एवं बिड सिक्योरिटी धनराशि up e-tender portal पर इन्टरनेट बैंकिंग के माध्यम से आन लाइन जमा करना होगा।
(ङ) शासनादेश संख्या 14/2020/879/तेइस–7–2020–176(सा0)/06 दिनांक 25–08–2020 में दिये गये दिशा–निर्देशों के अनुसार निविदा सम्बन्धी समस्त कार्यवाही प्रहरी के माध्यम से की जायेगी।

UP – 241656 दिनांक: 28/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

(कीर्ति प्रभाकर मिश्र)
अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, श्रावस्ती

आयोजन — श्री संकट मोचन हनुमान धाम मंदिर में 101 वर्ष पुरानी रामलीला संपन्न

सीता स्वयंवर लीला का मंचन कर कलाकारों ने मोहा दर्शकों का मन

लीला का मंचन करते कलाकार। अमृत विचार

सफीपुर उन्नाव, अमृत विचार। विकासखंड क्षेत्र के सराय सकहन गांव स्थित प्राचीन श्री संकट मोचन हनुमान धाम मंदिर में चल रही 101 वर्ष पुरानी रामलीला इस वर्ष भी धनुष भंग लीला के आयोजन के साथ संपन्न हुई। इसमें जनक दरबार, रावण बाणासुर संवाद, जनक विलाप, धनुष भंग व सीता स्वयंवर लीला का कलाकारों ने मनोहारी अभिनय कर सब का मन मोह लिया।

मंदिर के पुजारी श्रीकांत पांडेय ने बताया कि परंपरा के अनुसार अगहन मास के शुक्ल पक्ष के अंतिम शुक्रवार को रामचरित मानस पाठ के साथ लीला का मंचन होता है। क्षेत्र की यह सबसे पुरानी लीला है। इसकी शुरुआत राम लक्ष्मण की आरती के साथ की गई। इसके बाद राजा जनक दरबार, धनुष स्थापना, रावण–बाणासुर संवाद, जनक विलाप व प्रभू श्रीराम द्वारा धनुष खंडन के बाद सीता स्वयंवर लीला की प्रस्तुती दी गई। परशुराम–लक्ष्मण संवाद का मंचन देख श्रद्धालुओं ने जयघोष कर वातावरण भक्तिमय कर दिया। रामलीला मंडल अध्यक्ष अमित शुक्ला द्वारा उत्कृष्ट पात्र चयन व कुशल आयोजन की क्षेत्र में सराहना हुई।

अमृत विचार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना
सूचित हो कि पहले मेरा नाम RAJESH KUMAR SINGH था से बदलकर RAJESH SINGH रख लिया है। अब मुझे RAJESH SINGH के नाम से जाना व पहचाना जाये। S/0-LURKHUR SINGH ADD-VILL-MAHUWAR BASGITIYA POST-KASARA, DIST-MAU-275102 (U.P.)

सूचना
सूचित हो कि मैं **प्रियंका पुत्री शिव शंकर निवासी ग्राम लालपुर परगना अमसिन पोस्ट लालपुर तहसील जनपद अयोध्या** , मेरा डी0 एल0 एड0 प्रथम सेमेस्टर अनुक्रमांक 1815902695 वर्ष 2019 का अंकपत्र वास्तव में कही खो गया है।

सूचना
मैने अपना नाम MIRZA ANWAR ALI BEIG से बदलकर ANWAR ALI BEIG रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। S-0-LATE MIRZA QAMAR ALI BEG ADD-542-PN250C KISHORE VIHAR CAMPWELL ROAD POST-CHOWK DIST-LUCKNOW

सूचना
सूचित किया जाता है कि मैं MOHD NAIEEM से MOHD NAIM रख लिया है अब भविष्य में मुझे मेरे बदले हुए नाम से जाना वह पहचान जाए। S /O MO HABEEB, निवासी कटरा रोशनलाल दरियाबाद, जिला–बाराबंकी का रहने वाला हूं

अमृत विचार

लखनऊ, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

हरदोई

न्यूज ब्रीफ

मामूली विवाद में डंडे व फावड़े से किया घायल

सांडी, हरदोई, अमृत विचार। थाना क्षेत्र के गांव में मामूली विवाद में चार लोगों ने लाठी-डंडा और फावड़ा से लैस होकर दो लोगों पर हमला बोल दिया। पुलिस ने घायलों को डाक्टरी परीक्षण के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा। जहां से दोनों को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। थाना क्षेत्र के कई मऊ गांव निवासी अनवर खान पर रंजिश को लेकर गांव निवासी उस्मान खान, हसन्ने खान और तालिब ने हमला कर दिया। बचाने दौड़े मेराज को भी पीट दिया। गंभीर रूप से घायल दोनों का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है, पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर जांच कर रही है।

सरदापुर के पूर्व प्रधान समेत चार पर रिपोर्ट

टड़ियावां, हरदोई, अमृत विचार। थाने के गांव सरदापुर के टीपू मिश्रा ने पूर्व प्रधान समेत चार लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कराई है। आरोप लगाया है कि 29 नवंबर की शाम उसके पिता भगवान शरण घर के बाहर बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे। उसी बीच आरोपी पूर्व प्रधान कमलेश अवस्थी और सहयोगी फुलारी, संजय और इशाक के साथ मिलकर पीड़ित और उसके परिवार को गाली गलौज करते हुए हमला कर दिया। थाना प्रभारी कुलदीप सिंह ने बताया कि पूर्व प्रधान समेत चार लोगों पर रिपोर्ट दर्ज की गई है।

घर का ताला तोड़कर जेवरात व नकदी चोरी

बिलग्राम, हरदोई, अमृत विचार। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम जरौली कला में घर का ताला तोड़कर जेवरात और नकदी चोरी हो गई। पीड़िता निशा बानो पत्नी रमज़ान ने विपक्षी श्रीकृष्ण पर चोरी का आरोप लगाते हुए कोतवाली बिलग्राम में तहरीर दी है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। तहरीर के अनुसार 28 नवंबर को विपक्षी उसके घर के आसपास देखे गए थे। सुबह लगभग 6 बजे जब वह जगी तो कमरे का ताला टूटा हुआ मिला।

हरदोई के व्यवसायी के बेटे की आगरा में सड़क दुर्घटना में मौत

एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा था युवक, परिवार में मचा कोहराम

संवाददाता, हरदोई

फोटो तनिष्क की फाइल फोटो।

अमृत विचार। आगरा में हुए सड़क हादसे में हरदोई शहर के व्यवसायी के बेटे की मौत हो गई। व्यवसायी का बेटा एमबीबीएस की पढ़ाई लगभग पूरी कर चुका था। हादसा रविवार को उस वक्त हुआ जब छात्र अपने के साथ बाइक से जा रहा था। उसी बीच तेज़ रफ्तार की चपेट में आई उसकी बाइक डिवाइडर पर चढ़ गई। सिर में गहरी चोट पहुंचने से दोनों की मौत हो गई। इसकी खबर हरददोई पहुंचे ही व्यवसायी के परिवार में कोहराम मच गया।

शहर के आवास विकास कॉलोनी सी-489 निवासी अरविंद गुप्ता ईंट-भट्ठे के अलावा टायर व्यवसायी हैं। उनकी दो बेटियों में शिल्पी की लखनऊ में शादी हो चुकी है, उससे छोटी डा.तृप्ति गुप्ता लखनऊ में है। दो बेटों में बड़ा शिवा गुप्ता पेशे से शिक्षक है और सबसे छोटा तनिष्क गुप्ता आगरा के एसएन मेडिकल कालेज एमबीबीएस कर रहा था। तनिष्क का पढ़ाई का आखिरी साल चल रहा था।

रविवार की शाम तनिष्क आगरा में साथ में एमबीबीएस कर रहे अपने दोस्त सिद्ध के साथ बाइक से कहीं जा रहा था। उसी बीच हरी पर्वत थाने के आईएसबीटी इलाके में तेज़ रफ्तार की चपेट में आने से उसकी बाइक डिवाइडर पर चढ़ी और दोनों डिवाइडर से टकराते हुए दूर जा गिरे। बताया गया कि काफी देर तक दोनों वहीं पड़े तड़पते रहे। बाद में जब उन्हे एसएन मेडिकल कालेज पहुंचाया गया, लेकिन उससे पहले उनकी मौत हो गई। इधर 4 दिसंबर को तनिष्क के चचेरे भाई आयुष की शादी थी। वह 3 दिसंबर को घर आने वाला था, और परिजन उसका बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। लेकिन उसी बीच हुए हादसे ने सारा कुछ खत्म कर दिया।

मुक्तिधाम में किया गया अंतिम संस्कार

एमबीबीएस के छात्र तनिष्क गुप्ता का शव सोमवार को हरदोई लाया गया। शहर के मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान सैकड़ों की भीड़ में शहर के जाने-माने व्यवसायी, डाक्टरी पेशे से जुड़े लोगों के अलावा नाते-रिश्तेदार शामिल हुए। तनिष्क की अंतिम यात्रा का आखिरी पड़ाव मुक्तिधाम में हुआ। होनहार युवा की मौत से अंतिम संस्कार में शामिल हर कोई निराश दिखा।

कार की टक्कर से युवक की मौत, बोनट में फंसा शव

हरदोई, अमृत विचार। खेत से लौट रहा युवक जैसे ही हाईवे पर पहुंचा। उसी बीच तेज़ रफ्तार कार की टक्कर से उसकी मौत हो गई। हैरत इस बात की है कि शव कार में फंस गया और कार उसे साथ ले कर दूर तक दौड़ी चली गई। पुलिस का कहना है कि शव का पोस्टमार्टम कराया गया। साथ ही कार की पहचान की जा रही है।

सुरसा थाने के कराही निवासी 30 वर्षीय विपिन पुत्र जदुनाथ पेशे से किसान था। रविवार को वह अपने खेत पर गया था। शाम को वापस लौटते समय गांव के सामने से निकले हाईवे पर तेज़ रफ्तार कार ने उसे ज़ोरदार टक्कर मारी। जिससे उसकी वहीं मौत हो गई। युवक का शव उसी कार में फंस गया। हादसे होते हुए देख आसपास मौजूद लोग शोर करते हुए दौड़े तो कार चालक ने रफ्तार बढ़ा दी और शव को बोनट में फंसाकर दूर तक चला गया। आगे जाकर शव कार से छूट गया। पुलिस ने शव को कब्ज़े में लेते हुए जांच शुरू कर दी है। विपिन के परिवार में उसकी पत्नी संतोषी देवी के अलावा तीन बेटियां शालू, शाल्वी, शालिनी और दो बेटे विपनेश व केशव हैं।

बेटी की डोली उठने से कुछ घंटे पहले पिता की हुई मौत

संवाददाता, सुरसा, हरदोई

गयाप्रसाद की फाइल फोटो।

- 27 नवंबर को विवाह का न्यौता बांटते समय सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए थे

अमृत विचार। बेटी की शादी का न्यौता बांटने निकला अधेड़ सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गया था। जिसे मेडिकल कालेज से लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया। सोमवार को बेटी की बारात आनी थी। लेकिन उससे कुछ घंटे पहले ही रविवार की रात उसकी लखनऊ में मौत हो गई।

सुरसा थाने के जगत पुरवा मजरा खजुरहरा निवासी 50 वर्षीय गया प्रसाद ने अपनी बेटी की शादी हरपालपुर थाने के देहलिया गांव के शिवम के साथ तय थी। गोदभराई और तिलक होने के बाद 1 दिसंबर (मंगलवार) को बारात आनी थी। गया प्रसाद अपने बेटे लाल बिहारी के साथ बाइक से नाते-रिश्तेदारों को न्यौता बांटने निकला था। बताते है कि 27 नवंबर को वापस लौट रहा था। रास्ते में गांव के पास अशोखर पुलिया के पास तेज़ रफ्तार वाहन ने पीछे से ओवर टेक करते समय गयाप्रसाद को टक्कर मार दी थी। सड़क पर गिरने से वह बुरी तरह घायल हो गया। उसे मेडिकल कालेज पहुंचाया गया, जहां से लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया। इधर घर में शादी की रस्में चल रहीं थीं। रविवार की रात गयाप्रसाद की मौत हो गई। जिस दिन घर से बेटी की डोली निकलती, उसी दिन पिता की अर्थी निकलती देख हर कोई रो पड़ा।

घर में बिजली का तार जोड़ रहे युवक की करंट से मौत

संवाददाता, हरदोई

अमृत विचार। बिजली चली जाने पर युवक तार जोड़ रहा था, उसी बीच अचानक बिजली आते ही वह चिपक गया, घर वाले कुछ सोंचते, उससे पहले ही उसकी वहीं पर दर्दनाक मौत हो गई। पुलिस ने शव कब्ज़े में लेते हुए उसका पोस्टमार्टम कराया है।

अरवल थाने के पंचम पुरवा मजरा बेहटा हरी निवासी राजाराम का 25 वर्षीय पुत्र श्यामू खेती-बाड़ी में हाथ बंटाता था। रविवार की दोपहर बिजली का टूट गया, उसी बीच बिजली भी चली गई। श्यामू वही तार जोड़ रहा था, तभी अचानक बिजली आ गई और तार श्यामू के हाथ में चिपक गया। इसका पता होते ही घर वाले कुछ सोंच कर आगे बढ़ते, लेकिन उसी बीच श्यामू की दर्दनाक मौत हो गई। अचानक हुए हादसे से घर में कोहराम बरपा हो गया। शोर सुन कर आस-पड़ैसी दौड़ पड़े। वहां पहुंची पुलिस ने शव कब्ज़े में लेते हुए जांच शुरु कर दी है। श्यामू की शादी नहीं हुई थी, तीन भाइयो में सबसे बड़ा छविराम और सबसे छोटा रामू है। हादसे में बेटे की मौत से मां राजवती का रो-रो कर बुरा हाल हो गया है।

एएसपी ने कोतवाली का किया निरीक्षण

मल्लावां, हरदोई, अमृत विचार। मल्लावां कोतवाली का अपर पुलिस अधीक्षक सुबोध गौतम ने अर्द्धवार्षिक निरीक्षण कर कार्यालय, बैरक, मालखाना और अभिलेखों के रख रखाव देखा और जनसुनवाई के निस्तारण में प्रगति को लेकर निर्देशित किया। सोमवार को अपर पुलिस अधीक्षक ने थाने का निरीक्षण के दौरान शास्त्रों के रख रखाव को परखा और कांस्टेबल परशुराम, विजेंद्र फ़ौजी से दंगे के समय रायफल से फायर कैसे की जाती तो कांस्टेबलों ने जवाब देते हुए कहा कि दंगे के वक्त हवाई फायरिंग की जाती है। परिसर की साफ-सफाई को लेकर संतोष व्यक्त किया। महिला डेस्क पर आने वाली शिकायतों के निस्तारण की जानकारी ली।

हादसे के बाद पहला एक घंटा होता है महत्वपूर्ण

संवाददाता, हरदोई

यातायात नियमों के प्रति जागरूक करते एसपी अशोक कुमार मीणा। अमृत विचार

- यातायात माह के समापन पर एसपी ने गोल्डन ऑवर का बताया महत्व
- सड़क हादसों में घायलों के मददगारों को किया सम्मानित

अमृत विचार। नवंबर माह को यातायात जागरूकता के रूप में मनाया गया। जिसका समापन सोमवार को एक विशेष कार्यक्रम के साथ किया गया। कार्यक्रम के दौरान सड़क दुर्घटनाओं में घायल व्यक्तियों को समय रहते अस्पताल पहुंचाकर उनकी जान बचाने वाले आठ जागरूक नागरिकों को पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा ने सम्मानित किया। इन सभी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पुलिस विभाग की ओर से सराहना व्यक्त की गई। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि सड़क हादसों में 'गोल्डन आवर बेहद महत्वपूर्ण होता है। दुर्घटना होने के बाद शुरुआती एक घंटे के भीतर घायल को अस्पताल पहुंचाना अक्सर उसकी जान बचाने में निर्णायक साबित होता है। ऐसे में जो लोग मानवता को प्राथमिकता देते हुए घायलों की मदद करते हैं, वे समाज के लिए प्रेरणा बनते हैं। कहा कि इन आठ लोगों ने बिना किसी स्वार्थ के मानवीय संवेदनाओं का परिचय देकर बड़ा कार्य किया है, इसलिए पुलिस विभाग उन्हें सम्मानित कर गर्व महसूस कर रहा है। एआरटीओ विभाग ने भी इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। एसपी ने बताया कि 1 नवंबर से 30 नवंबर तक पूरे जिले में यातायात माह मनाया गया, जिसके अंतर्गत सड़क सुरक्षा से जुड़े कई कार्यक्रम किए गए। एआरटीओ विभाग ने भी इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। स्कूलों, कॉलेजों और सार्वजनिक स्थानों पर लोगों को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के लिए जागरूक किया गया। हेलमेट और सीटबेल्ट के महत्व को समझाने के लिए विशेष अभियान चलाए गए और कार्रवाई भी हुई।

प्रतिरोधक क्षमता कमजोर कर देता है एड्स

संवाददाता, हरदोई

रैली को हरी झण्डी दिखातीं सीडीओ सान्या छाबड़ा। अमृत विचार

- विश्व एड्स दिवस पर जिले में हुए विविध आयोजन

अमृत विचार। विश्व एड्स दिवस के तहत सोमवार को कलेक्ट्रेट में मुख्य विकास अधिकारी सान्या छाबड़ा ने हरी झंडी दिखाकर जागरूकता रैली को रवाना किया। रैली में आरआर इंटर कॉलेज व सीएस नेहरू डिग्री कालेज के एनसीसी कैडटो ने प्रतिभाग किया। यह दिवस 'बाधाएं दरकिनार, एच.आई.वी पर सशक्त प्रहार' थीम के साथ मनाया गया।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. भावनाथ ने बताया कि एड्स यानी एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएंसी सिंड्रोम (एड्स) ऐसी बीमारी है जो व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर करती है जिसके कारण वह अन्य किसी भी बीमारी की गिरफ्त में आसानी से आ जाता है। एड्स जिस वायरस से होता है उसे ह्यूमन इम्यूनो डेफिशिएंसी वायरस (एचआईवी)कहते हैं। यह वायरस व्यक्ति की प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर देता है। जिला अस्पताल में स्थित इन्टीग्रेटड काउंसलिंग एंड टेस्टिंग सेंटर में एचआईवी की जांच निःशुल्क की जाती हैं।

मेडिकल कॉलेज के सभागार में विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में शिविर का आयोजन किया गया। अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भूपेन्द्र प्रताप ने एड्स अधिनियम के विषय में जानकारी दी। डॉ. नोमान उल्ला द्वारा एड्स के लक्षण व उससे बचने के उपाय बताये। शिविर में सीएमएस डॉ चन्द्र कुमार, विधिक सेवा व स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

जनपद में कुल 538 एचआईवी पॉजिटिव

नोडल अधिकारी डॉ. नौमानउल्लाह ने बताया वर्तमान में जनपद में कुल 538 एचआईवी पॉजिटिव हैं, जिसमें 369 पुरुष और 169 महिलाएं हैं। इस वित्तीय वर्ष में 5400 लोगों की एचआईवी की जांच कराई गई है जिसमें 3316 पुरुष और 2084 महिलायें हैं। कुल 52 लोग एचआईवी पॉजिटिव पाए गए हैं। एचआईवी पॉजिटिव पाए गए लोगों में से 32 पुरुष और 20 महिला हैं।

शौच के लिए निकला किशोर तालाब में डूबा

कछौना, हरदोई, अमृत विचार। थाना क्षेत्र के समसपुर में सोमवार की सुबह किशोर शौच के लिए निकला था। काफी देर तक जब वापस नहीं आया तो खोजबीन शुरू हुई। उसका शव तालाब में पड़ा पाया गया। मृतक किशोर की दादी रामश्री के अनुसार लवकुश (15) पुत्र स्व. श्रीकृष्ण सुबह घर से लगभग 8 बजे शौच के लिए निकला था। घर से लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित तालाब पर गया था। काफ़ी देर बाद खोजबीन करने पर उसका शव तालाब में उतराता मिला। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर कार्यवाही में जुट गई। कुछ वर्ष पहले लवकुश के माता-पिता की मौत हो चुकी थी। लवकुश तीन बहन व दो भाइयों में से बड़ा था, अपनी दादी के साथ रहेता था।

बीएलओ की पत्नी ने लगाई फांसी, मौत

संवाददाता, हरदोई

एकता यादव की फाइल फोटो।

- एसआईआर कार्य के चलते पति के दिन-रात तनाव में रहने से परेशान थी महिला

अमृत विचार। बीएलओ की पत्नी को उसके रात-दिन का तनाव नहीं देखा गया और उसने कमरा बंद कर आत्महत्या कर ली। मां को खोजते हुए उसकी 12 साल की बेटी मकान के ऊपर कमरे पर पहुंची तो दरवाज़ा अंदर से बंद मिला। बेटी के रोने की आवाज पर घर के लोग मौके पर पहुंचे। कमरे का दरवाजा तोड़कर अंदर देखा गया तो वहां महिला का शव फंदे से लटका मिला। पुलिस ने शव कब्ज़े में लेते हुए जांच शुरू कर दी है।

कोतवाली शहर के पिहानी चुंगी सिविल लाइन निवासी अजय यादव टड़ियावां ब्लाक के उच्च प्राथमिक विद्यालय सढ़िला में शिक्षक हैं और बीएलओ की ड्यूटी कर रहे हैं। बताया गया कि इन दिनों अजय यादव एसआईआर फार्म को लेकर काफी तनाव में थे। अजय की पत्नी एकता यादव (40) पति के रात-दिन के तनाव को लेकर परेशान थी। सोमवार को अजय ड्यूटी पर चला गया। उसकी 12 साल की बेटी सृष्टि स्कूल चली गई। दोपहर में सृष्टि जब स्कूल से घर पहुंची तो वह मां को पुकारते हुए खोजने लगी। उसके बाद वह ऊपर कमरे में देखने गई। लेकिन वहां अंदर से दरवाज़ा बंद होने पर वह रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुनकर घर वाले दौड़े। कमरे में झांककर देखा तो एकता यादव का शव फांसी पर लटक रहा था। दरवाज़ा तोड़कर उसे बाहर निकाल कर मेडिकल कालेज पहुंचाया गया, लेकिन उसकी मौत हो चुकी थी।

एकता का मायका शहर के राधा नगर मोहल्ले में था। सूचना मिलने पर एकता यादव का बड़ा भाई अरविंद मौके पर पहुंचा। कहा जा रहा है कि पति के तनाव में रहने से परेशान होकर एकता यादव ने ऐसा कदम उठाया। एकता यादव भी शिक्षक पात्रता परीक्षा (टेट) कर चुकी थी, लेकिन उसे नौकरी नहीं मिली थी। साथ ही उसके गर्भाशयमें गांठ होने का इलाज भी चल रहा था। पुलिस का कहना है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद ही आगे कुछ कहा जा सकता है।

बाइक की टक्कर से महिला घायल अस्पताल में भर्ती कराया गया

शाहाबाद, हरदोई, अमृत विचार। मंझिला थाना क्षेत्र के फत्तेपुर गाजी मार्ग पर सोमवार को शाम एक तेज रफ्तार बाइक ने जानवर बांधकर वापस अपने घर आ रही महिला के टक्कर मार दी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई।

घायल अवस्था में महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसका इलाज चल रहा है। मंझिला थाना क्षेत्र के फत्तेपुर गाजी गांव की रहने वाली गीता पत्नी जगन्नाथ अपने जानवर बांधने गई थी। वापस आते समय गाजीपुर सुनौरा के बीच में तेज रफ्तार बाइक सवार दिनेश चंद्र निवासी ग्राम सुनोरा ने टक्कर मार दी। बाइक पर तीन लोग बैठे हुए थे । टक्कर लगने के बाद महिला गंभीर रूप से घायल हो गयी। घायल महिला को अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसका इलाज चल रहा है।

ईओ ने घटिया नाला निर्माण कार्य रुकवाया, दी चेतावनी

पिहानी, हरदोई, अमृत विचार। नगर पालिका परिषद पिहानी के अधिशासी अधिकारी (ईओ) अमित कुमार ने कस्बे के करावां रोड पर चल रहे नाला निर्माण कार्य में घटिया सामग्री के इस्तेमाल की शिकायत मिलने के बाद सोमवार को मौके पर जाकर निरीक्षण किया। बताया गया है कि इस निर्माण कार्य में गुणवत्ता संबंधी अनियमितताओं की खबर चलने के तुरंत बाद ईओ अमित कुमार ने त्वरित कार्रवाई करते हुए निर्माण स्थल का दौरा किया। निरीक्षण के दौरान, कार्य की गुणवत्ता संतोषजनक न पाए जाने पर उन्होंने तत्काल प्रभाव से कार्य को रुकवा दिया।अधिशासी अधिकारी अमित कुमार ने ठेकेदार और कर्मचारियों को कड़ी हिदायत दी है। उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि घटिया निर्माण कार्य किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कार्य की गुणवत्ता में सुधार नहीं किया गया या मानकों का उल्लंघन पाया गया, तो संबंधित व्यक्ति के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। ईओ के इस औचक निरीक्षण और सख्त रुख से घटिया निर्माण कर रहे तत्वों में हड़कंप मच गया है।

निर्माणाधीन नाले का निरीक्षण करते अधिशासी अधिकारी। अमृत विचार

अब पुलिस चौकियों पर भी की जाएगी जनसुनवाई : सीओ

शाहाबाद, हरदोई, अमृत विचार। सर्किल के अंदर की पुलिस चौकियों पर भी जन सुनवाई की जाएगी। पीड़ितों को अपनी समस्या बताने के लिए अब थाने जाने की जरूरत पड़ेगी। सहायक पुलिस अधीक्षक/सीओ आलोक राज नारायण ने पत्रकारों को बताया कि पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के निर्देश पर सर्किल क्षेत्र में जल्द ही ग्राम चौपाल लगाकर जनता से संवाद स्थापित किया जाएगा। जिसमें सीओ, प्रभारी निरीक्षक, बीट प्रभारी, अक्षेत्रीय पुलिस, चौकीदार, ग्राम प्रधान और संभ्रांत नागरिक के अलावा आम जनता उपस्थित रहेगी। ग्राम चौपाल में चर्चा कर अपराध की रोकथाम के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएंगे। सरकार द्वारा चलाए जा रहे मिशन शक्ति फेज 5 के लिए गांव की महिलाओं और बच्चों को जागरूक किया जाएगा।

आयोजन

बहुभाषाविद साहित्यकार डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र की जयन्ती पर सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

सुधा मिश्र को डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र साहित्य सम्मान

संवाददाता, हरदोई

साहित्यकारों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि न्यायाधीश अविनाश पाण्डेय, विशेष जज, सीबीआई, पटना। अमृत विचार

अमृत विचार। श्री सरस्वती सदन सेवा समिति के तत्वावधान में बहुभाषाविद साहित्यकार डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, पूर्व निदेशक-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना की जयन्ती पर सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में न्यायाधीश अविनाश पाण्डेय, विशेष जज, सीबीआई, पटना मौजूद रहे। कार्यक्रम में जनपद के रचनाकारों और हिन्दी-संस्कृत की नवोदित प्रतिभाओं को मुख्य अतिथि ने सम्मानित किया। साथ ही कवयित्री सुधा मिश्र की काव्यकृति 'भाव वेणु' का विमोचन किया। वक्ताओं ने राष्ट्रभाषा के संवर्धन के लिये सदन की रचनात्मक गतिविधियों को सराहा।

दीप प्रज्ज्वलन और मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के बाद कवयित्री पल्लवी मिश्र की वाणी वन्दना से समारोह शुरू हुआ। मुख्य अतिथि ने प्रशासनिक अधिकारी रहे और वरिष्ठ साहित्यकार ब्रजराज सिंह तोमर को मिश्रबन्धु साहित्य सम्मान से सम्मानित किया। साथ ही काव्यकृति 'भाव वेणु' की रचनाकार सुधा मिश्र को डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र साहित्य सम्मान से अलंकृत किया। सीएसएन महाविद्यालय, स्नात्तकोत्तर हिन्दी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्रा अंजलि सिंह और स्नातकोत्तर संस्कृत में सर्वाधिक अंक प्राप्त छात्रा गीता दुबे को डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र प्रतिभा सम्मान से पुरस्कृत किया गया। नवोदित कवयित्री पल्लवी मिश्र व कंचन मिश्र को अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। मुख्य वक्ता कवि एवं समीक्षक अरुणेश मिश्र ने अपने विचार रखे। सदन अध्यक्ष एवं कवि श्रवण कुमार मिश्र ने अध्यक्षता की और मन्त्री मनीष कुमार मिश्र ने स्वागत किया।

ऑनलाइन हाजिरी का किया विरोध

संवाददाता, शाहाबाद, हरदोई

खंड विकास अधिकारी को ज्ञापन देते ग्राम पंचायत सचिव। अमृत विचार

- बांह पर काली पट्टी बांध कर किया काम, बीडीओ सौंपा ज्ञापन

अमृत विचार। शाहाबाद विकासखंड कार्यालय परिसर में सोमवार को सचिवों ने काली पट्टी बांधकर ऑनलाइन उपस्थिति व गैर विभागीय कार्यों के विरोध में शांतिपूर्ण सत्याग्रह किया। ग्राम पंचायत अधिकारी मोहित पाठक ने बताया ग्राम पंचायत अधिकारी संघ उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष डा. प्रदीप कुमार सिंह के निर्देश पर यूपी के 826 विकास खंडों में तैनात सभी सचिवों को ऑनलाइन उपस्थिति व सचिवों से कराये जा रहे जा रहे गैर विभागीय कार्यों के विरोध में 1 दिसंबर से 15 दिसंबर तक सांकेतिक शांतिपूर्ण सत्याग्रह आन्दोलन किया जायेगा। जिसमें 1 दिसंबर से 4 दिसंबर को सभी सचिव अपने निजी वाहनों का प्रयोग बन्द करके भत्ते के अनुसार वाहन का प्रयोग करेंगे। वहीं 15 दिसंबर को सभी सचिव भुगतान डोंगल विकास खंड कार्यालय में सहायक विकास अधिकारी को सौंप देंगे। अगर इसके बाद भी मांगे ना पूरी हुई तो अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन करेंगे।

न्यूज ब्रीफ

गैंगस्टर एक्ट में दो वांछित गिरफ्तार

बाराबंकी, अमृत विचार : थाना जैदपुर पुलिस टीम द्वारा गैंगस्टर एक्ट में वांछित 2 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस टीम द्वारा मैनुअल इंटेलीजेन्स के आधार पर गैंगस्टर एक्ट में वांछित अनवर अली पुत्र अदालत निवासी धौरहरा उर्फ धरमपुर बढ़नी थाना भवानीगंज जनपद सिद्धार्थनगर हालपता अनवार कला थाना बीबीडी लखनऊ व अमित रावत पुत्र सरवन निवासी गोठिया थाना जैदपुर को तेजवापुर नहर के पास से गिरफ्तार किया गया।

रेलवे क्रॉसिंग बंद होने से लगा भीषण जाम

रामनगर, बाराबंकी : सोमवार शाम केसरीपुर रेलवे क्रॉसिंग पर गेट बंद करके मालगाड़ी से नई रेलवे लाइन पर गिट्टी डालने के दौरान लगभग 1 घंटे तक आवागमन बाधित रहा। इससे क्रॉसिंग के दोनों ओर लंबी वाहनों की कतारें लग गईं और लोग परेशान हुए। रेलवे पटरी के चौड़ीकरण के कार्य के चलते यह बाधा उत्पन्न हुई। महादेवा मार्ग और हाइवे से गुजरने वाले वाहन जाम में फंस गए।

मोबाइल शॉप का किया गया उद्घाटन

हैदरगढ़, बाराबंकी : रामेश्वरम शिवाला मार्ग पर नवज्योति प्रतिष्ठान के निकट नई मोबाइल शॉप का उद्घाटन चेयरमैन आलोक तिवारी व सेवानिवृत्त बीएसएनएल कर्मी सुहेल अहमद ने फीता काटकर किया। चेयरमैन ने कहा कि शॉप खुलने से लोगों को अत्याधुनिक मोबाइल टेक्नोलॉजी की सुविधाएं उपलब्ध होंगी और यह लोगों को जुड़े रहने में मदद करेगी। दुकान संचालक शादाब अहमद ने चेयरमैन और अतिथियों को श्री राम का मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

ओटीएस को लेकर उत्साह उमड़ी भीड़, लाखों वसूले

जिले भर में लगाए गए शिविर, आला अफसरों ने किया भ्रमण

- दस लाख रुपये से अधिक की हुई वसूली, अधिकारी उत्साहित

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

कैंप का निरीक्षण करतीं अधीक्षण अभियंता राजबाला। अमृत विचार

अमृत विचार: एकमुश्त समाधान व बिजली बिल राहत योजना के प्रति सोमवार बकायेदार उपभोक्ताओं ने खासी दिलचस्पी दिखाई। सोमवार से शुरु इस विशेष अभियान के पहले ही दिन जिला मुख्यालय समेत रामसनेहीघाट, रामनगर, मसौली और देवा व अन्य उपखंडों में लगे कैंपों पर बड़ी संख्या में उपभोक्ता पहुंचे। विभागीय अफसरों ने स्वयं कैंपों का निरीक्षण किया और उपभोक्ताओं की समस्याओं का मौके पर निस्तारण कराया। कई स्थानों पर नेटवर्क बाधा के बावजूद उपभोक्ताओं का उत्साह कम नहीं हुआ। पहले ही दिन दस लाख से अधिक की वसूली हुई।

रामसनेहीघाट में वितरण खंड में पहले दिन 20 शिविरों पर भारी भीड़ रही। 70 उपभोक्ताओं के पंजीकरण के साथ विभाग ने 5 लाख रुपये से अधिक की वसूली की। दिसंबर में पंजीकरण कराने वालों को सरचार्ज पूरी तरह माफ किया जा रहा है, जबकि बकाये के मूल धन पर 25% छूट मिलेगी।

खंड में 1.10 लाख उपभोक्ताओं पर 60 करोड़ का बकाया है, जिसे देखते हुए अभियान मिशन मोड में चलाया जा रहा है। अधिशासी अभियंता विमलेश ने कहा कि विभाग उपभोक्ताओं के प्रति संवेदनशील है। हमारा लक्ष्य सिर्फ वसूली नहीं, बल्कि हर उपभोक्ता को राहत देना है। ये योजना उनके लिए बड़ा अवसर है। हर एक व्यक्ति की समस्या सुनकर मौके पर समाधान किया जा रहा है। रामनगर में सोमवार को कादिराबाद मोहल्ले में लगे कैंप में उपभोक्ताओं ने 70 हजार रुपये जमा किए और 18 ओटीएस आवेदन किए। पावर कारपोरेशन के तकनीकी डायरेक्टर हरीश बंसल ने कैंप का निरीक्षण किया। उपभोक्ताओं ने हर महीने मीटर रीडिंग न होने व गलत बिल आने की समस्या प्रमुखता से उठाई, जिस पर एसडीओ संजय कुमार ने आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

मसौली क्षेत्र में मध्यांचल विद्युत वितरण निगम की एसई राजबाला ने कैंपों का निरीक्षण किया और गति बढ़ाने के निर्देश दिए। नेटवर्क समस्या के कारण दोपहर 2 बजे तक काम बाधित रहा, लेकिन बाद में सामान्य होने पर सीएससी केंद्रों पर भीड़ उमड़ पड़ी। बड़ागांव केंद्र पर 65 पंजीकरण हुए और कुल 5.90 लाख रुपये की जमा राशि प्राप्त हुई।

देवा उपखंड क्षेत्र में कुल आठ स्थानों पर समाधान कैंप लगाए गए। लगभग 44,600 पंजीकृत उपभोक्ताओं पर करीब 20 करोड़ रुपये का बकाया है। पहले ही दिन 350 से अधिक उपभोक्ताओं ने पंजीकरण कराकर योजना में रुचि दिखाई। लोगों ने काफी बढ़-चढ़कर इसमें भाग लिया। एसडीओ महेंद्र कुमार ने कमर्शियल और घरेलू उपभोक्ताओं को मिल रही व्यापक छूट की जानकारी देते हुए अधिक से अधिक लोगों से योजना का लाभ उठाने की अपील की।

युवक हुआ लापता गुमशुदगी दर्ज

रामसनेहीघाट, बाराबंकी: दरियाबाद थाना क्षेत्र के अकबरपुर गांव का एक 20 वर्षीय युवक शुक्रवार शाम से लापता हो गया। जानकारी के अनुसार अकबरपुर निवासी शकील वाल्मीकि का 20 साल का पुत्र रितिक 29 नवंबर की शाम गांव दनापुर क्यामपुर में एक विवाह समारोह में जाने की बात कहकर घर से निकला था। परिजनों के अनुसार रितिक देर रात तक वापस नहीं लौटा, जिसके बाद परिजनों ने आसपास के क्षेत्रों में उसकी काफी खोजबीन की। युवक के पिता शकील वाल्मीकि ने बताया कि रितिक का मोबाइल भी बंद आ रहा है। पुलिस ने युवक की गुमशुदगी दर्ज कर ली है।

बाराबंकी को जेडएफडी मॉडल बनाने पर जोर

बैठक करते पुलिस उपमहानिरीक्षक यातायात एवं सड़क सुरक्षा। अमृत विचार

बाराबंकी, अमृत विचार: पुलिस उपमहानिरीक्षक यातायात एवं सड़क सुरक्षा ने क्रिटिकल कारिडोर टीम व जनपदीय स्टेक होल्डर्स के साथ समीक्षा गोष्ठी की। इस दौरान बाराबंकी को जीरो फैटेलिटी डिस्ट्रिक्ट माडल के रूप में स्थापित करने पर जोर दिया गया। रिजर्व पुलिस लाइन्स के सभागार में बैठक के दौरान पुलिस उपमहानिरीक्षक अरविन्द कुमार मौर्य द्वारा द्वारा ब्लैक स्पॉट चिह्नीकरण और सुधार, जन जागरूकता अभियान, यातायात उपकरणों की समीक्षा, प्रवर्तन कार्रवाई जैसे ओवरस्पीडिंग, नशे में ड्राइविंग, और अन्य यातायात नियमों के उल्लंघन के खिलाफ प्रभावी प्रवर्तन कार्रवाई करने, बुनियादी ढांचे में सुधार जैसे सड़कों पर चेतावनी संकेतों, रोड मार्किंग, और आवश्यकतानुसार स्पीड ब्रेकर की व्यवस्था सुनिश्चित करने पर चर्चा की गई तथा सभी स्टेक होल्डर्स एवं सीसी टीमों को सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और जनपद को सुरक्षित बनाने में सक्रिय रहकर समन्वित रूप से कार्य करने के दिशा निर्देश दिये गये। गोष्ठी का उद्देश्य सड़क दुर्घटना से होने वाली मृत्यु दर में शत-प्रतिशत कमी लाना है। इस दौरान पुलिस अधीक्षक अर्पित विजयवर्गीय, अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी व दक्षिणी, क्षेत्राधिकारी यातायात एवं अन्य अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे।

एडीएम का किया गया स्वागत। अमृत विचार

करियर गाइडेंस कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अवसर

बाराबंकी, अमृत विचार : राजकीय जिला पुस्तकालय में सोमवार को कॅरियर गाइडेंस फॉर गर्ल्स 'पंख' कार्यक्रम के तहत राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं नोडल शिक्षकों के दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि एडीएम निरंकार सिंह का स्वागत डीआईओएस ओपी त्रिपाठी व पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. पूनम सिंह ने बुके भेंट कर किया। स्वागत उद्बोधन डीआईओएस एवं वित्त एवं लेखाधिकारी, समग्र शिक्षा, संतोष कुमार मौर्य ने दिया। मुख्य अतिथि ने कहा वर्तमान समय में संचालित करियर गाइडेंस कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अवसर है। डीआईओएस ने कहा कार्यक्रम विद्यार्थियों को उनके भविष्य के लिए एक निर्णायक दिशा दे सकता है। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. पूनम सिंह ने मुख्य अतिथि का आभार जताया। संचालन मास्टर ट्रेनर दीपमाला वर्मा, राजकीय हाई स्कूल मित्तई के प्रधानाध्यापक विनोद कुमार सिंह, नूर मोहम्मद इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं अखिलेन्द्र सिंह, जिला समन्वयक समग्र शिक्षा ने चार सत्रों में किया। कार्यक्रम का सफल संचालन नेशनल इंटर कॉलेज फतेहपुर के प्रवक्ता आशीष पाठक द्वारा किया गया।

बाराबंकी पहुंची दिल्ली पुलिस, युवक को ले गई

बाराबंकी, अमृत विचार: साइबर ठगी के एक मामले में दिल्ली पुलिस की टीम फतेहपुर कोतवाली क्षेत्र से एक संदिग्ध को अपने साथ ले गई। यह कार्रवाई सोमवार को हुई। पुलिस की रडार पर कई अन्य चेहरे हैं। जानकारी के अनुसार दिल्ली पुलिस की टीम सोमवार को क्षेत्र के मैदासपुर गांव पहुंची और यहां पर जनार्दन पुत्र हरिशंकर वर्मा को हिरासत मे ले लिया। टीम इसे लेकर लखनऊ चली गई। बताया जा रहा कि मामला साइबर ठगी से जुड़ा है और प्रकरण के संदिग्ध बाराबंकी के फतेहपुर क्षेत्र के रहने वाले हैं।

सूत्रों के अनुसार इस गांव व आस पास के कई चेहरे साइबर ठगी की घटनाओं में लिप्त हैं। इनकी संलिप्तता उजागर होने के बाद पुलिस टीम सक्रिय हुई है। पुलिस पकड़े गए युवक से पूछताछ कर रही है, अभी और भी चेहरे दबोचे जा सकते हैं। क्षेत्राधिकारी फतेहपुर जगतराम कनौजिया ने बताया कि साइबर ठगी का मामला है, उसी को लेकर पुलिस कार्रवाई कर रही है।

बच्चों ने किया प्रतिभा का प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

जनपद स्तरीय दो दिवसीय प्रतियोगिता के विजयी छात्र। अमृत विचार

अमृत विचार: जनपद स्तरीय दो दिवसीय बाल क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक स्पर्धा के पहले दिन केडी सिंह बाबू स्टेडियम बच्चों की ऊर्जा और प्रतिभा से गूंज उठा। प्राथमिक विद्यालयों के बालक-बालिकाओं ने एथलेटिक्स, कुश्ती और शतरंज में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर जलवा बिखेरा। जिला व्यायाम शिक्षिका रितु पाठक ने बताया एथलेटिक्स में बालक वर्ग के 50, 100, 200 और 400 मीटर दौड़ में क्रमशः अभिजीत, गोलू यादव, मो. जफर और आशु यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं बालिका वर्ग में 50 व 100 मीटर दौड़ में हरख की तृप्ति, 200 मीटर में सिद्धौर की काव्या तथा 400 मीटर में त्रिवेदीगंज की मुस्कान विजेता रहीं। लंबी कूद में बालक वर्ग में पूरेडलई के साहिल और बालिका वर्ग में त्रिवेदीगंज की खुशी ने प्रथम स्थान हासिल किया। कुश्ती में भी पूरेडलई क्षेत्र का दबदबा रहा। बालिका वर्ग की छह भार वर्गों में प्रिया, निधि, मानवी, शिखा, शिवानी और निशा ने बाजी मारी। बालक वर्ग में साहिल, मनीष यादव, विवेक, आबिद अली, शादाब और मोहित विजेता रहे। शतरंज में बालक वर्ग से अनूप, राधे, हरिओम और अभि ने शानदार प्रदर्शन किया जबकि बालिका वर्ग में दिव्या, मीरा, शैल और सुहानी विजेता बनीं। प्रतियोगिता के दौरान मनीराम, सुनील कुमार गौड़, जैनेन्द्र कुमार आदि मौजूद रहे।

जिले में 111 परीक्षा केंद्रों की अनंतिम सूची जारी

बाराबंकी, अमृत विचार: माध्यमिक शिक्षा परिषद की बोर्ड परीक्षा 2026 के लिए जिले में 111 परीक्षा केंद्रों की अनंतिम सूची जारी कर दी गई है। बोर्ड द्वारा वेबसाइट पर सूची अपलोड होते ही केंद्र निर्धारण को लेकर चल रही चर्चाओं पर विराम लग गया है। आपत्तियों एवं शिकायतों से संबंधित प्रत्यावेदन के लिए 4 दिसंबर तिथि अंतिम तय है। इसके बाद विचार नही होगा। परीक्षा केंद्र निर्धारण को लेकर लंबे समय से चल रही तैयारियां सोमवार को पूरी हो गईं। नकलविहीन एवं शांतिपूर्ण परीक्षा कराने के दावे के साथ जारी की गई इस सूची में इस बार राजकीय विद्यालयों को भी बतौर परीक्षा केंद्र शामिल हैं। परीक्षा केंद्रों का निर्धारण परिषद ने ऑनलाइन प्रणाली से किया है। गत वर्ष जहां 106 परीक्षा केंद्र बने थे, वहीं इस बार संख्या बढ़ाकर 106 कर दी गई है। यानी 5 नए परीक्षा केंद्र जोड़े गए हैं। परीक्षार्थियों की संख्या बढ़ने के कारण केंद्रों की संख्या भी बढ़ाई गई है। प्रस्तावित केंद्रों की सूची डीआईओएस कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा है। जिला विद्यालय निरीक्षक ओपी त्रिपाठी ने बताया कि परीक्षा केंद्र सूची पर किसी भी प्रकार की आपत्ति या शिकायत 4 दिसंबर रात 12 तक विभाग की ईमेल आईडी पर निर्धारित प्रोफार्मा में साक्ष्यों सहित भेजी जा सकती है।

सफल हो रहा एसआईआर अभियान

कार्यालय संवाददाता, बाराबंकी

एसआईआर कार्य का निरीक्षण करते जिलाधिकारी। अमृत विचार

अमृत विचार: एसआईआर को समयबद्ध, प्रभावी ढंग से व उत्साहपूर्वक निपटाने का हरसंभव प्रयास कर रहे डीएम शशांक त्रिपाठी के प्रयासों का ही परिणाम है कि बाराबंकी में यह अभियान न सिर्फ द्रुत गति से संचालित हो रहा बल्कि इससे जुड़े कर्मियों की ऊर्जा देखने लायक है। बताते चलें कि एसआईआर अभियान को समय से पूर्ण करने व सही तरीके से प्रपत्रों को भरवाने के लिए जिला से लेकर ब्लाक स्तर तक के अधिकारियों कर्मियों को लगाया गया है। इसकी सतत मानीटरिंग स्वयं डीएम कर ही नहीं रहे बल्कि अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहित करते हुए बीएलओ को सम्मानित भी कर रहे। अनुशासन का वातावरण बनाए रखने के लिए ही डीएम स्वयं बूथों पर जा रहे, वहीं मातहतों को भी इस कार्य में जुटाया है। मैदान में उतरे बीएलओ को तमाम तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है लेकिन उनकी ऊर्जा हर समस्या को छोटा कर रही है। डीएम का रुख जहां लगन से काम कर रहे कर्मियों के लिए उदारता से भरा है, वहीं लापरवाही बरतने पर वह कार्रवाई के सख्त मूड में दिखे हैं। उद्देश्य सिर्फ यह कि इस महत्वपूर्ण कार्य को गंभीरता से लेते हुए समय से पूर्ण कराया जाए। जिसका परिणाम यह कि रविवार होने के बावजूद बीएलओ अपने अपने क्षेत्र में इस राष्ट्रीय कर्त्तव्य को पूरा करते नजर आ रहे हैं।

प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत करते लोग। अमृत विचार

मो. शरीफ राईन बने प्रदेश अध्यक्ष, 270 वोटों से हुई जीत

देवा, बाराबंकी : विखं देवा की पवैयाबाद स्थित एक कोल्ड स्टोर परिसर में रविवार को ऑल इंडिया जमीयत राईन की राष्ट्रीय बैठक हुई। इस दौरान उप्र जमीयत राईन समाज के प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए चुनाव प्रक्रिया भी पूर्ण कराया गया जिसमें छह प्रत्याशियों ने दावेदारी पेश की। देर शाम तक शांतिपूर्ण ढंग से चली मतगणना के बाद परिणाम घोषित हुए। बाराबंकी के देवा कस्बे निवासी मो. शरीफ राईन ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी, बहराइच के भिनगा नपं अध्यक्ष इरफान राईन को 270 वोटों से पराजित कर प्रदेश अध्यक्ष पद पर कब्जा जमाया। मो. शरीफ राईन की जीत पर ऑल इंडिया जमीयत राईन के संरक्षक हाजी असलम, राष्ट्रीय अध्यक्ष जीशान असलम, सोहेल अकरम, शोएब अकरम, बिहार प्रदेश राईन बिरादरी के अध्यक्ष डॉ. गयास, इस्लाम, इरशाद राईन, अनीश राईन, कोषाध्यक्ष फैसल असलम, पूर्व नपं अध्यक्ष साहबे आलम वारसी, शिबू कुरैशी, सभासद मो. रिजवान कुरेशी, समाजसेवी शहजादे आलम राईन आदि ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।

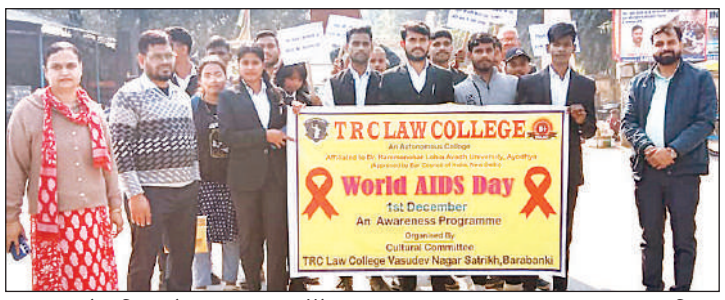

जागरुकता रैला निकालते छात्र-छात्राएं व कॉलेज स्टाफ। अमृत विचार

अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस पर निकाली जागरूकता रैली

बाराबंकी, अमृत विचार : अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस के अवसर पर सतरिख स्थित टीआरसी लॉ कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने सोमवार को एचआईवी एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक जन-जागरूकता रैली निकाली। रैली का थीम एचआईवी पॉजिटिव होना जिंदगी का अंत नहीं रखा गया था। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अश्वनी कुमार गुप्ता ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। इसके बाद रैली समन्वयक एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. दीपमाला श्रीवास्तव के नेतृत्व में विद्यार्थी नगर पंचायत सतरिख के गढ़ी और कायस्थाना मोहल्लों से होते हुए मुख्य बाजार पहुंचे और वहां आम जनता को एड्स के प्रति सचेत किया। रैली के दौरान छात्र-छात्राओं ने ज्ञान की लौ जलाएं, एड्स से दुनिया बचाएं और भेदभाव की दीवार गिराएं, एड्स रोगी को गले लगाएं जैसे आकर्षक और प्रभावी नारे लगाकर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। रैली में कॉलेज के परास्नातक एवं स्नातक विभागों के प्रवक्ता मो. अमजद अंसारी, डॉ. प्रमोद पाण्डेय, अंकित मिश्रा, वीर विक्रम सिंह, इन्द्र दमन तिवारी, अवनीश पाण्डेय, वैशाली सिंह और अराधना मिश्रा सहित बड़ी संख्या में विधि छात्र-छात्राएं शामिल रहीं।

बाराबंकी डायरी

बारूद भरा गोला फटा, बालक जखमी

बाराबंकी, अमृत विचार : सतरिख थाना क्षेत्र में बारूद भरा गोला दगने से एक बालक गंभीर रूप से जख्मी हो गया। बालक माचिस से गोला दगाने की कोशिश कर रहा था। उसे सीएचसी में भर्ती कराया गया है। यह घटना थाना क्षेत्र के ग्राम तिंधवानी में सोमवार की दोपहर हुई। जानकारी के अनुसार रविवार को गांव के गंगाराम प्रजापति की बेटी की शादी को लेकर बारात आई थी। इस दौरान आतिशबाजी हुई और बेकार गए पटाखे एक किनारे छोड़ दिए गए। सोमवार की सुबह गांव का बालक सुमित 12 पुत्र श्रीराम एक गोला उठाकर घर ले गया। वह माचिस जला ही रहा था कि बारूद में धमाका हो गया। हादसे में बालक झुलस गया। परिजन उसे लेकर सीएचसी गए जहां इलाज जारी है।

किशोर ने फांसी लगा की आत्महत्या

बाराबंकी, अमृत विचार : शहर में एक शासकीय अधिवक्ता के किशोर पुत्र का शव घर के आंगन में लगे जाल से फांसी से लटका मिला। घटना की खबर फैलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। घटना के कारण का पता अभी नहीं चल सका है। जानकारी के अनुसार यह घटना शहर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत आवास विकास कालोनी में सोमवार पूर्वाह्न हुई। जिला न्यायालय में सहायक शासकीय अधिक्ता रमेश वर्मा मूल रूप से दरियाबाद थाना क्षेत्र के जेठौती कुर्मियान के रहने वाले हैं। उनके 16 वर्षीय पुत्र अनन्य ने घर के आंगन में जाल से फंदा बनाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने यह दृश्य देखा तो हाहाकार मच गया। रोना पिटना सुन कर आस पड़ोस से लोग एकत्र हो गए। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

अदालत पहुंची विवाहिता तब पुलिस ने दर्ज की रिपोर्ट

सफदरगंज, बाराबंकी : दहेज उत्पीड़न के अलग-अलग केस में महिलाओं ने मारपीट व प्रताड़ना का आरोप लगाया है। एक केस में विवाहिता को कोर्ट की शरण लेनी पड़ी। चौखंडी निवासी श्रीकेशन की पुत्री शीला ने बताया कि उसका विवाह अयोध्या के ग्राम रसूलपुर निवासी रामसुरेश से हुआ था। आरोप है कि दहेज के लिए 21 अक्टूबर को उसे ससुराल पक्ष ने वाहन में बिठाकर पीटा और मायके के बाहर छोड़कर फरार हो गए। पीड़िता ने रिपोर्ट दर्ज कराने का प्रयास किया लेकिन सुनवाई नहीं हुई। एसपी स्तर पर भी कार्रवाई न होने पर वह विवश होकर कोर्ट पहुंची। उधर, ग्राम चमनशाह किठूरी निवासी अभिनव की पत्नी सोनाली ने बताया शादी के बाद चार पहिया वाहन की मांग की जाती रही। आरोप है कि चार माह पूर्व उसके पति को ससुराल पक्ष ने गायब कर दिया और उसे मारकर घर से निकाल दिया। तीन छोटे बच्चों के साथ महिला मायके में रहने को मजबूर है। उसने थाना सफदरगंज में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

अमेरिकी कंपनी कर्मी की संदिग्ध हालात में मौत, गड्ढे में मिला शव

निन्दूरा, बाराबंकी : अमेरिका की एक कंपनी में वर्क फ्राम होम काम करने वाले युवक का शव संदिग्ध दशा में सड़क किनारे गड्ढे में पड़ा मिला। पास ही बाइक भी खड़ी थी। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान कराई तो मृतक लखनऊ का रहने वाला निकला। सूचना मिलने पर परिजन भी मौके पर पहुंच गए। पुलिस जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार सोमवार की भोर लखनऊ महमूदाबाद मार्ग पर सड़क किनारे गड्ढे में एक युवक का शव मिलने से हड़कंप मच गया। शव मिलने की जानकारी फैलते ही ग्रामीण एकत्र हो गए। शव के पास ही मृतक की बाइक स्टैंड पर खड़ी मिली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तलाश ली तो जेब में मोबाइल मिला। जिसके जरिए परिजनों को सूचना दी गई। मृतक की पहचान अमित चौहान 34 पुत्र परशुराम निवासी मटियारी थाना चिनहट लखनऊ के रूप में हुई। मौके पर पहुंचे मृतक के बड़े भाई अरूण कुमार चौहान ने बताया कि उनका छोटा भाई अमित अमेरिका स्थित जेनपैक्ट ओरेकल पेरोल कंपनी में वर्क फार होम काम करता था।

पदोन्नति पर पुलिस अधीक्षक ने लगाए स्टार

बाराबंकी, अमृत विचार : पुलिस अधीक्षक अर्पित विजयवर्गीय द्वारा पुलिस अधीक्षक कार्यालय में नियुक्त उपनिरीक्षक (लिपिक) शिव प्रकाश पाण्डेय को निरीक्षक लिपिक के पद पर पदोन्नति होने पर स्टार लगाकर शुभकामनाएं दी गई। इस अवसर पर क्षेत्राधिकारी सदर सौरभ श्रीवास्तव मौजूद रहे।

स्टार लगाते पुलिस अधीक्षक। अमृत विचार

जांच-पड़ताल करते जिला कृषि अधिकारी। अमृत विचार

उर्वरक बिक्री केंद्रों पर छापेमारी, लाइसेंस निलंबित

बाराबंकी, अमृत विचार : जिला कृषि अधिकारी राजित राम ने वरिष्ठ प्राविधिक सहायक (ग्रुप-ए) प्रीतम सिंह के साथ तहसील फतेहपुर एवं नवाबगंज क्षेत्र के कुल नौ उर्वरक बिक्री केंद्रों पर छापेमारी की। जांच के दौरान पांच उर्वरकों के नमूने लिए गए, जबकि तीन उर्वरक विक्रेताओं मेसर्स भारत खाद भंडार टिकैतगंज, मेसर्स सुषमा बीज भंडार टिकैतगंज और मेसर्स यूनियन किसान सेवा केंद्र टिकैतगंज के प्रतिष्ठान बंद मिले। नियमों के उल्लंघन पर तीनों के उर्वरक विक्रय प्राधिकरण-पत्र निलंबित कर दिए गए। जिला कृषि अधिकारी ने सभी विक्रेताओं को निर्देशित किया कि वे अपने प्रतिष्ठानों पर रेट बोर्ड एवं स्टॉक बोर्ड अनिवार्य रूप से प्रदर्शित करें। किसानों को उनकी जोत, फसल एवं संस्तुति के अनुसार निर्धारित दर पर बिना किसी टैगिंग के पीओएस मशीन द्वारा उर्वरक उपलब्ध कराया जाए।

7वीं स्पोर्ट्स मीट 'उड़ान' का आगाज

बाराबंकी, अमृत विचार: बालाजी ग्रुप ऑफ स्कूल्स द्वारा आयोजित 21 दिवसीय सातवीं स्पोर्ट्स मीट 'उड़ान' का शुभारंभ सोमवार को हुआ। उद्घाटन विद्यालय के मैनेजिंग डायरेक्टर अंकुर माथुर ने किया। उन्होंने बताया 'उड़ान' खेल महोत्सव में बालाजी ग्रुप के अधीन संचालित चारों विद्यालयों के 1500 छात्र-छात्राएं प्रतिभाग करेंगे। स्पोर्ट्स मीट के प्रथम दिन प्री-प्राइमरी समूह की नृत्य, गायन, कलर, भाषण, हिंदी एवं अंग्रेजी कविता प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। सत्यप्रेमी नगर स्थित बालाजी का बचपन शाखा के प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्रेयष्ठ, वर्तिका त्रिवेदी और प्रहार कौर ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान मोहम्मद हुजैफा, क्षमा कुशवाहा और आदया वर्मा को मिला, जबकि तृतीय स्थान उत्कर्षणा निगम, हुरैन इकराम और ईशान्वी शुक्ला के नाम रहा। गायन में रीनाया रस्तोगी, अद्विक गुप्ता और समृद्धि गुप्ता प्रथम स्थान पर रहे। द्वितीय स्थान पृषा रस्तोगी, पंखुड़ी जायसवाल और अक्षिता श्रीवास्तव के हिस्से आया, जबकि तृतीय स्थान रुद्राक्ष मिश्रा और ताशी सिंह को मिला। कलर प्रतियोगिता में प्रनीत मौर्य, रुद्र नारायण रस्तोगी और मोहम्मद हैंजाला प्रथम स्थान पर रहे। भाषण में अरकान अहमद ने प्रथम स्थान हासिल किया। हिंदी कविता में मिशिका जैन, मोहम्मद हमदान व अनिका वर्मा प्रथम रहे। अंग्रेजी कविता में असादुल्लाह, रीनाया रस्तोगी व उत्कर्षणा निगम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। फल एवं सब्जी में सफिया प्रथम, अब्दुल्ला द्वितीय और आकृष जैन तृतीय स्थान पर रहे। हॉप रेस में भी उमे सफिया ने पहला स्थान प्राप्त किया।

स्पोर्ट्स मीट में विजयी छात्र। अमृत विचार

अमृत विचार

लखनऊ, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बनाकर किया अश्लील पोस्ट, मुकदमा दर्ज

जगतपुर : कस्बे के एक युवक ने किसी अज्ञात व्यक्ति पर उनके नाम से फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बनाकर अश्लील मैसेज व पोस्ट डालने का आरोप लगाया है। पीड़ित का कहना है कि इस हरकत से उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा धूमिल हो रही है। पीड़ित अखिलेश सिंह निवासी जगतपुर ने तहरीर में बताया कि कोई व्यक्ति उनके नाम व फोटो का इस्तेमाल कर इंस्टाग्राम पर अश्लील मैसेज डाल रहा है। तहरीर के आधार पर पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत किया। थाना प्रभारी पंकज कुमार त्यागी ने आईटी एक्ट व साइबर अपराध की धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। पुलिस फर्जी आईडी संचालक की तलाश में जुट गई है।

एसडीएम से अवैध निर्माण की शिकायत

लालगंज : ऐहार स्थित ग्राम सभा की जमीन पर हो रहे अवैध निर्माण की शिकायत उप जिलाधिकारी से की गई है। शिकायतकर्ता सचिन ने बताया कि एक व्यक्ति ने ग्राम सभा की जमीन को हेर फेर करते हुए बेच दिया है। यह जमीन दूसरे समुदाय के व्यक्ति को बेची गई है। एसडीएम से बताया कि उपरोक्त भूमि पर निर्माण कार्य कराया जा रहा है। इसकी आड में अन्य कई लोग ग्राम समाज की सम्पूर्ण भूमि पर कब्जा कर करोड़ों की सम्पति हडपने का प्रयास कर रहे हैं। शिकायतकर्ता ने उप जिलाधिकारी से इस पर रोक लगाते हुए संबंधितों के खिलाऊ मुकदमा दर्ज कराने की मांग की है। कानून गो बृजेश सिंह ने बताया कि कार्य को बंद करा दिया गया है। कब्जा की गई भूमि रेल कोच कारखाने के पास की बताई जा रही है।

मोबाइल छीनकर भागे युवक को पकड़ा

लालगंज : लालगंज नगर पंचायत तिराहे पर ई-रिक्शा में बैठकर बात कर रहे एक युवक का मोबाइल छीनकर मौके पर खड़े बाइक सवार ने भागने का प्रयास किया। जिसे लोगों ने पकड़ कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया। वही दूसरा युवक मोटर साइकिल से भाग निकाला। पकड़ा गया युवक चांदा गांव निवासी अंकित है। पुलिस के अनुसार लोगों द्वारा पकड़े गए युवक को हिरासत में लिया गया है। मोबाइल छीनने वाला युवक आकाश बन्ना मऊ गांव का निवासी बताया गया है।

संगठन के जिलाध्यक्ष बने रोबिन

रायबरेली : भारतीय युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील कुमार वर्मा एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वेद प्रकाश द्विवेदी ने रोबिन साहू को संगठन का जिलाध्यक्ष बनाया है। भारतीय युवा विकास परिषद का मुख्य लक्ष्य युवाओं को एकजुट करना, उन्हें सशक्त बनाना, रोजगार से जोड़ना तथा विभिन्न सामाजिक उद्देश्यों का प्रभावी रूप से पालन कर उन्हें धरातल पर उतारना है। इस अवसर पर जितेन्द्र सिंह, सूरज सिंह बिसेन आदि लोग मौजूद रहे।

अधिकारियों ने किया प्रदर्शन

सतांव : ऑनलाइन उपस्थिति और गैर विभागीय कार्यों के करवाने से ग्राम पंचायत व ग्राम विकास अधिकारियों में नाराजगी है। सोमवार को ब्लाक कार्यालय परिसर में प्रदर्शन किया। बताया कि एक से चार दिसम्बर तक काली पट्टी बांधकर सभी सचिव शासकीय कार्य करेंगें। पांच दिसम्बर को धरना कार्यक्रम व जनपद के सरकारी सोशल ग्रुपों से सचिव लेफ्ट हो जायेंगें। 10 दिसम्बर से सभी सचिव अपने निजी वाहन का प्रयोग बन्द कर देंगें। इस मौके पर सचिव सत्येंद्र सिंह, कमलेश तिवारी, देवेंद्र कुशवाहा, राजू सोनकर, मनोरमा, अनूप कुमार आदि मौजूद रहे।

एसिड फेंकने की धमकी और छेड़छाड़ के आरोपी को जेल

ऊंचाहार, रायबरेली। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव की महिला की शिकायत पर पुलिस ने छेड़छाड़ के आरोपी को जेल भेज दिया। महिला ने शिकायत की थी कि उसकी बेटी कक्षा दस की छात्रा है। रास्ते में आते जाते गांव का एक युवक छेड़छाड़ करता था। पूर्व में पुलिस से मामले की शिकायत की गई थी, लेकिन पुलिस ने महज शांतिभंग में आरोपी का चालान किया था। जिसके बाद वो मनबढ़ हो गया और उसने फिर से छात्रा को परेशान करने लगा। इसी बीच आरोपी ने छात्रा पर एसिड फेंकने की धमकी दी। रविवार को महिला ने कोतवाली में मामले की तहरीर दी थी। कोतवाल अजय कुमार राय ने बताया कि महिला की तहरीर पर गांव के अंकुश यादव पर केस दर्ज कर आरोपी को जेल भेजा गया है।

चोरी की बाइक के साथ एक गिरफ्तार, जगतपुर: थाना क्षेत्र के लक्ष्मणपुर के पास वाहन चेकिंग के दौरान पुलिस ने संदिग्ध युवक राहुल पुत्र भूपति निवासी पूरे भोज राय मजरे तिवारीपुर को रोककर जानकारी ली तो पता चला कि बाइक चोरी की है। थाना प्रभारी पंकज कुमार त्यागी ने बताया कि युवक ने गांव में ही तिलक समारोह से बाइक चोरी की थी। आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

जागरूकता परेड निकाल एड्स से बचाव का दिया संदेश

संवाददाता, रायबरेली

कार्यक्रम

- **सीडीओ और सीएमओ ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना**

अमृत विचार। विश्व एड्स दिवस पर पीएम श्री राजकीय इंटर कॉलेज के एनसीसी कैडेट तथा छात्रों द्वारा एड्स नियंत्रण कार्यक्रम में आयोजित विश्व एड्स दिवस परेड के माध्यम से जन जागरूकता फैलाई गई। जागरूकता परेड को मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता तथा मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नवीन चन्द्रा, प्राचार्य रत्नेश कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

सीएमओ डॉ. नवीन चन्द्रा ने बताया कि जिले में वर्ष 2011 से आर्ट सेंटर ऊंचाहार की स्थापना हुई थी, जिससे अब तक 2163 मरीजों की खोज की गई। वर्तमान में यह आर्ट केंद्र जिला मुख्यालय पर स्थित जिला चिकित्सालय परिसर में दो वर्षों से स्थापित है। जिला पुरुष चिकित्सालय में 5360 मरीजों की जांच की गई, जिनमें से 54 में इस बीमारी के संक्रमण का पता चला। इसी के साथ एम्स रायबरेली में भी इस बीमारी की जांच की जा रही है और वहां पर 3226 जांच की जा चुकी है। जिसमें से 31 मरीज खोजे गए। जिला महिला चिकित्सालय में करीब 12413 महिला मरीजों की जांच की गई, जिसमें से नौ संक्रमित मिली।

एड्स नियंत्रण जागरूकता परेड को हरी झण्डी दिखाकर संयुक्त रूप से रवाना करते सीडीओ व सीएमओ। अमृत विचार

उन्होंने बताया कि सीएचसी लालगंज और बछरावां में जांच के दौरान ग्रसित 15 मरीज निकले हैं। वर्ष 2025 में 106 मरीज इस बीमारी के संक्रमण से ग्रसित निकले थे। टीबी से संक्रमित एचआईवी के मरीज 13 मिले हैं। उनका दोनों ही इलाज किया जा रहा है। इस बीमारी से बचाव ही एकमात्र उपाय है, जिसके लिए जिले की सभी 18 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर यह जांच की जा रही है। जिला क्षयरोग अधिकारी/नोडल एड्स अधिकारी डॉ. अनुपम सिंह, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अरविंद, जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी डीएस अस्थाना, जिला प्रोग्राम समन्वयक अभय मिश्रा, मनीष श्रीवास्तव, अतुल कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

बारात से लौट रहे बाइक सवार युवक की सड़क हादसे में मौत, साथी गंभीर

अयोध्या जिले के हलियापुर थाना क्षेत्र में अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर, घर में कोहराम

संवाददाता महराजगंज (रायबरेली)

अमृत विचार। मोन गांव से बारात गए बाइक सवार दो युवक हादसे का शिकार हो गए। अज्ञात वाहन की टक्कर से एक युवक की मौत हो गई। वहीं दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना गांव पहुंची को परिजनों में कोहराम मच गया।

संतोष सिंह की फाइल फोटो।

कोतवाली क्षेत्र के मोन गांव निवासी संतोष सिंह उर्फ पुताने व प्रवीण सिंह रविवार को बाइक से सिकन्दरपुर गांव निवासी रन बहादुर के बेटे अखण्ड प्रताप की बारात में शामिल होने अयोध्या जनपद के हलियापुर गए थे। बारात में शामिल होकर देर रात दोनों बाइक से वापस आ रहे थे। हलियापुर थाना क्षेत्र के पिठला गांव के पास उनकी बाइक में अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। घटना में दोनों बाइक सवार गंभीर घायल हो गए। गश्त कर रही हलियापुर पुलिस ने जब दोनों को सड़क किनारे पड़ा देखा तो परिजनों को सूचना दी। आनन-फानन में दोनों को स्थानीय सीएचसी पिठला पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने संतोष सिंह उर्फ पुताने की मौत की पुष्टि कर दी। वहीं दूसरे बाइक सवार प्रवीण सिंह को ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया, जहां उसका इलाज जारी है। वहीं मृतक संतोष सिंह उर्फ पुताने के शव को पोस्टमार्टम के लिए अयोध्या के पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि रात करीब साढ़े 12 बजे सूचना स्थानीय पुलिस से मिली तो आनन-फानन सभी सीएचसी पिठला पहुंच गए। घटना से गांव में मातम का माहौल है। परिजन रो-रोकर बेहाल हैं।

राहगीरों ने दिखाई होती मानवता तो बच जाती संतोष की जान: अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार संतोष सिंह उर्फ पुताने और प्रवीण सिंह काफी देर तक सड़क के किनारे पड़े हुए थे। इस दौरान कई वाहन भी गुजरे, लेकिन रात अधिक होने या फिर कुछ और सोचकर किसी ने रोकना मुनासिब नहीं समझा। यदि किसी ने मानवता दिखाई होती तो शायद पुताने की जान बच जाती। पुलिस के अस्पताल पहुंचाते-पहुंचाते काफी खून बह गया था। इससे उसकी इलाज शुरू होने से ही मौत हो गई।

सड़क हादसे में दो बाइक सवार घायल

बछरावां (रायबरेली)। बछरावां-महाराजगंज मार्ग पर रविवार की देर रात तेज रफ्तार अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार दो युवक घायल हो गए। घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। जानकारी के अनुसार करमगंज निवासीगण मोहम्मद उस्मान पुत्र मोहम्मद बकरीद (40), राकेश कुमार पुत्र अज्ञात (30) बाइक से थाना क्षेत्र के अंतर्गत उक्त मार्ग पर स्थित हरदोई गांव से अपने घर जा रहे थे। तभी हरदोई गांव के पास तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। जिसमें वह दोनों घायल हो गए। सूचना पर पहुंची एम्बुलेंस के द्वारा घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बछरावा पहुंचाया गया, जहां से दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

जिले में 95 परीक्षा केंद्रों की अनंतिम सूची जारी

रायबरेली। माध्यमिक शिक्षा परिषण हाईस्कूल इंटरमीडिएट परीक्षा को लेकर केंद्रों की अनंतिम सूची जारी कर दी गई है। रविवार की देर रात जारी सूची में 95 विद्यालयों के नाम शामिल हैं। पिछली बार की अपेक्षा इस बार 14 केंद्र कम हैं। सभी से चार दिसंबर तक प्रत्यावेदन मांगा गया है। सूची जारी होने के साथ विद्यालय प्रबंधन में खलबली मची हुई है। जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह ने बताया है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज की वर्ष 2026 की हाईस्कूल/इंटरमीडिएट की परीक्षाओं के लिए निर्धारित ऑनलाइन प्रक्रिया के अन्तर्गत बोर्ड द्वारा जनपद के 95 परीक्षा केन्द्रों (विद्यालय छात्र आवंटन सहित) का निर्धारण करते हुए अनन्तिम सूची जारी की गयी है।बोर्ड द्वारा निर्गत अनन्तिम सूची में अपने विद्यालय के परीक्षार्थियों के आवंटन/अवधारणा का अवलोकन विद्यालय प्रबंधन द्वारा किया जा सकता है। इस संबंध में यदि कोई आपत्ति/शिकायत हो तो पोर्टल पर 04 दिसम्बर तक प्रस्तुत करना होगा।

फैक्ट्री में दूषित पनीर मिलने से हड़कंप, 3 क्विंटल कराया नष्ट

संवाददाता, सलोन (रायबरेली)

कार्रवाई

अमृत विचार। थाना क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा विभाग ने छापेमारी कर बड़ी मात्रा में एक फैक्ट्री के अंदर से नकली दूषित पनीर बरामद किया है। टीम ने मौके से पनीर के सैंपल लेकर जांच के लिए लैब भेज दिए हैं। लगभग तीन क्विंटल दूषित पनीर को नष्ट कराया गया है। एक वर्ष पूर्व भी इसी फैक्ट्री में नकली पनीर की शिकायत पर सीओ प्रदीप कुमार ने बड़ी कार्रवाई की थी।

कोतवाली क्षेत्र के बड़ा घोषी का पुरवा मजरे ख्वाजापुर गांव में दूषित और मिलावटी पनीर बनाये जाने की शिकायत जिला प्रशासन को की गई थी। जिला प्रशासन के निर्देश पर रविवार को खाद्य सुरक्षा अधिकारी कंचन तिवारी ने स्थानीय पुलिस टीम के साथ पनीर फैक्ट्री में छापेमारी करते हुए फैक्ट्री से 280 किलो दूषित पनीर बरामद किया है। फैक्ट्री में छापेमारी की खबर पर क्षेत्र के जिन दुकानों पर फैक्ट्री से पनीर सप्लाई की गई थी उन व्यापारियों में हड़कम्प मच गया। वही खाद्य विभाग की टीम ने दो दिनों तक फैक्ट्री की सघन जांच पड़ताल करते हुए पकड़ी गई दूषित पनीर को एक खेत मे ले जाकर नष्ट करा दिया है। जबकि पनीर के सैम्पल लेकर उन्हें लैब भेज दिया है। इंचार्ज एफएसओ कंचन तिवारी ने बताया कि संचालक मोहम्मद शाहिद बड़ा घोषी का पुरवा की पनीर फैक्ट्री में छापेमारी की गई थी। इस कार्यवाही में पुलिस के साथ सदर एफएसओ सौरभ उत्तम भी मौजूद थे। पकड़ी गई पनीर अनहाइजेनिक कंडीसन की थी।जिसे नष्ट कराकर फैक्ट्री संचालन पर रोक लगाई गई है।

फैक्ट्री संचालक ने तीन पर रंगदारी का मुकदमा कराया दर्ज: पनीर फैक्ट्री संचालक शाबिर ने तीन लोगों के विरुद्ध रंगदारी का मुकदमा दर्ज कराया है। कोतवाल राघवन कुमार सिंह ने बताया कि प्रशांत तिवारी, नबी बक्स समेत तीन लोगों के विरुद्ध रंगदारी की तहरीर सौंपी है। आरोप लगाया है कि तीनों ने 11 नवम्बर को डरा धमकाकर उससे 15 हजार रुपये की अवैध वसूली की है।

धम्म यात्रा से दिया विश्व शांति का संदेश

शहर में धम्म यात्रा का स्वागत करते लोग। अमृत विचार

आयोजित कार्यक्रम में अतिथि का स्वागत करते आयोजक।

संवाददाता, रायबरेली

आयोजन

- **सारनाथ से चलकर यात्रा पहुंची रायबरेली, जिले में हुआ स्वागत**

अमृत विचार। धम्मा लर्निंग सेंटर सारनाथ से चलकर धम्म यात्रा जिले में पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया गया। अध्यक्ष डॉ. चंदिमा महाथेरो की अगुवाई में सत्य, अहिंसा, विश्व शांति और मानवता के कल्याण का संदेश दिया गया। इस दौरान सभी ने सामूहिक रूप से त्रिरत्न वंदना ग्रहण किया।

यह धम्म यात्रा 20 नवंबर को सारनाथ (वाराणसी) से प्रारंभ हुई है, जो 14 दिसंबर को संकिसा (फर्रुखाबाद) में समाप्त होगी। यह यात्रा सलोन में प्रवेश किया। बुद्ध विहार मदनपुर, सम्राट अशोक नगर सकरा, भगत स्मृति बुद्ध विहार रुस्तमपुर होते रायबरेली शहर में रविवार को पहुंची। डॉ. भीमराव अम्बेडकर बुद्ध विहार समिति पंचशील नगर बालापुर समेत अन्य सामाजिक संगठनों के द्वारा धम्म यात्रा का जगह- जगह स्वागत किया गया। यह धम्म यात्रा शहर के मीरगंज, जैतूपुर, पटेल नगर, मथुरा का पुरवा, मालिक मऊ, जवाहर विहार कॉलोनी होते हुए त्रिपुला स्थित गंगा उत्सव लान पहुंची। चक्रवर्ती सम्राट अशोक चेतना संस्थान के संयोजन में धम्म देसना का आयोजन किया गया, जिसका संचालन भोला प्रसाद मौर्य ने किया। धम्म यात्रा में बौद्ध भिक्षु विमल बोधि स्थविर, डॉ कमल सील, जितेंद्र वर्धन समेत सैकड़ो बौद्ध भिक्षु साथ चल रहे हैं। इस दौरान इं. एसके आर्या, डॉ सुनील दत्त, राजेश कुरील, अनिल कांत, विमल किशोर सबरा, सूबेदार हरि प्रसाद शास्त्री, राजेन्द्र बौद्ध, मास्टर श्रीराम, आशा राम, रोहित प्रतिपक्षी, श्रीकान्त दिवाकर, शुभम् चौधरी, ललित कुमार, माया आर्या, विद्या आर्या, सुनीता अम्बेडकर मौजूद रहे।

श्रीमद् भगवत गीता जयंती समारोह का आयोजन, रायबरेली: मातृभूमि सेवा मिशन इकाई की ओर से शहीद स्मारक परिसर में श्रीमद् भगवत गीता जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ वृंदावन धाम से आए प्रख्यात श्रीमद् भागवत कथा वाचक डॉ. गोपाल शरण दास महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। उन्होंने कहा कि श्रीमद् भागवत केवल एक धर्मग्रंथ नहीं, बल्कि मानव जीवन का सनातन मार्गदर्शक शास्त्र है, जिसके द्वारा मनुष्य कर्तव्य, सत्य, नैतिकता और धर्म के पथ पर अग्रसर होता है। शहीद स्मारक परिसर स्थित श्री संकट मोचन धाम में दर्शन-पूजन के बाद महाराज ने बाल हनुमान की अलौकिक छवि के समक्ष श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान मंडल अध्यक्ष भगवत प्रताप सिंह, डॉ. श्रीप्रकाश मिश्रा, प्रदीप पांडेय, महेंद्र अग्रवाल, माया, संजू, पूनम, सुमन, रीना मिश्रा आदि रहीं।

तहसील स्तरीय विश्व दिव्यांग दिवस पर हुईं विभिन्न प्रतियोगिताएं

लालगंज (रायबरेली)। ब्लॉक संसाधन केंद्र में समग्र शिक्षा समेकित शिक्षा अभियान अंतर्गत तहसील स्तरीय विश्व दिव्यांग दिवस खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। लालगंज, सरेनी, खीरों से परिषदीय विद्यालयों में अध्यनरत 54 दिव्यांग बच्चों ने प्रतिभाग किया।

खंड शिक्षा अधिकारी राजीव कुमार ओझा ने दिव्यांग विद्यार्थियों की कार्य व्यवस्थाओं हेतु निरंतरता बना समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की सीख दी। मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी सरेनी वीरेंद्र नाथ द्विवेदी ने उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस प्रकार इस प्रकार के कार्यक्रमों से बच्चों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने में मदद मिलती है। दिव्यांग बच्चों की प्रतियोगिता में सीपी/अस्थि बच्चों के निशाना लगाओ प्रतियोगिता में सफिया प्रथम, अयान द्वितीय, प्रिंचू तृतीय, सुलेख प्रतियोगिता में अब्दुल्ला प्रथम, मानसी द्वितीय, शिवानी तृतीय स्थान हासिल किया।छूकर पहचानो दृष्टि दिव्यांग प्रतियोगिता में रोली प्रथम, मो. हसन द्वितीय, गुब्बारा युद्ध मानसिक बच्चों की प्रतियोगिता में एबी फैज प्रथम, शिवम द्वितीय, दीपक तृतीय, बैसाखी दौड़ अस्थि दिव्यांग बच्चों में अनामिका प्रथम, आर्यन द्वितीय, कुर्सी दौड़ मानसिक बच्चों में आनंद प्रथम, रेहान द्वितीय स्थान हासिल किया।

तमंचा लहराने का वीडियो वायरल

ऊंचाहार (रायबरेली) अमृत विचार। शादी कार्यक्रम के दौरान असलहा लहराकर डांस करते युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। वायरल वीडियो में एक युवक डीजे पर कुछ लड़कों के साथ असलहा लहराते डांस करते नजर आ रहा है। वायरल वीडियो कोतवाली क्षेत्र के नाथीपुर गॉव का बताया जा रहा है, जहां रविवार को आयोजित शादी कार्यक्रम में युवक बारात आया हुआ था। कोतवाल अजय कुमार राय ने बताया कि वायरल वीडियो के आधार पर युवक की तलाश की जा रही है।

किसान हत्याकांड में एसपी से मिले परिजन, एक और नाम बढ़ाने की मांग

संवाददाता, महराजगंज, (रायबरेली)

एसपी कार्यालय में ज्ञापन देने पहुंचे पीड़ित परिजन। अमृत विचार

- **स्थानीय पुलिस की कार्रवाई पर उठाए सवाल, चुनाव को लेकर रंजिश का आरोप**

अमृत विचार। चंदापुर थाना क्षेत्र के ओया गांव में नलकूप पर सो रहे किसान समरजीत सिंह उर्फ विनीत सिंह की हत्या के मामले में सोमवार को मृतक के बड़े भाई अमरदीप सिंह उर्फ पिंकू ने पुलिस अधीक्षक से मिलकर एक और आरोपित का नाम बढ़ाने की मांग की है। पुलिस अधीक्षक को दिए गए शिकायती पत्र में मृतक के भाई अमरदीप सिंह ने बताया कि 25 नवंबर की सुबह उसके भाई की हत्या की जानकारी उसके खेतों में काम करने वाले मजदूर सुग्गू से हुई तो उसने आनन-फानन घटना की जानकारी पुलिस को दी। भाई की हत्या के कारण व सुध-बुध खो बैठा था। इस दौरान मौके पर पहुंची पुलिस ने उससे जानकारी ली तो उसने 22 नवंबर को उसके भाई समरजीत उर्फ विनीत सिंह के साथ प्रांजुल यादव के साथ हुई कहासुनी व मारपीट में शामिल कई नाम बताए थे।

उन्होंने बताया कि घटना के बाद शव के अंतिम संस्कार के पहले भी उसने विजय प्रकाश यादव का भी नाम बताया था। पुलिस ने भी नाम बढ़ाने का आश्वासन देते हुए शव का अंतिम संस्कार करवा दिया। जबकि अबतक विजय प्रकाश यादव फरार चल रहा है। स्थानीय पुलिस से उसकी जान पहचान होने से उसके खिलाफ कोई कार्रवाई नही की गई। इसके अलावा पंचायत चुनाव में सामान्य सीट पर मेरा भाई समरजीत उर्फ विनीत सिंह भी दावेदार था। जिसके कारण भी विजय प्रकाश यादव ने कई बार दबाव बनाया था कि वह पंचायत चुनाव में दावेदारी न करे। मेरे भाई विनीत से चुनाव लडने से लेकर कई बार कहासुनी भी हुई थी। मेरे भाई की हत्या के मामले में स्थानीय पुलिस से जांच न करवाकर क्राइम ब्रांच से जांच करवाई जाए। जिससे वास्तविक आरोपियों पर कठोर कार्यवाही की जा सके। मामले में पुलिस अधीक्षक डॉ यशवीर सिंह ने निष्पक्ष कार्यवाही का आश्वासन दिया है।

आयोजन | **प्रदेश सरकार के मंत्री ने बिजली बिल राहत योजना का किया शुभारम्भ**

उपभोक्ताओं की समस्याओं का करें निस्तारण : ऊर्जा मंत्री

संवाददाता, ऊंचाहार (रायबरेली)

लोगों की शिकायतें को सुनते ऊर्जा मंत्री एके शर्मा, साथ में विधायक डॉ. मनोज कुमार।

अमृत विचार। कस्बे के बिजली घर पर प्रदेश सरकार के ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने बिजली बिल राहत योजना का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद उपभोक्ताओं को इस योजना से मिलने वाले लाभ की जानकारी दी। कार्यक्रम में मौजूद क्षेत्रीय विधायक डॉ. मनोज कुमार पांडेय व बिजली विभाग के अधिकारियों ने मंत्री का स्वागत किया। वहीं उपभोक्ताओं की शिकायत पर मंत्री ने अधिकारियों को उनकी समस्याओं का निस्तारण करने के निर्देश दिए।

सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में ऊर्जा व नगर विकास मंत्री कस्बे के बिजली घर पहुंचे, जहां पुलिसकर्मियों ने गॉर्ड ऑफ ऑनर देकर उनका स्वागत किया। विधायक डॉ. मनोज कुमार पाण्डेय ने बिजली विभाग की योजना के बारे मे मौजूद उपभोक्ताओं को जानकारी दी और स्थापित होने का 132 केवीए के नये बिजली घर के शिलान्यास कार्यक्रम के लिए मंत्री को आमंत्रित किया। ऊर्जा मंत्री ने कहा कि आज से योजना का शुभारंभ किया गया है, जो तीन महीने चलेगी। पहले महीने में बकायदारों के लिए 100 फीसदी ब्याज माफी, मूलधन में 25 फीसदी, बिजली चोरी के मामले में 50 फीसदी और किश्त के माध्यम से भी उपभोक्ताओं को योजना का लाभ मिलेगा।

ऊर्जा मंत्री के कार्यक्रम की जानकारी मिलने पर बड़ी संख्या में विभाग की कार्यशैली से परेशान उपभोक्ता शिकायत लेकर मंत्री के पास पहुंच गए। इस पर नाराज होकर उन्होंने अधिकारियों से कहा कि हमारे पीछे आने की जरूरत नहीं है, यहां बैठकर समस्याओं का निस्तारण करें। इस मौके पर मध्यांचल विधुत वितरण निगम की प्रबन्ध निदेशक रिया केजरीवाल, बीजेपी नेता अभिलाष चन्द्र कौशल आदि मौजूद रहे।

विद्युत कैंप का हुआ आयोजन

सरेनी, अमृत विचार। बिजली बिल राहत योजना के तहत रसूलपुर गांव में विद्युत कैंप लगाया गया। अवर अभियंता देवेंद्र कुमार ने बताया कि विद्युत कैंप के प्रथम चरण में जमा करने वाले उपभोक्ताओं को सौ प्रतिशत ब्याज में छूट, उपभोक्ता के मूलधन में भी 25 प्रतिशत छूट व दूसरे चरण में जमा करने वाले उपभोक्ताओं को ब्याज में सौ प्रतिशत छूट प्रदान की जाएगी। इसके अलावां मूलधन में 20 प्रतिशत व तृतीय चरण में जमा करने वाले उपभोक्ताओं को सौ प्रतिशत ब्याज में छूट और मूलधन में 15 प्रतिशत छूट मिलेगी। कैंप में कई विद्युत उपभोक्ताओं ने बकाया बिल जमा कर इसका लाभ उठाया। उपखंड अधिकारी अतुल कुमार ने उपभोक्ताओं से योजना का लाभ उठाने की अपील की है।

विद्युत कैंप में मौजूद अधिकारी व उपभोक्ता।

यूपी सिविल सर्विसेज फुटबाल टीम में संजय का चयन

संवाददाता, रायबरेली

अमृत विचार। सिंचाई विभाग के कार्यवाहक प्रशासनिक अधिकारी संजय कुमार ने एक बार फिर जिले का मान बढ़ाया है। उनका चयन अखिल भारतीय सिविल सर्विसेज पुरुष फुटबॉल टीम में हुआ है। इस टीम में उत्तरप्रदेश जिले से 22 सदस्य चुने जाते हैं, जिनमें रायबरेली के संजय कुमार का शामिल होना गर्व की बात है। यह राष्ट्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता 8 दिसम्बर से 15 दिसंबर तक सांताक्रुज फुटबॉल ग्राउंड, एथलेटिक्स स्टेडियम, गोवा में आयोजित की जाएगी।

उत्तर प्रदेश से चुने गए 22 खिलाड़ियों में उन्नाव के जिलाधिकारी गौरांग राठी का नाम भी शामिल है। संजय कुमार पिछले लगभग 25 वर्षों से उत्तर प्रदेश सिविल सर्विसेज फुटबॉल टीम का निरंतर प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनके चयन पर अधिशासी अभियंता रमाशंकर राय, विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, क्रीड़ा अधिकारी पुरुषोत्तम, रज्जन यादव, राजेंद्र पाल, राकेश सिंह, दिलीप सिंह, अशोक सिंह, अनिल यादव और आशुतोष द्विवेदी ने खुशी जताई है।

प्रशासनिक अधिकारी संजय कुमार।

न्यूज ब्रीफ

ई-रिक्शा पलटने से 5 महिलाएं घायल

संग्रामपुर (अमेठी) : थाना संग्रामपुर क्षेत्र के अमेठी- कालिकन मार्ग निर्माणाधीन मालती नदी पुल के पास वैकल्पिक रास्ते पर ई-रिक्शा पलटने से 5 महिला घायल हो गईं। घायल महिलाओं को सामुदायिक स्वास्थ्य संग्रामपुर लाया गया जहां प्राथमिक उपचार किया गया। घायलों के अनुसार आज हम लोग ई-रिक्शा से संग्रामपुर क्षेत्र के करनाईपुर गांव से कालिकन धाम दर्शन करने आ रहे थे। टिकरिया भवसिंहपुर के पास वैकल्पिक पुल पर ई-रिक्शा पलट गया जिससे हम लोग घायल हो गए। डॉ संतोष सिंह ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र संग्रामपुर में ही चारों घायलों का इलाज करके दवा देकर उन्हें घर भेज दिया गया। बताया घायल महिलाओं का नाम करिश्मा, अनामिका, मीनाक्षी, कलावती व मोहिनी था।

आप के पदाधिकारियों ने दिया इस्तीफा

अमेठी : सोमवार को आम आदमी पार्टी अमेठी के कई वरिष्ठ पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने सामूहिक रूप से पार्टी से इस्तीफ़ा देते हुए अपना त्यागपत्र निर्वतमान प्रदेश अध्यक्ष सभाजीत सिंह को भेज दिया। सामूहिक इस्तीफा देने वालों में जिलाध्यक्ष हरीशंकर जायसवाल, जिला महासचिव धर्मेन्द्र शुक्ल एडवोकेट, जिला कोषाध्यक्ष संदीप कसौंधन, जिला संगठन मंत्री शिवम प्रजापति, जिला उपाध्यक्ष पवन कुमार सरोज, नगर अध्यक्ष घनश्याम सोनी, नगर मंत्री मो. सरदार, व्यापार प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष सतीश विश्वकर्मा, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष मुनव्वर अली शैफी, प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष राम निरंजन कोरी, महिला प्रकोष्ठ जिला महासचिव कविता कश्यप, महिला प्रकोष्ठ जिला उपाध्यक्ष श्रीमती लक्ष्मी देवी, नगर मंत्री शलीम राइन, नगर संगठन मंत्री रियाज बौफी, नगर उपाध्यक्ष तौफीक शामिल रहे।

जिलाबदर आदेश पर जताया विरोध

अमेठी : जिला पंचायत सदस्य राजेंद्र भारती (वार्ड 13, सिंहपुर) को गुंडा नियंत्रण अधिनियम के तहत छह माह के लिए जिलाबदर किए जाने के आदेश के खिलाफ सोमवार को व्यापक विरोध-प्रदर्शन हुआ। यह आदेश अपर जिलाधिकारी द्वारा 13 नवंबर को जारी किया गया था। सुहेलदेव आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष योगेश पासी सहित कई सामाजिक संगठनों ने जिलाधिकारी को भेजे गए पत्र में आरोप लगाया कि राजेंद्र भारती ने क्षेत्र में सड़क निर्माण में हुए कथित भ्रष्टाचार की शिकायत उजागर की थी। इसके बाद ही उनके खिलाफ मुकदमे दर्ज कराए गए। संगठनों का कहना है कि इन्हीं प्रकरणों के आधार पर उन्हें जिलाबदर किया गया है, जबकि मामले तथ्यों पर आधारित नहीं हैं। जिलाबदर आदेश के विरोध में पासी समाज के लोगों और समर्थकों ने डीएम कार्यालय के सामने धरना दिया।

योग शिविर का हुआ आयोजन

अमेठी : क्षेत्र में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ. अब्दुल बारी और चिकित्सालय प्रभारी डॉ. अनामिका श्रीवास्तव के कुशल मार्गदर्शन में कंपोजिट विद्यालय धनी जलालपुर, गौरीगंज, अमेठी में एक विशेष प्रात :कालीन योग शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में योग प्रशिक्षक राजेश कुमार दुबे और योग सहायक राजमोहन ने स्कूली बच्चों को न केवल विभिन्न योगासनों का अभ्यास कराया, बल्कि उन्हें ध्यान और जीवनशैली से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में भी जागरूक किया। प्रशिक्षकों ने ताड़ासन, तिर्यक ताड़ासन, वृक्षासन, अर्ध चक्रासन, कुर्सी आसन, त्रिकोणासन आदि योग कराया।

चिकित्सक व सुविधाओं की कमी से जूझ रहे मरीज

सीएचसी भेंटुआ में स्वास्थ्य सेवाएं बदहाल, रोगियों को लिखी जा रहीं बाहर की दवाएं और जांच

अरविंद श्रीवास्तव/बृजेश मिश्रा, अमेठी

अमृत विचार। भेंटुआ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की स्वास्थ्य सेवाएं गंभीर संकट से जूझ रही हैं, जिसका सीधा खामियाजा गरीब और जरूरतमंद जनता को उठाना पड़ रहा है। केंद्र में आवश्यक विशेषज्ञ डॉक्टरों, विशेषकर बाल रोग विशेषज्ञ और महिला रोग विशेषज्ञों व सुविधाओं की कमी है, जिससे मरीजों को उचित और समय पर इलाज नहीं मिल पा रहा है।

सीएचसी भेंटुआ में अधीक्षक डॉ. अभिमन्यु वर्मा के रूप में कार्यरत हैं, लेकिन अस्पताल में चिकित्सक व स्टाफ की कमी और आवश्यक डॉक्टरों के अभाव के कारण स्वास्थ्य सेवाएं बुरी तरह बाधित हैं। स्थानीय लोग बेहद चिकित्सा के लिए परेशान हैं, क्योंकि उन्हें प्राथमिक उपचार भी सुगमता से उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। सीएचसी में तकनीकी और स्टाफ समस्याओं के चलते संचालन का विस्तार नहीं हो पा रहा है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर बड़ा प्रश्नचिह्न लग गया है।

कई मरीजों ने अधीक्षक डॉ. अभिमन्यु वर्मा के समक्ष दिखाने के बाद एक गंभीर शिकायत दर्ज की है कि उन्हें कई आवश्यक दवाएं बाहर से खरीदने के लिए कहा जाता है। इससे मरीजों पर एक अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ता है। सूर सती, गौरी मिश्र का पुरवा की निवासी ने बताया कि डॉक्टरों ने उन्हें दो दवाएं बाहर से लाने को कहा, क्योंकि वे स्टॉक में नहीं थीं। वहीं जीरा देवी, काशीपुर की रहने वाली एक गरीब महिला ने बताया कि उन्हें भी एक दवा बाहर से लेने को कहा गया है, लेकिन पैसे की कमी के कारण वह बाहर से दवा नहीं खरीद पा रही हैं। इसी प्रकार किरण देवी (काशीपुर), शिवकुमारी (लोनियापुर), गोकुल प्रसाद (अनुका पुरवा), देवी प्रसाद (भेंटुआ), और गोकुल प्रसाद यादव (सरुवां) सहित दर्जनों मरीजों ने आरोप लगाया है कि उन्हें जांच और दवा दोनों बाहर से लिखी गई हैं, जिससे उन्हें इलाज कराने में भारी आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

स्थानीय ग्रामीणों ने स्वास्थ्य विभाग और उच्च अधिकारियों से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। उनकी प्रमुख मांग है कि बाल रोग विशेषज्ञ और महिला रोग विशेषज्ञ की नियुक्ति तुरंत की जाए, ताकि मरीजों को समय पर और उचित इलाज मिल सके और उन्हें आर्थिक बोझ न उठाना पड़े।

चिकित्सक की खाली पड़ी कुर्सी।

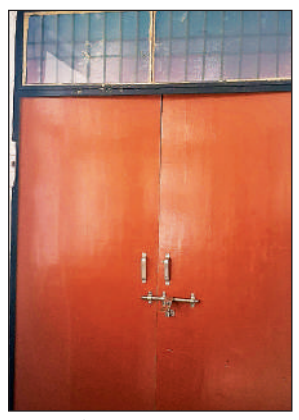

अस्पताल में बंद वार्ड। अमृत विचार

धूल खाती एक्स-रे मशीन और बंद वार्ड: स्वास्थ्य केंद्र में एक्स-रे मशीन टेक्नीशियन के अभाव में धूल खाती मिली, जो दर्शाती है कि आवश्यक तकनीकी सुविधाएं होने के बावजूद उनका उपयोग नहीं हो पा रहा है। इसके अलावा वार्ड भी बंद मिला, जिससे इनडोर मरीजों के इलाज की व्यवस्था पर सवाल खड़े होते हैं।

घंटों इंतजार करते दिखे मरीज, डॉक्टर नदारद

सीएचसी की ओपीडी के बाहर मरीजों की लगी कतार। अमृत विचार

ओपीडी (आउट पेशेंट डिपार्टमेंट) से डॉक्टर नदारद दिखे और सैकड़ों मरीज चिकित्सक को दिखाने के लिए घंटों लाइन में इंतजार करते रहे। एक डॉक्टर पवन सिंह नाइट ड्यूटी पर थे, जबकि डॉ. अभिमन्यु वर्मा, अधीक्षक एक मीटिंग में व्यस्त थे। डॉक्टरों की सीट पर अनुपस्थिति के कारण मरीज काफी परेशान दिखे।

विशेषज्ञ डॉक्टरों की भारी कमी: सीएचसी भेंटुआ, नवगिरवा, सुल्तानपुर जनपद की सीमा से जुड़ा हुआ है, जिसके कारण दोनों जनपदों से बड़ी संख्या में मरीज यहां आते हैं। हालांकि, विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी के कारण मरीजों को मायूस होकर वापस लौटना पड़ता है। यहां पर महिला रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ, अस्थि रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों के न होने से मरीज गंभीर रूप से परेशान हैं और उन्हें मजबूरी में निजी चिकित्सालयों का रुख करना पड़ रहा है।

क्या बोले जिम्मेदार

वहीं चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अभिमन्यु वर्मा ने समस्याओं को स्वीकार किया। उन्होंने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेंटुआ में केवल दो ही चिकित्सक हैं। जबकि महिला रोग, बाल रोग, अस्थि रोग और सर्जन के पद कई वर्षों से रिक्त पड़े हैं। इस संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी, अमेठी को पत्राचार भी किया गया है। वहीं जब उनसे ओपीडी में घंटों लाइन में लगे मरीजों के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने डॉक्टरों की कमी होना मुख्य कारण बताया है।

दो शिक्षिकाओं के विवाद की आड़ में छात्राओं का उत्पीड़न

संवाददाता, शुकुल बाजार (अमेठी)

- पीड़ित छात्राओं ने स्थानीय पुलिस से की शिकायत
- बीएसए ने दोनों शिक्षिकाओं का कर दिया स्थानांतरण

अमृत विचार। कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय, शुकुल बाजार में शिक्षिकाओं और प्रधानाचार्या के बीच चल रहा विवाद अब छात्राओं पर भी असर डालने लगा है। विद्यालय की नंदिनी सरोज, अंशी शुक्ला, शिवानी, दिव्यांशी, आर्या और रोशनी सहित कई छात्राओं ने बाजार शुकुल थाने में तहरीर देकर मानसिक उत्पीड़न की शिकायत की है। वहीं मामला संज्ञान में आने के बाद बीएसए ने दोनों शिक्षिकाओं का स्थानांतरण कर दिया है।

छात्राओं ने आरोप लगाया है कि पूर्व में शिक्षिका अर्चना बोध और रंजना देवी का प्रधानाचार्या से विवाद हुआ था। इस मामले की जांच के दौरान खंड शिक्षा अधिकारी बाजार शुकुल शैलेंद्र शुक्ला और अमेठी बीईओ ने छात्राओं से बयान लिए थे। छात्राओं के अनुसार उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर प्रधानाचार्या का पक्ष रखा था, जिसके बाद से उन्हें लगातार धमकियां दी जा रहीं हैं। जहां कुछ सहपाठी छात्राएं उनका मानसिक एवं सामाजिक उत्पीड़न कर रहीं हैं। छात्राओं ने आरोप लगाया कि उनकी वस्तुएं छिपाई जातीं हैं और समूह गतिविधियों से उन्हें अलग किया जाता है। उनके खिलाफ अपमानजनक माहौल तैयार किया जा रहा है। आवासीय विद्यालय में होने के कारण वे स्वयं को असुरक्षित महसूस कर रही हैं। वहीं वार्डेन पद पर अंजू सिंह के स्थान पर नीतू सिंह के कार्यभार संभालने के बाद से विवाद बढ़ने की बात भी छात्राओं ने कही है। तहरीर मिलने के बाद बाजार शुकुल पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

हाथों मे तहरीर लिए छात्राएं व मौजूद उनके परिजन। अमृत विचार

बता दें कि इस मामले की शिकायत बीएसए तक से की गई। जिसकी जांच के लिए बीएसए ने दो सदस्यीय टीम गठित की थी। जिसमें खंड शिक्षा अधिकारी अमेठी व खंड शिक्षा अधिकारी बाजार शुकुल शामिल थे। वहीं खंड शिक्षा अधिकारी शैलेंद्र कुमार शुक्ला ने स्कूल में कोई अनहोनी न हो इसके लिए पूरे लदई प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका रंजना देवी तैनाती की थी। उधर, थाना अध्यक्ष विवेक वर्मा ने बताया कि विद्यालय में उप निरीक्षक साबिर अली को भेजा गया है। छात्राओं का बयान दर्ज करते हुए जांच की जा रही है। परंतु विभागीय टीम द्वारा जांच भी संज्ञान में लेते हुए कार्रवाई की जाएगी।

वहीं इस मामले में बेसिक शिक्षा अधिकारी संजय तिवारी ने बताया कि नीतू श्रीवास्तव को तिलोई, अर्चना बोध को बहादुरपुर, रंजना देवी को सिंहपुर स्थानांतरित किया गया है। मामले की जांच रिपोर्ट आने के बाद व दोष सिद्ध होने पर संबंधित के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई भी की जाएगी।

नवविवाहिता का शव फंदे से लटका मिला, हड़कंप

संवाददाता, अमेठी

अमृत विचार। पीपरपुर थाना क्षेत्र के दुर्गापुर बाजार में सोमवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब घर के एक कमरे में नवविवाहिता का शव संदिग्ध परिस्थितियों में फांसी के फंदे से लटका मिला। मृतका की पहचान सपना पत्नी रविंद्र के रूप में हुई है।

जानकारी के मुताबिक करीब ढाई साल पहले उसकी शादी हुई थी और उसकी तीन माह की एक बच्ची भी है। सुबह काफी देर तक कोई आहट न मिलने पर परिजन जब कमरे की ओर गए। दरवाजा खुला था और अंदर सपना दुपट्टे के सहारे फंदे से लटकी मिली। यह दृश्य देखकर परिवार के लोग चीखने-चिल्लाने लगे। थोड़ी ही देर में ग्रामीणों की भीड़ मौके पर इकट्ठा हो गई। सूचना मिलते ही पीपरपुर पुलिस मौके पर पहुंची और पूरी स्थिति का निरीक्षण किया। पुलिस ने शव को कब्जे में लिया और पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

अनियंत्रित वाहन की टक्कर से युवक की मौत

संवाददाता, अमेठी

अमृत विचार। मुंशीगंज क्षेत्र में सोमवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया, जिसमें एक अनियंत्रित वाहन की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। हादसा चंदौकी स्थित आरो प्लांट के पास हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक बोलेरो तेज रफ्तार में थी और अचानक नियंत्रण खोने के बाद सामने से आ रही बाइक को जोरदार टक्कर मार दी।

हादसे में टक्कर में बाइक सवार राकेश पुत्र राम अवतार अग्रहरि, निवासी ग्राम चंदौकी, गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने तत्काल 108 एंबुलेंस को सूचना दी, जिसके बाद राकेश को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुसाफिरखाना पहुंचाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद हालत नाजुक होने पर डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रेफर किया, परिजन बेहतर इलाज के लिए तत्काल राकेश को लेकर सुल्तानपुर गए जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर हुआ हादसा, एक की मौत, शुकुल बाजार: पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर सोमवार सुबह बाराबंकी के सुबेहा के पास अज्ञात वाहन की चपेट में कार आ गई। हादसे में कार सवार बलिया के रहने वाले राजेश कुमार (33), नसीम अहमद (45), गौतम वर्मा (31) और जोसेफ राय (38) घायल हो गए। सभी को सीएचसी बाजार शुकुल पहुंचाया गया। जहां डॉक्टर ने राजेश कुमार को मृत घोषित कर दिया। नसीम को लखनऊ ट्रॉमा सेंटर और गौतम वर्मा को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जोसेफ राय सीएचसी में भर्ती हैं।

कमरे का ताला तोड़ कर घर में की चोरी

संग्रामपुर (अमेठी), अमृत विचार। थाना संग्रामपुर क्षेत्र के चण्डेरिया निवासी दौलतराम पुत्र महराजदीन ने थाना संग्रामपुर में लिखित तहरीर दी कि रविवार की शाम लगभग 6 से 7 के बीच कुछ अज्ञात चोरों ने मेरे घर की दीवार फांद कर घर के अंदर कमरे का ताला तोड़ रखें अलमारी में नकदी सहित जेवरात चोरी कर ले गये। पीड़ित ने बताया कि मैं एक दुकान चलाता हूं दुकान बंद करने के बाद जब घर पहुंचा तो देखा कमरा खुला पड़ा है समान बिखरे हुए हैं। कमरे के अंदर रखी अलमारी, बड़ा संदूक, छोटा संदूक सभी का ताला तोड़ कर 5000 रुपये नकदी व सोने-चांदी के आभूषण अज्ञात चोर उठा ले गए हैं। पीड़ित ने बताया कि चोरों को पुलिस प्रशासन का भय नहीं रह गया है यही कारण है कि क्षेत्र असुरक्षित महसूस कर रहा है।

ऑनलाइन उपस्थिति के विरोध में सचिवों ने किया प्रदर्शन

ब्लॉक मुख्यालय पर प्रदर्शन करते सचिव।

संवाददाता, शुकुल बाजार (अमेठी) अमृत विचार। ग्राम पंचायत सचिवों ने ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करने के शासनादेश का विरोध तेज कर दिया है। सोमवार को शुकुल बाजार ब्लॉक मुख्यालय पर सचिवों ने चरणबद्ध आंदोलन की शुरुआत की। प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर जिला संगठन मंत्री एवं ब्लॉक अध्यक्ष रवि यादव की अगुवाई में बड़ी संख्या में सचिव ब्लॉक कार्यालय पहुंचे और काली पट्टी बांधकर विरोध दर्ज कराया। सचिवों का कहना है कि आदेश पूरी तरह व्यवहारिकता के विपरीत है और फील्ड कर्मचारियों पर अनावश्यक दबाव डाला जा रहा है। सचिवों ने कहा कि वे शासन को अपनी समस्याओं से अवगत कराते रहेंगे और समाधान होने तक आंदोलन जारी रहेगा। प्रदर्शन के दौरान सुरेश मिश्रा, सूरज पटेल, अमित कुशवाहा, नीरज, अमरनाथ तिवारी, अमित रावत, रितिका जायसवाल, कामिनी गिरी आदि मौजूद रहे।

सचिवों ने काली पट्टियां बांधकर जताया विरोध

संग्रामपुर (अमेठी)। जिले के विकासखंड संग्रामपुर मुख्यालय पर सोमवार को ग्राम पंचायत अधिकारी तथा ग्राम विकास अधिकारी समन्वय समिति के कर्मचारियों ने ऑनलाइन हाज़िरी लागू करने के आदेश के विरुद्ध काली पट्टियां बांधकर विरोध दर्ज कराया। विरोध-प्रदर्शन के दौरान सहायक विकास अधिकारी पंचायत लाल शशिकांत सिंह, ग्राम विकास अधिकारी एवं संगठन के ब्लॉक अध्यक्ष अजीत सिंह, ग्राम विकास अधिकारी मिथिलेश यादव, ग्राम विकास अधिकारी मिथिलेश द्वितीय, ग्राम पंचायत अधिकारी राधेश्याम सिंह, ग्राम पंचायत अधिकारी दीपक कुमार आदि उपस्थित रहे।

सचिव सहित वीडीओ ने किया प्रदर्शन

तिलोई (अमेठी)। सोमवार को बहादुरपुर ब्लॉक मुख्यालय पर ग्राम पंचायत सचिव के साथ ग्राम विकास अधिकारियों ने भी प्रदेशव्यापी क्रमिक सत्याग्रह आंदोलन के पहले दिन विरोध प्रदर्शन किया। दर्जनों सचिव ने काली पट्टी बांधकर विकास खंड परिसर में शांतिपूर्ण ढंग से नारेबाजी कर विरोध जताया हैं। यहां दिलीप कुमार सिंह, अनिल कुमार सिंह, दिलीप सिंह, प्रदीप पटेल, जितेंद्र बहादुर सिंह, रामअभिलाष आदि रहे।

एसआईआर पर बीएलओ से हर दिन समीक्षा: बीडीओ

संवाददाता, सरेनी (रायबरेली)

अमृत विचार। खंड विकास अधिकारी प्रमोद कुमार यादव ने एसआईआर को लेकर लगातार निगरानी कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने कई कैंप का निरीक्षण किया। बीएलओ से जानकारी ली।

बीडीओ ने बताया कि मतदाता पुनरीक्षण विशेष अभियान में बीएलओ, सुपरवाइजर लगाए गए हैं। बीएलओ को प्रतिदिन की रिपोर्ट ली जाती है। फॉर्म ग्रामीणों को वितरित कर भरवाने के लिए निर्देश दिए गए हैं। बीएलओ को लगातार बैठकों में बताया जा रहा है कि पारदर्शिता के साथ एसआईआर फॉर्म को भरवाने का कार्य सुनिश्चित करें, ताकि कोई मतदाता वंचित न रहे। मतदाता सज्जन, अभिषेक, रतन लाल ने बताया कि बीएलओ पूजा ने गांव में भ्रमणकर लोगों के फॉर्म भर रही हैं। रघुवीर, मायावती, पूजा आदि बताया कि एसआईआर काम तेजी से किया जा रहा है। प्रमोद कुमार, अविनाश कुमार सिंह मतदाताओं से संपर्क कर फॉर्म भरवाने का काम कर रहे हैं। साथ में ही नोडल अधिकारी सुधाकर सिंह ने बताया कि बीएलओ कार्य की समीक्षा लगातार की जा रही है।

एसआईआर फार्म भरवाते बीएलओ।

शिवगढ़ में अभियान चलाकर भरे गए एसआईआर फार्म, शिवगढ़: नगर पंचायत के वार्ड संख्या एक दामोदर खेड़ा में बीएलओ आंगनबाड़ी कार्यकत्री नीलम ने सहयोगी शिक्षामित्र बीनू सिंह के साथ घर-घर जाकर एसआईआर फार्म भरने का कार्य किया। इस दौरान प्राथमिक विद्यालय शिवली के प्रधानाध्यापक हरिकेश सिंह एवं सहायक अध्यापिका माया जायसवाल भी उनका सहयोग किया। दोनों शिक्षकों ने बीएलओ टीम का सहयोग किया। इस मौके पर कोटेदार रामकुमार, जगजीवन भारती आदि मौजूद रहे।

सिटी डायरी

मेधावी छात्र-छात्राएं सम्मानित

स्कूल में सम्मानित किए गए बच्चे व मौजूद अतिथि।

शिवगढ़ (रायबरेली) अमृत विचार। क्षेत्र के राजकीय बालिका हाईस्कूल ओसाह में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि राजकीय पॉलिटेक्निक ओसाह के प्राचार्य सर्वेश कुमार तिवारी रहे। समारोह में वर्ष 2025 की बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं के साथ ही विभिन्न गतिविधियों तथा सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। यहां पर मेधावी छात्राओं को प्रशस्ति पत्र एवं ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। राजकीय पॉलिटेक्निक के शिक्षक फाजिल अहमद, सीएचसी के स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी डॉ. जयराम यादव व ओसाह ग्राम प्रधान मनोज त्रिवेदी ने छात्र-छात्राओं का उत्साह वर्धन किया। इस मौके पर प्रधानाचार्य डॉ. वंदना राय, आराधना त्रिवेदी आदि लोग मौजूद रहे।

कार्यशाला में मौजूद चिकित्सक व अन्य।

कार्यशाला का किया गया आयोजन

रायबरेली, अमृत विचार। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) मुंशीगंज में नाक, कान, गला विभाग की तरफ से राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें पूरे भारत से शिक्षाविद, विशेषज्ञ और प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला का शुभारंभ निदेशक प्रो. डॉ. अमिता जैन दीप प्रज्वलित कर किया। उन्होने भारत सरकार के सुगम और तकनीकी रूप से उन्नत स्वास्थ्य सेवा के उद्देश्य के अनुरूप ईएनटी और न्यूरो-ओटोलॉजी सेवाओं के विकास के लिए संस्थान के समर्पण पर जोर दिया। ईएनटी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अनन्या सोनी व डॉ. अरिजीत जोतदार ने कहा कि वेस्टिबुलर रोगों के निदान और उपचार में नैदानिक दक्षता को बढ़ाना है। इस मौके पर डॉ. अमित केशरी, डॉ. अनीता भंडारी आदि मौजूद रहे।

कलश यात्रा में झांकी के साथ उपस्थित श्रद्धालु।

झांकी के साथ निकली कलश यात्रा

संग्रामपुर (अमेठी)। सोमवार को ग्राम सभा कसारा में मंगलवार से होनेवाली श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञानयज्ञ को लेकर आज कथा स्थल कसारा से मनमोहक झांकी के साथ कथा वाचक पूज्य संत किशोरी शरण की अगुवाई में भव्य कलशयात्रा निकाली गई। यह धार्मिक यात्रा कसारा मोड़-कुटीवा तिराहा-टिकरिया होते हुए कालिकन धाम पहुंची। यात्रा में सैकड़ों महिलाओं का समूह पीला कलश सिर पर लिए यात्रा को आकर्षित बना रहा था। कालिकन दर्शन के बाद यह धार्मिक यात्रा कसारा पंडाल पहुंची। इस दौरान सतीश पांडेय, अनूप पाण्डेय, अनुपम पाण्डेय, आशीष पाण्डेय सहित अधिक संख्या में महिलाएं शामिल हुईं।

आयोजन | बीएमपीएस लालगंज में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद स्पर्धा का शुभारंभ

प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ियों को किया गया सम्मानित

संवाददाता, लालगंज (रायबरेली)

अमृत विचार। बक्शी मेमोरियल पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद स्पर्धा 2025 का उद्घाटन प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह और प्रबंध निदेशक सुनील सिंह के द्वारा किया गया। खेल प्रांगण में बीएमपीएस खेल पताका फहराकर व सफेद कबूतर की जोड़ी को कोतवाल प्रमोद सिंह और प्रबंध निदेशक सुनील सिंह ने छोड़कर मैत्री और शांति का संदेश दिया। पहले दिन नर्सरी व प्राइमरी के बच्चों ने अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। फ्रॉग रेस, सैक रेस, लेमन स्पून रेस में छोटे बच्चों ने जबरदस्त प्रदर्शन कर पदक हासिल किया। 50 मीटर, 100 मीटर की बालक-बालिका रेस में भी खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को विद्यालय प्रबंधन की ओर से पदक व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। समापन पर दो दिसंबर को जूनियर और सीनियर वर्ग के छात्र-छात्राएं खेल प्रतिभा में प्रदर्शन करेंगे।

इस अवसर पर प्रबंधक शांतनु सिंह, प्रशासनिक सचिव सिद्धार्थ सिंह, प्रधानाचार्य अभिषेक रंजन, ओम शिव यादव, बीएन यादव, अनुराधा पांडे, प्रीति श्रीवास्तव, अर्चना सिंह, मृत्युंजय सिंह, श्रवण तिवारी, शिरीष तिवारी, सुधीर सिंह, विनोद चौधरी, सीमा सिंह, ममता सिंह, विभा, सुनहरा, संगीत सिंह, सरिता सिंह, आस्था सिंह, संतलाल, यशबहादुर यादव आदि लोग रहे।

खिलाड़ियों को पुरस्कृत करते विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी शांतनु सिंह।

इंटर कॉलेज खेलकूद प्रतियोगिता में मौजूद अतिथि व बच्चे। अमृत विचार

तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ, खीरों: सोमवार से कस्बा खीरों के न्यू सरस्वती ज्ञान मन्दिर इण्टर कॉलेज में बच्चों की तीन दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता शुरू हो गई है। इसका शुभारम्भ प्रभारी निरीक्षक सन्तोष कुमार सिंह एवं विद्यालय के प्रबंधक बीडी चक्रवर्ती ने फीता काटकर किया। पहले दिन कक्षा 8 के बालक वर्ग की 100 मीटर दौड़ में अंकित कुमार (प्रथम), कृष्ण सिंह (द्वितीय) तथा आदित्य (तृतीय) स्थान पर रहे। जबकि बालिका वर्ग में मानवी (प्रथम) नित्या जायसवाल (द्वितीय) एवं शैलजा सिंह ने (तृतीय) व कक्षा 7 बालक वर्ग में शुभम (प्रथम), अंशुमान सिंह (द्वितीय) सीमांत सिंह ने (तृतीय) व बालिका वर्ग में स्नेहा सिंह (प्रथम), श्रुति सिंह (द्वितीय) तेजल राजपूत (तृतीय) एवं कक्षा 6 के बालक वर्ग में आर्यन यादव (प्रथम), यश (द्वितीय), नैतिक गुप्ता ने (तृतीय) तथा बालिका वर्ग में आनवी (प्रथम), हिमांशी (द्वितीय) एवं शगुन ने (तृतीय) स्थान प्राप्त किया। इस मौके पर खेल शिक्षक आदित्य सिंह, अनूप मिश्रा, अनुग्रह मिश्रा, प्रधानाचार्य शिव मंगल सिंह, विजय कुमार शर्मा, कमल, अवधेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

प्रतिभागी बच्चों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि मुन्ना सिंह। अमृत विचार

खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

तिलोई (अमेठी)। युवा भारत कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वावधान में कलस्टर खंड स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें जिला युवा अधिकारी रश्मि शबनम गुप्ता के निर्देशन में तिलोई के जनता जनार्दन इंटर कॉलेज शंकरगंज में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख कृष्ण कुमार सिंह "मुन्ना सिंह", पूर्व एनवाईवी राघवेन्द्र प्रताप सिंह, प्रधानाचार्य वैभव मिश्र की उपस्थित में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व प्रधानाचार्य राजेंद्र प्रताप सिंह एवं संचालन कृष्ण मोहन सिंह ने किया।

अमृत विचार

मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

ज्ञान वह हथियार है जो हारने वाले को विजेता बनाता है। एक व्यक्ति को जीवन भर कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए।
–चाणक्य, राजनीतिज्ञ

चाहिए समग्र समाधान

उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम की समय-सीमा को निर्वाचन आयोग द्वारा एक सप्ताह बढ़ा दिया जाना केवल प्रशासनिक औपचारिकता नहीं, बल्कि उस दबाव की स्वीकारोक्ति भी है, जो इस अत्यंत विस्तृत प्रक्रिया पर शुरू से ही साफ दिख रहा था। मतदाता सूची पुनरीक्षण अपने आप में एक विशाल अभियान है। हर घर जा कर सत्यापन, नए मतदाताओं का पंजीकरण, मृत अथवा स्थानांतरित मतदाताओं का विलोपन और त्रुटियों का सुधार, जिसके लिए समय और संसाधनों की पर्याप्त आवश्यकता होती है। ऐसे में समय वृद्धि का यह निर्णय पूरे अभियान की गति, विश्वसनीयता और पारदर्शिता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालने वाला है। निर्वाचन आयोग की यह स्वीकारोक्ति कि कम समय सीमा जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं, बीएलओ और अधिकारियों के लिए भारी समस्या पैदा कर रही थी, अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह बात समझना कठिन नहीं कि उत्तर प्रदेश जैसा जनसंख्या और भौगोलिक विस्तार वाला राज्य किसी भी राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए एक अलग कार्ययोजना और अपेक्षाकृत अधिक समय की मांग करता है। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आयोग को यह पूर्वानुमान पहले क्यों नहीं था? क्या यह अदूरदर्शिता नहीं कही जाएगी कि इतनी बड़ी प्रक्रिया को शुरू से ही सीमित समय में बांधा गया और फिर दबाव बढ़ने पर पुनः संशोधन की जरूरत पड़ गई? समय वृद्धि का सबसे बड़ा लाभ निःसंदेह बीएलओ और आम मतदाताओं को मिलेगा। बीएलओ पर वर्षों से काम का अतिरिक्त बोझ, अपर्याप्त प्रशिक्षण तथा जटिल एसआईआर रिपोर्टिंग की बाध्यता लगातार मानसिक और शारीरिक तनाव बढ़ाती रही है। मुरादाबाद में एक बीएलओ की दुखद मृत्यु और विपक्ष के इस आरोप कि भारी दबाव के चलते 20 बीएलओ अब तक आत्महत्या कर चुके हैं, एक गंभीर चेतावनी है। इस स्थिति में निर्वाचन आयोग को केवल खंडन या औपचारिक बयान भर नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर कठोर सुधारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए। कार्यभार का संतुलित बंटवारा, तर्क संगत डेडलाइन, सुरक्षित कार्य-परिस्थितियां तथा मनोवैज्ञानिक सहायता जैसे कदम अत्यंत आवश्यक हैं।

आज भी मतदाता सूची में संशोधन अथवा नए मतदाता के रूप में पंजीकरण करना, कागजी फॉर्म हो या ऑनलाइन प्रक्रिया- आम लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण है। देश में आधार, पैन, पासपोर्ट और बैंकिंग जैसी सेवाओं का व्यापक डिजिटलीकरण हो चुकने के बाद निर्वाचन आयोग अगर इन नियामक संस्थाओं के डाटा का प्रामाणिक उपयोग कर एक सरल, एकीकृत सत्यापन प्रणाली विकसित करता, तो मतदाता पंजीकरण न केवल सहज होता, बल्कि पुनरीक्षण प्रक्रिया भी अधिक कुशल और लगभग त्रुटिरहित बन सकती थी। फिलहाल केवल एक सप्ताह की समयवृद्धि से यह उम्मीद कि यह प्रक्रिया पूरी तरह सटीक और त्रुटिरहित हो जाएगी, व्यावहारिक नहीं। इससे इतना भर होगा कि कार्यकर्ताओं पर तात्कालिक दबाव घटेगा और कुछ हद तक गुणवत्ता में सुधार संभव है। बीएलओ की आत्महत्याओं पर रोक के लिए केवल समय बढ़ाना पर्याप्त नहीं, कार्यप्रणाली की समग्र समीक्षा और मानवीय दृष्टिकोण से बदलाव आवश्यक है।

प्रसंगवश

मौसम का पूर्वाकलन व नैतिकता का सवाल

इस बार बहुत ज्यादा सर्दी पड़ने वाली है, ऐसी खबरें मीडिया-सोशल मीडिया पर तैर रही हैं। गलत सूचनाओं से न सिर्फ लोगों का जीवन बल्कि इससे बाजार भी प्रभावित होता है। आने वाला मौसम कैसा होगा, इसकी सटीक भविष्यवाणी कर पाना इतना आसान नहीं है। ला-नीना फिनॉमीना का विगत का प्रीडिक्शन चार्ट और इसके बाद का घटनाक्रम देखने से मालूम होता है कि इसमें भविष्याकलन के बाद असली प्रभाव तीन-चौथाई या मिश्रित रहा है, जिसमें इलाका अथवा प्रभावित क्षेत्र बदल गया। प्रीडिक्शन के बारे में बताने के लिए एथिकल गाइडलाइन्स का ध्यान रखना जरूरी है। इसके पश्चात-प्रभावों पर किसी की नज़र नहीं पड़ती।

इस बार भीषण शीत रहेगी या नहीं रहेगी, यह जो जनवरी महीना

रनबीर सिंह
विज्ञान लेखक

बताएगा, जिसमें अभी एक महीने बाद का समय है। जो होगा वह 15 दिसंबर 2025 से 15 जनवरी 2026 के बीच मालूम हो जाएगा। हिमालय और इससे परे सुदूर उत्तर में रूस और चीन के इलाकों, हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों और भारत के मैदानी इलाकों के मौसम संबंधी असली आंकड़े देखने के बाद भारत में ला-नीना के असर के प्रकट होने के बाद ही इस बारे में कुछ कहना उचित होगा।

अभी से कह देना कि इस बार बहुत सर्दी पड़ेगी, उचित नहीं है। इस बार की सर्दी की ऋतु में कड़ाके की ठंढ होने या असल में हाड़ कंपाने वाली सर्दी पड़ने और नॉर्दन मोस्ट लैटिट्युड्स में इसके असर के बारे में ताज़ा वेदर रिपोर्ट्स का इंतजार करना नैतिकता का तकाज़ा है। मौसम के अल्पकालीन मिजाज़ के बारे में एक आकलन के बारे में कह देना काफी नहीं है, बल्कि वह एकदम से सत्य जैसा नहीं दिखना चाहिए बल्कि संभावना जैसा होना चाहिए। मास-मीडिया में सामान्य संभावना को बढ़ा-चढ़ा कर, अलंकारयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए भय और रोमांच पैदा करना एक खबरनुमा टेक्स्ट को कथा-कहानी बना देता है। ब्लो-अप करने के प्रयास की इकॉनोमिक और सोशल कॉस्ट बहुत होती है। एथिक्स का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

मौसम के बारे में विदेश से आई सूचना को आधार बना कर वस्तुस्थिति को जस का तस भारतीय मीडिया में चस्पा करना उचित नहीं है, बल्कि लोकल एक्सपर्ट्स और साइंटिस्ट्स से जान लेना जरूरी होता है। खेद है कि ऐसी ख़बरों के बारे में भारत का मौसम विज्ञान विभाग कोई टिप्पणी डिफेमेशन से बचने के लिए नहीं करता। उनकी अपनी वेबसाइट पर भी विदेशी जानकारी चस्पा रहती है, जिस पर उनकी कोई टिप्पणी नहीं होती।

ला-नीना के बारे में जानकारी को कुछ-कुछ देर बाद अप-डेट किया जाता है, जिससे मध्य और पश्चिमी प्रशांत महासागर और तापमान और इसके ऊपर के मौसम के मिजाज़ पर 24X7 निगरानी की जा रही है। सतत् निगरानी से ही मालूम होता है कि हालात बुरे या सामान्य हो सकते हैं। विदेश की खबर में, जिसे अनेक भारतीय चैनल्स ने उठाया है कि ऊपर की हवा मे 'रिवर्स गीयर' लग गया है, वह पहले भी अनेक बार लग चुका है। पृथ्वी की सतह से ऊपर होने वाली एक विशाल मशीनरी का यह नियमित व्यवहार है, जिसमें पोलर एयर करेंन्ट्स के भूमध्य रेखा के ऊपर उमड़ना-घुमड़ना एक सामान्य चर्या होती है। अमेरिका संचालित नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के आंकड़ों के अनुसार, जिसे भारत मौसम विभाग का अनुमोदन भी प्राप्त है, हवाएं पश्चिमी से पूर्वी दिशा में तेजी से उलट रही हैं, जो सामान्य से दो-तीन महीना पहले हो रहा है। खासतौर से इसकी वजह से ला-नीना भी प्रभावित होगा।

खर्चीली शादियां दिखावे की आखिर इंतेहा क्या है!

अनिल त्रिगुणायत
लखनऊ

समय के साथ सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है। जो कल था वह अतीत। जो आज है वह समयानुकूल और संभावित कल ही भविष्य। परिवार, कुनबा, समुदाय व समाज की सोच में समयानुरूप बदलाव समीचीन भी। समुचित आय व धन प्रवाह ने बाजार की रूपरेखा भी परिवर्तित कर दी है, लेकिन भारतीय बाजार का अवलंब की मान्यता वाला मध्यम वर्ग जीवन के कुछ उद्देश्यों से कदाचित भटक सा गया है। नई पीढ़ी जिसने दिखावे को अपना 'जीवन दर्शन' मान लिया है। विशेषतया खर्चीली शादियों को, जो 'अंतहीन होड़' की ओर चल पड़ी है।

विवाह हमारी संस्कृति का अतिआवश्यक संस्कार माना जाता है, लेकिन वर्तमान में होने वाले शादी-विवाह एक संस्कार न होकर 'सेलिब्रेशन व फैशन' की भेंट चढ़ता दिख रहा है। वैवाहिक आयोजन आज पूर्णतया बाजारवाद की गिरफ्त में आ चुका है। टीवी सीरियल और सोशल माडिया के 'रील्स' में दिखाए जाने वाले वैवाहिक 'चोंचलेबाजी' आज अधिकांश घरों में देखने को मिल रही है। विवाह की रस्मों अर्थात हल्दी, मेहंदी, संगीत, जयमाला, सप्तपदी, फेरे व सिंदूर-दान आधुनिक दिखावे की भेंट चढ़ चुके हैं। ऐसे नितांत पारिवारिक आयोजनों को बाजार ने एक बड़ा इवेंट बना दिया है। वैवाहिक बंधन में बंधने के पूर्व प्री-वेडिंग व डेस्टिनेशन वेडिंग के नाम पर अंधाधुंध खर्च किया जाने लगा है। नृत्य-संगीत, महंगे ड्रेसेज, नाना प्रकार के व्यंजनों वाले लंच-डिनर और उपहारों के आदान-प्रदान से मध्यम वर्ग के 'पांव चादर से बाहर' हो रहे हैं।

समाज में दिखावे का जज्बा यह कि संबंधित परिवार कर्ज लेकर हैसियत से अधिक खर्च कर रहे हैं। अधिकांश गार्जियन तो अपने जीवन की पूरी जमा-पूंजी शादी के दिखावे में 'हवन' कर दे रहे हैं। दिखावटी विवाहोपरांत इस वर्ग में पारिवारिक कलह, बिखराव व भांति-भांति की परेशानियां घर कर जा रही हैं। कई परिवार तो कर्ज के दलदल में ऐसे धंस रहे, जहां से वे जीवनपर्यंत नहीं निकल पा रहे हैं। प्रतिष्ठा का प्रतीक बनती दिखावे वाली शादियां समाज के लिए 'नासूर' बनती जा रही हैं। सोशल मीडिया पर ट्रेंड करते वैवाहिक वीडियोज तो आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। ऐसा केवल शहरों में ही नहीं हो रहा, बल्कि अब गांवों में भी देखने को मिल रहा है।

स्मरण करें, 1970 के दशक की शादियां प्रायः परंपरागत ही होती थीं। उस दौर की शादियां आपसी प्रेम व सादगी का पर्याय मानी जाती थीं। शहरों में न तो रिसार्ट होते थे, न ही अनगिनत मैरेज हाल। अधिकांश वैवाहिक कार्यक्रम वधू पक्ष के घरों में या उसके आसपास टेंट लगाकर कम से कम खर्च में संपन्न हो जाया करते थे। अधिकांश वैवाहिक कार्यकम एक रात में ही संपन्न होते थे। हां, ग्रामीण क्षेत्रों में उस वक्त दो दिन के बरात का चलन अवश्य था, जिसमें वर-वधू पक्ष एक-दूसरे के प्रति आदर भाव और सहयोगात्मक रवैया अपनाते थे। रिश्तों में मर्यादा सर्वोपरि व अपनत्व का भाव स्तरीय था। कम खर्च में शादियां हो जाया करती थीं। वर-वधू के रिश्तों में स्थिरता होती थी, दांपत्य जीवन अनचाही है, मुश्किलों से परे दिखता था। वर्ष 1980 के दशक की शादियां औपचारिकता व भव्यता का मिश्रण थीं।

वर्तमान में होने वाली शादियां संस्कार नहीं, वरन इवेंट का स्वरूप धारण करती जा रही हैं। समाज में अनावश्यक दिखावे का प्रचलन बढ़ गया है। धनाढ्य वर्ग की तरह ही मध्यमवर्गीय भी उसी प्रकार का दिखावा कर अपने बच्चों की शादियां कर रहे हैं। ऐसी शादियों में तथाकथित 'इवेंट मैनेजरों' की तो चांदी हो गई है। वर-वधू को अनेकानेक रस्मों में कब और क्या करना है, वही निर्णय ले रहे हैं। अब अधिकांश वैवाहिक कार्यक्रम एक रात का न होकर दो से तीन दिन तक का हो गया है। हल्दी, मेंहदी, द्वारचार, जयमाल, फेरों व विदाई के मामलों में इवेंट मैनेजर ही निर्णायक भूमिका निभाते दिख रहे हैं।

वर-वधू का मेकअप, पहनावा, तात्कालिक रहन-सहन, इवेंट वाले ही तय कर रहे हैं। डेस्टिनेशन वेडिंग का चलन तो अत्यंत खर्चीला हो चला है। शादियों में लकदक डेकोरेशन व जानदार आतिशबाजी के बीच राजसी वैभव, कैटरिंग के पर्दों से लेकर बर्तन तक भव्यतम हो चले हैं। सोशल मीडिया ने तो सामान्य परिवारों के लोगों को मानसिक रूप से धनाढ्य वर्ग के समीप ला खड़ा किया है। आज का वर-वधू 'नामचीन सेलिब्रिटी' की भांति ही विवाह करने का सपना देखता है। शादी के मंडप को फिल्मी सेट सरीखा बनाने को लालायित वह भूल जा रहा कि उक्त सेलिब्रिटी स्वयं के कमाए धन से खर्चीली शादियां कर रहे, अपना शौक पूरा कर रहे हैं। ब्याजखोरों, बैंक्स से महंगे ब्याज पर धन उधार लेकर अपनी शादी नहीं कर रहे।

शादी के स्थान की बात करें तो शहरों में छोटे बैंक्वेट, फाइव-स्टार हॉल से लेकर फार्महाउस तक, जगहों की कीमत अलग-अलग होती है। किसी बड़े होटल बैंक्वेट स्थल की कीमत सामान्यतया न्यूनतम सजावट, कैटरिंग आदि के साथ 20 से 30 लाख रुपये के मध्य तक तो होती ही है। कपड़ों व गहनों पर भी अमूमन 20 लाख रुपये खर्च हो ही जा रहे हैं। मध्यमवर्गीय परिवार अपने 'चादर का आकार' कदाचित भूलता जा रहा। परिणामस्वरूप 'मीडिया क्रेजी' शादियों में अनाप-शनाप खर्च कर कर्ज के जाल में फंस रहा है।

उन्हें खेती की जमीन, मकान, गहने तक को बेचना पड़ जा रहा है। शादी-विवाह पारिवारिक आयोजन होता है। इसे सादगीपूर्ण तरीके से ही संपन्न किया जाना चाहिए। रोज की जिंदगी में धन नितांत आवश्यक है, इसे बचाने की आवश्यकता है। इवेंट बनती शादियों में फिजूलखर्ची बुद्धिमानी तो कदापि नहीं है। मध्यमवर्गीय परिवारों को फिजूलखर्ची रोकने को चिंतन-मनन करना ही होगा। खास तौर पर संबंधित वर्ग के भावी वर-वधुओं को।

1970 के दशक की शादियां प्राय: परंपरागत ही होती थीं। उस दौर की शादियां आपसी प्रेम व सादगी का पर्याय मानी जाती थीं।

आमने

सभी से रिक्वेस्ट करूंगा कि जो मुद्दे हैं, उन पर सोचें। ड्रामा करने के लिए बहुत जगहें हैं। जो कोई भी ड्रामा करना चाहता है, कर सकता है। यहां ड्रामा नहीं, डिलीवरी होनी चाहिए। यहां नारों पर नहीं, पॉलिसी पर जोर होना चाहिए।
–नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री

सामने

चुनाव की स्थिति, एसआईआर और प्रदूषण बहुत बड़े मुद्दे हैं। पार्लियामेंट किस लिए है? मुद्दे उठाना ड्रामा नहीं है। ड्रामा का मतलब है, चर्चा न होने देना। ड्रामा का मतलब है उन मुद्दों पर डेमोक्रेटिक चर्चा न करना जो जनता के लिए मायने रखते हैं। –प्रियंका गांधी
कांग्रेस सांसद

हास्य का विषय नहीं हो सकते हैं दिव्यांग

रमेश सर्राफ
स्वतंत्र पत्रकार

देश की सर्वाच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से दिव्यांगों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी से निपटने के लिए कड़े कानून बनाने पर विचार करने को कहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने एसएमए क्योर फाउंडेशन की याचिका पर सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार से दिव्यांगों और दुर्लभ आनुवंशिक विकारों से ग्रस्त व्यक्तियों का उपहास करने वाली अपमानजनक टिप्पणियों को अनुसूचित जाति-अनुसूचित जन जाति अधिनियम की तर्ज पर दंडनीय अपराध बनाने के लिए एक कानून बनाने को कहा है। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायामूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉय माल्या बागची की पीठ ने कहा कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर अभद्र, आपत्तिजनक और अवैध सामग्री को नियंत्रित करने के लिए एक तटस्थ, स्वतंत्र और स्वायत्त निकाय की आवश्यकता है।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने इस बारे में पीठ को सूचित किया कि सरकार कुछ दिशा-निर्देश बनाने पर विचार कर रही है। केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि हास्य किसी की गरिमा की कीमत पर नहीं हो सकता। याचिका में इंडियाज गॉट लेटेंट के हॉस्ट समय रैना और सोशल मीडिया पर प्रभावशाली लोगों, विपुन गोयल, बलराज परमजीत सिंह घई, सोनाली ठक्कर और निशांत जगदीश तंवर के चुटकुलों की निंदा की गई थी। अदालत ने उन्हें भविष्य में अपने आचरण के प्रति सावधान रहने का निर्देश दिया। पीठ ने हास्य कलाकार रैना और अन्य को दिव्यांग व्यक्तियों, विशेष रूप से स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए धन जुटाने के लिए दिव्यांग व्यक्तियों की सफलता की कहानियों पर प्रत्येक माह दो कार्यक्रम या शो आयोजित करने का भी निर्देश दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के पास एक 'दिव्य क्षमता' है और उनके लिए 'विकलांग' शब्द की जगह दिव्यांग शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने विकलांगों को दिव्यांग कहने की अपील की थी। इसके पीछे उनका तर्क था कि शरीर के किसी अंग से लाचार व्यक्तियों में ईश्वर प्रदत्त कुछ खास विशेषताएं होती हैं। विकलांग शब्द उन्हें हतोत्साहित करता है। प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश के लोगों ने विकलांगो को दिव्यांग तो कहना शुरू कर दिया, लेकिन लोगों का उनके प्रति नजरिया आज भी नहीं बदल पाया है। तीन दिसंबर को विकलांग दिवस मनाया जाता है। विश्व विकलांग दिवस पर इस वर्ष का विषय है, सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए विकलांगता समावेशी समाजों को बढ़ावा देना। यह विकलांग व्यक्तियों को अपने भाग्य को आकार देने और समाज में योगदान देने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने के महत्व को रेखांकित करता है।

दुनिया में बहुत से ऐसे दिव्यांग हुए हैं, जिन्होंने अपने साहस, संकल्प और उत्साह से विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम लिखवाया है। शक्तिशाली शासक तैमूर लंग हाथ और पैर से शक्तिहीन था। मेवाड़ के राणा सांगा तो बचपन में ही एक आंख गंवाने तथा युद्ध में एक हाथ एक पैर तथा 80 घावों के बावजूद कई युद्धों में विजेता रहे थे। महाराजा रणजीत सिंह की एक आंख बचपन से ही खराब थी। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सुधा चंद्रन के दांई टांग नहीं है। फिल्म गीतकार कृष्ण चंद्र डे तथा संगीतकार रविंद्र जैन देख नहीं सकते थे। पूर्व क्रिकेटर अंजन भट्टाचार्य मूक-बधिर थे। वर्ल्ड पैरा चैम्पियनशिप खेलों में झुंझुनू जिले के दिव्यांग खिलाड़ी संदीप कुमार और जयपुर के सुंदर गुर्जर ने भाला फेंक प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर भारत का मान बढ़ाया है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के पांचवें दौर का पहला चरण 2019-20 में आयोजित किया गया था। एनएफएचएस जनसंख्या, परिवार नियोजन, बाल और मातृ स्वास्थ्य, पोषण, वयस्क स्वास्थ्य और घरेलू हिंसा से संबंधित प्रमुख संकेतकों पर अनुमान प्रदान करता है। एनएफएचएस-5 सर्वेक्षण से एकत्र किए गए द्वितीयक डेटा के भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद प्रकाशन के विश्लेषण के अनुसार भारत में विकलांग लोगों की कुल व्यापकता जनसंख्या का 4.52 प्रतिशत है। यह डेटा दर्शाता है कि भारत में लगभग छह करोड़ 32 लाख 80 हजार लोग किसी न किसी प्रकार की विकलांगता के साथ जीवन यापन करते हैं। लोकोमोटर (गतिशील) विकलांगता सभी विकलांगताओं में सबसे आम है, इसके बाद मानसिक और वाक् (बोलने से संबंधित) विकलांगताएं हैं।

भारत में आज भी दिव्यांगता प्रमाण पत्र हासिल करना किसी चुनौती से कम नहीं है। सरकारी कार्यालयों और अस्पतालों के कई दिनों तक चक्कर लगाने के बाद भी लोगों को मायूस होना पड़ता है। हालांकि सरकारी दावे कहते हैं कि इस प्रक्रिया को काफी सरल बनाया गया है, लेकिन हकीकत इससे काफी दूर नजर आती है। दिव्यांगता का प्रमाणपत्र जारी करने के सरकार ने जो मापदंड बनाए हैं। अधिकांश सरकारी अस्पतालों के चिकित्सक, उनके अनुसार दिव्यांगों को दिव्यांग होने का प्रमाण पत्र जारी ही नहीं करते हैं, जिसके चलते दिव्यांग व्यक्ति सरकारी सुविधाएं पाने से वचिंत रह जाते हैं। दिव्यांग लोगों के प्रति अपनी सोच बदलने का समय आ गया है।

समय रैना एक बार फिर विवादों में है। यह विवाद शुरू हुआ एक कार्यक्रम में दिव्यांगों का मजाक बनाए जाने पर। सुप्रीम कोर्ट ने उनसे भविष्य में अपने आचरण के प्रति सावधान रहने को कहा है।

सोशल फोरम

पांडव पुत्रों का पालन और आज की पैरेंटिंग

महाभारत में एक गहरा प्रसंग आता है। पांडु की मृत्यु के बाद कुंती और माद्री दोनों सती होना चाहती थीं, पर माद्री ने कहा, "यदि आप सती हो गईं और मैं रह गई, तो मैं आपके तीनों बच्चों का पालन वैसे

नीलेश गुप्ता
ब्लॉगर

नहीं कर पाऊंगी, जैसे आप कर सकती हैं। अगर मैं सती हो जाऊं और आप रहें, तो आप मेरे दोनों बच्चों- नकुल और सहदेव को भी अपने ही बच्चों की तरह पाल लेंगी। दुनिया यही मानेगी कि कुंती के पांच पुत्र हैं।"

हुआ भी यही। एक स्त्री, अभाव, जंगल, संघर्ष और विधवापन, इन सभी परिस्थितियों में पांच ऐसे पुत्र तैयार करती है, जो आगे चलकर 'धर्म के स्तंभ' कहलाते हैं। जिस दिन भगवान को यह निर्णय करना पड़ा कि वे किसके पक्ष में खड़े होंगे, भगवान ने पांडवों का पक्ष चुना, क्योंकि एक स्त्री ने कठिनाइयों में भी सही 'लालन–पालन' किया था। दूसरी ओर हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र जन्मांध थे और गांधारी ने भी अपने पति की परिस्थिति देखकर अपनी आंखों पर स्वेच्छा से पट्टी बांध ली। जब घर में पिता पहले से नेत्रहीन हो और मां भी पट्टी बांधने का निर्णय ले ले तो, यह भी लालन–पालन का ही परिणाम है। महाभारत यह सिखाती है कि पालन-पोषण केवल शरीर पालना नहीं, बल्कि चरित्र, विवेक और भविष्य बनाना है।

यही बात आज हमें समझ नहीं आती। जब मैं क्लास 3–4 में था, हमें सिर्फ एक पेंसिल दी जाती थी। दूसरी पेंसिल तभी मिलती थी, जब पहली पूरी खत्म हो जाए और उसका फिज़िकल प्रूफ दिखाना पड़े। अगर पेंसिल खो जाए, तो नई पेंसिल नहीं मिलती, उल्टा डांट मिलती। इसी से हमने कम में मैनेज करना, पेंसिल बचाकर चलाना, दोस्तों से शेयर करना और हर चीज़ का मूल्य समझना सीखा। हम धीरे-धीरे रिसोर्सफुल बनते गए।

और आज? बच्चे रोज़ पेंसिल खो देते हैं और माता-पिता बिना पूछे रोज़ नई पेंसिल थमा देते हैं। बच्चे को न यह पता है कि चीज़ कहां से आती है? न इसका मूल्य क्या है? न जिम्मेदारी क्या होती है? अगर एक दिन पैरेंट कह दे, "आज नई पेंसिल नहीं मिलेगी"

महाभारत आज भी यही सिखाती है, पैरेंटिंग भविष्य बनाती है। कुंती ने अभावों में भी पांच धर्म–पुत्र बनाए। गांधारी ने आंखें बंद कर लीं। आज हम क्या कर रहे हैं? हम बच्चों को हर मुश्किल से बचा रहे हैं और इसी में उन्हें कमजोर बनाते जा रहे हैं। पैरेंटिंग का मतलब सुविधाएं देना नहीं, संस्कार, जिम्मेदारी और संघर्ष–क्षमता देना है।

सामयिकी

इन्हें काम नहीं कलम और किताब चाहिए

यूनीसेफ के एक सर्वे के अनुसार विश्वभर में 150 मिलियन बाल श्रमिक हैं। विश्व में बाल श्रमिकों की सबसे अधिक संख्या भारत में है। एक आकलन के अनुसार भारत में लगभग 33 मिलियन बाल श्रमिक हैं। फैक्टरियों, होटलों, रेस्टोरेंट, बागानों में काम करते, बोझा ढोते तथा जूते साफ करते बच्चे क्या बन पाते हैं-अशिक्षित, असमर्थ और साधनविहीन नागरिक, जो दूसरों की मर्जी के मुताबिक काम करने को मजबूर हैं। घर की जिम्मेदारी उठाने के लिए विभिन्न जोखिम भरे कार्यों में लगे दस-बारह वर्षीय बालक हमारे प्रजातंत्र के समानता के अधिकार को खुली चुनौती हैं। यह बाल श्रमिक हमारी आर्थिक प्रगति के खोखलेपन को भी सिद्ध करते हैं।

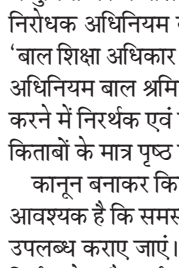

सुरेश बाबू मिश्रा
साहित्यकार

अनेकों मजदूर दिवस आए और चले गए। बाल श्रम को रोकने के लिए कानून बने। बाल श्रमिकों के लिए अनेकों कल्याणकारी योजनाएं बनीं। परंतु ग्यारह वर्षीय भोला के जीवन में इन सबसे कोई परिवर्तन नहीं आया। उसके नन्हे-नन्हे हाथ पूरे दिन लोगों के सैंडिल एवं जूते चमकाते रहते हैं। कभी-कभी अधिक रुपये पाने की लालसा में वह अपनी इकलौती कमीज से ही बाबू लोगों के जूते चमकाने लगता है। पांच रुपये के स्थान पर दस रुपये मिल जाने पर भोला के चेहरे पर ऐसी चमक आ जाती है, मानो उसे दुनिया भर की दौलत मिल गई हो।

प्रेस किए हुए कपड़े घर-घर पहुंचाने के लिए दस वर्षीय हरनाम गली-गली चक्कर काटता रहता है। तीसरी कक्षा के बाद ही उसके पिता ने उसकी पढ़ाई छुड़वा कर उसे काम में लगा दिया। रंग-बिरंगे चमकदार कपड़ों को हरनाम बड़ी हसरत भरी निगाहों से छू-छू कर देखता है। उसके बालमन में भी अच्छे कपड़े पहनने की इच्छाएं मचलती हैं, मगर उसका मजबूर बाप उसे साल में केवल दो जोड़ सस्ते कपड़े ही बनवा पाता है। कई बार तो उसे दूसरे लोगों की उतरन से ही काम चलाना पड़ता है।

घरेलू कार्यों के अतिरिक्त देश में बीड़ी, दियासलाई, सूती वस्त्रों के कारखानों, जूट मिलों, चाय के बागानों, पीतल उद्योग, कलई उद्योग, चूड़ी उद्योग, कालीन उद्योग तथा कार एवं आटो रिपेयर सेंटरों में लाखों बाल श्रमिक काम करते हैं। इन उद्योगों में बाल श्रमिक बुरी तरह शोषित होते हैं। अल्प वेतन, अत्याधिक कार्य, दोषपूर्ण वातावरण, अनैतिक एवं अमानवीय शोषण बाल श्रमिकों की मुख्य समस्याएं हैं।

भारत सरकार द्वारा बाल श्रम को नियंत्रित करने तथा बाल श्रमिकों को अधिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए सन् 1953 में 'बाल अधिनियम' तथा सन् 1958 में 'कारखाना अधिनियम' बनाए गए। सन् 1975 में बंधुआ मजदूरी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सन् 2002 में दुनिया भर में बालश्रम को रोकने के लिए यूनीसेफ द्वारा बाल श्रम निरोधक अधिनियम बनाया गया। भारत सरकार द्वारा सन् 2009 में 'बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम पूरे देश में लागू किया गया। परंतु यह अधिनियम बाल श्रमिकों की दशा सुधारने एवं बाल श्रम को नियन्त्रित करने में निरर्थक एवं खोखले सिद्ध हुए हैं। यह अधिनियम कानून की किताबों के मात्र पृष्ठ बनकर रह गए हैं।

कानून बनाकर किसी समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता। आवश्यक है कि समस्या के समाधान के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराए जाएं। बाल श्रम की मुख्य समस्या इनके मां-बाप का निर्धन होना है। वर्तमान समय में भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है, परंतु इसके बावजूद देश के 29 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन यापन करने को मजबूर हैं। आर्थिक विषमता की बढ़ती खाई भी बाल श्रम का प्रमुख कारण है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा 25/16-ए, जाप्लिंग रोड, लखनऊ-226001 (उ.प्र.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- अनिल त्रिगुणायत***
0522-4008111 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-50986/1989 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा)।

परमसत्ता से जुड़ने की प्रक्रिया है अध्यात्म

अध्यात्म पथ स्वयं को समग्र रूप से जानने की, उस परमसत्ता से जुड़ने की तथा आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार की प्रक्रिया है। कितने ही लोग इस पथ पर चल पड़ते हैं। बड़े उत्साह के साथ शुरुआत करते हैं। फिर रास्ते में ही कुछ हिम्मत हार बैठते हैं। कुछ सांसारिक राग-रंग को ही सब कुछ मान बैठते हैं। कुछ संकीर्ण स्वार्थ-अहंकार के धंधे में उलझकर, जीवन के आदर्श से समझौता कर बैठते हैं। कुछ आलस्य-प्रमाद में भ्रमित होकर बहुमूल्य जीवन को यों ही बर्बाद कर देते हैं। इसमें प्रायः इस समझ का अभाव मुख्य कारक रहता है कि अध्यात्म चेतना के परिष्कार का विज्ञान है, जिसमें जन्म-जन्मांतरों से मलिन चित्त एवं भ्रमित मन के साथ वास्ता पड़ रहा होता है। अचेतन मन के महासागर को पार करते हुए चेतना के शिखर का आरोहण करना होता है। आगे बढ़ना होता है।

निःसंदेह मार्ग कठिन है। दुरूह है। पूर्व में कृत कर्मराशि जब पहाड़ जैसा चट्टानी अवरोध बनकर राह में खड़ी हो जाती है, तो साधक की आस्था डांवाडोल हो जाती है। सस्ती पूजा-पत्री, भोग-चढ़ावे व चिह्न पूजा के सहारे धर्म-आध्यात्म के पथ पर बहुत कुछ बटोरने के फेर में चला पथिक मार्ग में ही धराशाई हो जाता है। यहां तक कि नास्तिक हो जाता है और भगवान तथा समर्थ गुरु तक को कोसने लगता है। जबकि धर्म-अध्यात्म पथ का अपना विधान है, विज्ञान है। इसकी थोड़ी सी भी समझ साधक को राजमार्ग से विचलित नहीं होने देती। वह पगडंडियों में नहीं उलझता। धर्म-अध्यात्म की शुरुआत धार्मिकता की प्राथमिक कक्षा से होती है, जिसमें पूजा-पाठ से लेकर कर्मकांड का सहारा लिया जाता है, लेकिन स्वाध्याय एवं आत्मचिंतन के साथ साधक की समझ भी सूक्ष्म होती जाती है। आस्तिकता के भाव के जाग्रत के साथ, श्रद्धा-निष्ठा परिपक्व होती है। इसी तैयारी के बाद अध्यात्म की कक्षा में प्रवेश मिलता है।

डॉ. प्रदीप द्विवेदी 'रमण'
आध्यात्मिक लेखक

आश्चर्य नहीं कि अध्यात्म पथ पर चलने वाले ऋषियों ने इसे छुरे की धार पर चलने के समान दुस्साध्य बताया है, लेकिन इस विकट पथ का वरण करने वाले मुमुक्षु पथिकों ने भी कब हार मानी है। मार्ग की दुरूहता को जानते हुए भी अंतस की पुकार के बल पर वे हर युग में इस पथ का संधान करते रहे हैं। किसी समर्थ के अवलंबन के साथ अपार धैर्य, अनंत श्रद्धा और अनवरत प्रयास के साथ अभीष्ट को सिद्ध करते रहे हैं। निःसंदेह समर्थगुरु (पूर्णगुरु) का अवलंबन कार्य को और सरल बना देता है। हमारा परम सौभाग्य है कि अवतारी गुरुसत्ता का सानिध्य हमें मिला। हमारे गुरुवर के सिद्धसूत्रों के साथ अध्यात्म का व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक स्वरुप हमारे लिए सहज सुलभ है, लेकिन इनको जीवन में वरण करने, धारण करने के लिए साहस, निष्ठा एवं तैयारी की न्यूनतम मांग है। आखिर हर मांग अपनी कीमत मांगता है, जो चीज जितनी कीमती होती है, उसका उतना ही मूल्य भी चुकाना होता है। एक किसान, व्यापारी व विद्यार्थी तन-मन व धन की सारी पूंजी झोंक देता है। तब कहीं जाकर समस्त सुख-सुविधाओं को त्यागते हुए एकांतिक प्रयास एवं निष्ठा के बल पर अभीष्ट मंजिल तक पहुंचता है। इसी प्रकार आध्यात्म पथ भी अपनी कीमत मांगता है, जिसमें चित्त-चेतना की शुद्धि एवं परिष्कार मुख्य है। स्वयं को गलाकर-मिटाकर सब कुछ पाने की कला अध्यात्म है। इसमें सबसे पहले चित्त का परिष्कार करना होता है। इसी के साथ जन्मों से अज्ञान के परदे में ढका आत्मज्ञान का सूर्य प्रकाशित होता है और अपने ईश्वरीय अस्तित्व का बोध कराता है। वैसे तो समर्थगुरु (पूर्णगुरु) एवं परमात्मा की कृपा तो सदा ही उनकी सभी संतानों पर अनवरत रुपों में बरसती रहती है। इसको ग्रहण करने व धारण करने की क्षमता का अभाव ही मुख्य कारण है कि अधिकांशतया जीवन इनसे रीता रह जाता है। जिस मात्रा में साधक-शिष्य इसको धारण कर पाता है, उसी अनुपात में उसका आत्मिक विकास होता है। अध्यात्म विज्ञान का कार्य अंततः जीवन का कायाकल्प है। मनुष्य में देवत्व का उदय है। यह उसकी अंतर्निहित दिव्य संभावनाओं व क्षमताओं का जागरण एवं विकास है।

आत्मकल्याण के साथ लोक-कल्याण

चित्त के प्रक्षालन के साथ इसका परिष्कार प्रारंभ होता है, जो स्वयं में समयसाध्य एवं कष्टसाध्य प्रक्रिया है। अपार धैर्य, अटूट श्रद्धा एवं निरंतर प्रयास के साथ यह कार्य संपन्न होता है। बार-बार असफलता के बाद भी साधक हिम्मत नहीं हारता और बार-बार प्रयास करता है। हजार असफलताओं के बाद हजार बार प्रयास करने का जीवट और हर हार के बाद पुनः उठकर आगे बढ़ने का अदम्य साहस अध्यात्म पथ को परिभाषित करता है। अध्यात्म पथ पर अभीष्ट को उपलब्ध सभी साधकों के जीवन दृष्टांत इसी सत्य की गवाही देते हैं। परमपूज्य गुरुदेव ने इसके निमित्त आत्मनिरीक्षण, आत्मसमीक्षा, आत्मसुधार व आत्मनिर्माण की प्रक्रिया का प्रतिपादन किया है। दैनिक जीवन में आत्मबोध से लेकर तत्वबोध की व्यावहारिक साधना को बताया है, जिसमें संयम, स्वाध्याय और सेवा के साथ उपासना, साधना, आराधना की त्रिवेणी में अवगाहन करना पड़ता हैं। परमपूज्य गुरुदेव का यह मार्गदर्शन साधक को अपनी स्थिति के अनुरूप सीखने को प्रेरित करता है और देर-सवेर आध्यात्म पथ पर चलते हुए आत्मकल्याण के साथ लोक-कल्याण के महान उद्देश्य को पूर्ण करता है।

गुरुदेव व दैवी कृपा साथ रहते हुए भी साधक को एकाकी ही इस पथ को पार करना होता है। अपनी अंतरात्मा की पुकार पर आध्यात्म पथ पर आरूढ़ साधक इस मार्ग का सहर्ष वरण भी करता है। इसके लिए पथ के काटों की चिंता नहीं करनी। लोग क्या कहते हैं और क्या करते हैं, इसकी चिंता कौन करे? गुरुकृपा से अपनी आत्मा ही मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त है। लोग अंधरे में भटकते हैं। भटकते रहें। हम अपने विवेक के प्रकाश का अवलंबन कर स्वतः ही आगे बढ़ेंगे। कौन विरोध करता है, कौन समर्थन इसकी गणना क्या करनी हमें? अपनी अंतरात्मा, अपना साहस अपने साथ है और हम वही करेंगे, जो करना अपने जैसे सजग साधकों के लिए उचित और उपयुक्त है।

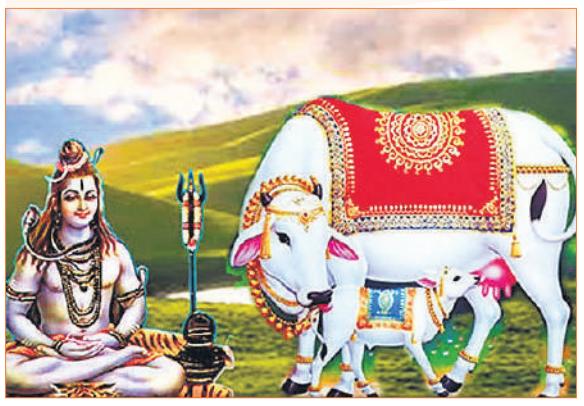

पौराणिक कथा

वृषभध्वज और गौ माता

महाभारत अनुशासन पर्व में वृषभ ध्वज की कथा आती है। एक बार गौ माता सुरभि का बछड़ा दूध पी रहा था। दूध पीते हुए बछड़े के मुख पर दूध की झाग लग गई। वही झाग हवा से उड़कर भगवान शंकर के मस्तक पर जा गिरी। ऐसा होने पर भगवान शिव कुछ क्रोधित हो गए। उस समय प्रजापति जी ने भगवान शंकर से कहा, "हे प्रभु! आपके मस्तक पर, जो दूध का छींटा पड़ा है। वह अमृत है। बछड़ों के पीने से गाय का दूध जूठा नहीं होता। जैसे अमृत का संग्रह करके चंद्रमा उसे बरसा देता है, वैसे ही रोहणी गायें भी अमृत से उत्पन्न दूध को बरसाती हैं। जैसे वायु, अग्नि, सुवर्ण, समुंद्र और देवताओं का पिया हुआ अमृत, कभी जूठे नहीं होते, वैसे ही बछड़ों को पिलाती हुई गौ भी कभी दूषित नहीं होती। ये गौमाता अपने दूध-घी से समस्त जगत का पोषण करती हैं। सभी लोग इन गौओं के अमृतमय पवित्र दूध रुपी ऐश्वर्य की इच्छा करते हैं।" तत्पश्चात प्रजापति जी ने महादेव जीको बहुत सी गौ और एक बैल दिया। इस पर शिवजी ने प्रसन्न होकर वृषभ अर्थात बैल को अपना वाहन बनाया और अपनी ध्वजा को उसी वृषभ के चिह्न से सुशोभित किया। इसी से उनका नाम 'वृषभ ध्वज' पड़ा। फिर देवताओं ने महादेव जी को पशुओं का स्वामी बना दिया और गौओं के बीच में उनका नाम 'वृषांक' रखा गया। **-फीचर डेस्क**

संस्कार: आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध

'संस्कार' मात्र धार्मिक कर्मकांड ही नहीं अपितु मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार है। यह मानव जीवन के सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं शैक्षिक मूल्यों को एक दिशा प्रदान करता है, जिसके आधार पर व्यक्ति दैहिक एवं भौतिक विकास के साथ ही सुव्यवस्थित एवं सुसंस्कृत जीवनयापन करता है। संस्कारों का विधान अलौकिक पृष्ठभूमि में किया गया है तथा इनकी उत्पत्ति में मानवीय प्रवृत्तियों का विशेष येगदान माना गया है, जिनका आधार आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यबोध है।

डॉ. रज्जन कुमार
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

संस्कार अपनी प्रकृति के अनुसार पूर्वभव, वर्तमान जीवन एवं मृत्यु के पश्चात् भी गतिशील रहते हैं। संस्कृत साहित्य में मानव जीवन के इन विविध क्रमों से संबंधित संस्कार के कई प्रकार मिल जाते हैं। यद्यपि संस्कारों के भेद एवं उनके नामों के लेकर विद्वानों मे मतैक्य नहीं है फिर भी इस दिशा में एक रुपता लाने के प्रयास विद्वानों द्वारा समय-समय पर अवश्य हुए हैं। विद्वानों का इस दिशा में किया गया यह प्रयास ही संस्कारों को सुनियोजित एवं व्यावहारिक मूल्य प्रदान कर सका है। वर्तमान में मुख्य संस्कारों की संख्या कुछ नाम भेद के साथ 16 बताई गई हैं, जैसे-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, चूड़ाकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह एवं अन्त्येष्टि-श्राद्ध। इन षोडश संस्कारों में कुछ संस्कार आज भी भारतीय जनमानस में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं। जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, उपनयन, विवाह एवं अंत्येष्टि-श्राद्ध आदि संस्कारों में से उपनयन एवं विवाह संस्कार का सामाजिक जीवन के लिए तो महत्व अधिक है, परंतु इसके पीछे धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्य का अभाव दृष्टिगोचर होता है। मृत्यु अथवा अन्त्येष्टि संबंधी संस्कार के पीछे धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्य की प्रधानता होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि संस्कार संबंधी क्रियाओं को स्वीकार करने के पीछे भारतीय जनमानस में धार्मिक संचेतना के साथ-साथ आध्यात्मिक एवं सामाजिक मूल्य की पृष्ठ भूमि भी गतिमान रही है। अतः हमें यह स्वीकार करने में कोई संशय नहीं रह जाता है कि आज भी संस्कार पहले की भांति धार्मिक एवं सामाजिक धरातल पर अपना अस्तित्व बनाए हुए है।

व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण शुभ तथा अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है। इनमें से कुछ संस्कार तो जातक अपने पूर्वभव के साथ लाता है तथा कुछ को वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के वशीभूत होकर प्राप्त करता है एवं कुछ संस्कार उसकी मृत्यु के बाद भी कार्यरत रहते हैं।

व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण शुभ तथा अशुभवृत्ति उसके संस्कारों के अधीन है। इनमें से कुछ संस्कार तो जातक अपने पूर्वभव के साथ लाता है तथा कुछ को वर्तमान जीवन की परिस्थितियों के वशीभूत होकर प्राप्त करता है एवं कुछ संस्कार उसकी मृत्यु के बाद भी कार्यरत रहते हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि संस्कार पूर्वभव, वर्तमान जीवन एवं मृत्यु के पश्चात् भी गतिशील रहते हैं, जिनका मानव जीवन में अपना महत्व एवं मूल्य बना हुआ है। भारतीय संस्कृति में तीन प्रकार के शरीरों का वर्णन हुआ है-सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर एवं कारण या लिंग शरीर। इनमें स्थूल शरीर के द्वारा कृत कार्यों का समापन मृत्यु के उपरांत सूक्ष्म शरीर के द्वारा भी किया जाता है। तात्पर्य यह है कि सूक्ष्म शरीर प्राप्त होने पर भी स्थूल शरीर द्वारा कृतकर्म क्षय को प्राप्त नहीं होते तथा पुनः जन्म लेने के बाद सूक्ष्म शरीरस्थ संस्कारों को व्यक्ति अपने क्रिया क्षेत्र में लाता है। क्योंकि प्रकृति के सूक्ष्म तत्वों से सभी प्रकार के शरीर बनते हैं, जो स्वरूपतः भौतिक हैं। अतः भौतिक पदार्थों से निर्मित शरीर को भैतिक सुखों की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म शरीर द्वारा किए गए कार्यों का संबंध स्थूल शरीर से होता है, जो हमारे मस्तिष्क में तथा स्थूल शरीर में व्याप्त हो जाते हैं, जो कि अन्य जन्मांतरों में साथ-साथ होने के कारण स्थूलशरीर द्वारा भोगे जाते हैं। सूक्ष्मशरीर की सत्ता का प्रमाण शास्त्रों में बहुधा प्राप्त होता है तथा बिना स्थूलशरीर के हम सब कुछ जान लेते हैं। उदाहरण स्वरूप जैसे नासिका के सामने कोई पुष्प लाया जाए तथा घ्राणेन्द्रिय का निरोध करके कान से यदि हम सूंघने का प्रयास करते हैं, तो कान रूपी इंद्रिय उस पुष्प की सुगंध को ग्रहण नहीं कर सकती। योगी लोग सूक्ष्म शरीर के स्थूल शरीर से पृथक कर सकते हैं तथा पुनः नए शरीर में भी प्रवेश कर सकते हैं। इस प्रकार वह स्वभावतः संस्कारों के भी बदल देते हैं। संस्कृत साहित्य में संस्कारों से संबद्ध परंपराओं एवं मान्यताओं का यथा स्थान विवेचन हुआ है, जिनसे यह संकेत मिलता है कि इस संसार में लौकिक एवं अलौकिक शक्तियां हैं, जिनके मध्य अटूट संबंध है, जो मानव जीवन को एक प्रेरणा प्रदान करता हैं। संस्कार यहां एक प्रेरकतत्व के रूप में विकसित हुआ है, जो मनुष्य को कई प्रकार की लौकिक एवं अलौकिक शक्तियों से युक्तकर उसके जीवन में सुख-शांति का आधान करता है। संस्कार जीवन के विभिन्न अवसरों पर संपन्न एवं आयोजित किए जाते हैं। तदनुसार ये अवसर एवं जीवन को महत्व एवं पवित्रता प्रदान करते हैं। संस्कार कदाचित् जीवन की घटनाओं के प्रति मनुष्य के भीतर व्याप्त उदासीनता को कम करने की प्रेरणा प्रदानकर जीवन के विकास के क्रम को महत्व प्रदान करउसे एक सामाजिक मूल्य प्रदान करते हैं। मनुष्य को इस बात का बोध हो जाता है कि जीवन की घटनाएं मात्र शारीरिक क्रियाओं का नाम नहीं अपितु एक चिरंतन प्रवाह है, जिनमें सामाजिक संचेतना है, आध्यात्मिक उत्क्रांति है तथा सांस्कृतिक मूल्य के संरक्षण का भाव है।

बोधकथा

ज्ञान कक्षा का मोहताज नहीं

एक समय की बात है, एक विद्यार्थी पढ़ाई में अत्यंत होशियार माना जाता था। उसकी लगन और समझदारी की चर्चा पूरे विद्यालय में थी, लेकिन अचानक वह एक गंभीर बीमारी की चपेट में आ गया। कई दिनों तक बिस्तर पर रहने के कारण उसकी विद्यालय में उपस्थिति बहुत कम हो गई। स्थिति ऐसी बन गई कि वह परीक्षा में बैठने की शर्त भी पूरी न कर सका।

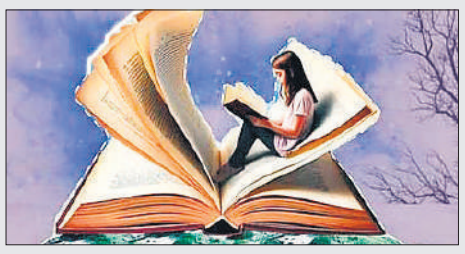

यह बात उसके लिए अत्यंत चिंता का विषय बन गई। उसे लगने लगा कि अब एक साल पीछे रह जाना तय है। उसका मन घबराहट और निराशा से भर गया। अंततः अपने मन का बोझ हल्का करने के लिए वह प्रख्यात विद्वान और मार्गदर्शक मदन मोहन मालवीय जी के पास पहुंचा। विद्यार्थी ने कांपती आवाज में अपनी व्यथा रखी, "बाबूजी, मैं बीमारी के कारण परीक्षा में नहीं बैठ पाऊंगा। लगता है मुझे एक साल और उसी कक्षा में रहना पड़ेगा।" मालवीय जी बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनते रहे। फिर अत्यंत शांति से बोले, "एक बात बताओ बेटा, पढ़ना अच्छी चीज है या बुरी?"

विद्यार्थी ने तुरंत उत्तर दिया, "अच्छी चीज है।" मालवीय जी मुस्कुराए और बोले, "तो फिर पढ़ने से डर कैसा? विद्यार्थी को दर्जे का, कक्षा का, साल का इन सबका विचार छोड़कर पूरे मन से सीखने पर ध्यान देना चाहिए। ये दर्जे तो मनुष्य ने अपने सुविधा के लिए बना दिए हैं, ज्ञान इन्हें नहीं मानता।" उनकी बात सुनकर भी विद्यार्थी का चेहरा उदास बना रहा। उसकी मायूसी देखकर मालवीय जी ने गहरी आवाज़ में समझाया, "मेरा विश्वास मानो, असली पढ़ाई स्कूल और कॉलेज की चार दीवारों में सीमित नहीं रहती। जिन्हें सचमुच पढ़ना होता है, वे हर परिस्थिति में सीखते हैं। विद्या पाने के लिए तपस्या करनी पड़ती है और यह तपस्या जीवनभर चलती है। दुनिया के अनुभव, परिस्थितियां, कष्ट- यही सबसे बड़े गुरुकुल हैं, जिसे सीखने की आग होती है, उसके लिए साल पीछे रह जाना कोई बाधा नहीं।" वे आगे बोले, "जीवन में हमें बहुत-सी बातें किताबों से नहीं, बल्कि परिस्थितियों से सीखने को मिलती हैं। बीमारी, कठिनाइयां, संघर्ष-ये सब भी शिक्षक हैं। इसलिए यदि तुम सचमुच विद्वान बनना चाहते हो, तो दर्जे की चिंता छोड़कर ज्ञान का पथ पकड़े रहो।" मालवीय जी के इन शब्दों ने विद्यार्थी के मन का बोझ हल्का कर दिया। उसे समझ आ गया कि पढ़ाई सिर्फ परीक्षा पास करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को सही दृष्टि देने वाली साधना है। वह नए उत्साह से भरकर वापस लौटा। सच यही है, जो सीखने वाला हृदय रखता है, उसके लिए हर दिन, हर अनुभव, हर संघर्ष एक नई पाठशाला बन जाता है। यही इस कथा का संदेश है।

-नृपेन्द्र अभिषेक नृप

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	85,641.90	26,175 .75
गिरावट	64 .77	27 .20
प्रतिशत में	0 .08	0 .10

सोना 1,33,200 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,77,000 प्रति किलो

अमृत विचार

लखनऊ, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

जीएसटी संग्रह 1.70 लाख करोड़ पहुंचा

नई दिल्ली। सकल माल एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह नवंबर में 0 .7% की मामूली वृद्धि के साथ 1 .70 लाख करोड़ रुपये रहा है। घरेलू राजस्व में गिरावट से संग्रह कम हुआ है। सोमवार को जारी सरकारी आंकड़ों के अनुसार, जीएसटी संग्रह गत वर्ष नवंबर में 1 .69 लाख करोड़ से कुछ अधिक रहा था। आलोच्य महीने में सकल घरेलू राजस्व 2 .3% घटकर 1 .24 लाख करोड़ रुसे अधिक रहा। यह गिरावट 375 वस्तुओं पर जीएसटी दरों में कमी के बाद आई है। वस्तुओं के आयात से राजस्व 10 .2%बढ़कर 45,976 करोड़ रुपये रहा।

एसडब्लूआरईएल को 1,381 करोड़ का ठेका

नई दिल्ली। स्टर्लिंग एंड विल्सन रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (एसडब्ल्यूआरईएल) को गुजरात में अडाणी ग्रीन एनर्जी से 1,381 करोड़ का ठेका मिला है। एसडब्लूआरईएल ने सोमवार को शेयर बाजार को बताया कि उसने गुजरात के खावड़ा अक्षय ऊर्जा पार्क में आने वाली तीन सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अडाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल) से 1,381 करोड़ का बैलेंस ऑफ सिस्टम (बीओएस) ठेका हासिल किया है। खावड़ा अक्षय ऊर्जा पार्क दुनिया के सबसे बड़े नवीकरणीय ऊर्जा केंद्रों में से एक है। एसडब्लूआरईएल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (वैश्विक) चंद्र किशोर ठाकुर ने इसकी जानकारी दी।

मीशो आईपीओ की राशि से देगी वेतन

नई दिल्ली। सॉफ्टबैंक समर्थित ई-कॉमर्स कंपनी मीशो की योजना आईपीओ से प्राप्त 480 करोड़ का उपयोग कृत्रिम मेधा (एआई) एवं प्रौद्योगिकी टीमों के वेतन के भुगतान के लिए करने की है। आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से जुड़े दस्तावेजों से इसकी जानकारी मिली। इस खुलासे के बाद सोशल मीडिया पर इस बात पर बहस छिड़ गई है कि क्या आईपीओ से हासिल राशि का ऐसा (कर्मचारियों के वेतन पर खर्च) उपयोग चिंताजनक होना चाहिए या यह प्रौद्योगिकी प्रतिभा पर दीर्घकालिक दांव लगाने का संकेत है। आईपीओ से प्राप्त राशि के उपयोग का विवरण देते हुए कंपनी ने बताया कि 480 करोड़ हमारी अनुषंगी कंपनी मीशो टेक्नोलॉजीज द्वारा एआई व प्रौद्योगिकी विकास को मशीन लर्निंग तथा एआई एवं प्रौद्योगिकी दलों के कर्मचारियों को वेतन के लिए निर्धारित किए गए हैं।

आईआईपी में वृद्धि दर 13 माह के निचले स्तर पर

अक्टूबर में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि सुस्त पड़कर 0.4% पर आई

- एनएसओ के अनुसार, आईआईपी में वृद्धि दर सालाना आधार पर घटी

नई दिल्ली, एजेंसी

विनिर्माण, खनन एवं बिजली क्षेत्रों के कमजोर प्रदर्शन से अक्टूबर में देश की औद्योगिक उत्पादन वृद्धि सुस्त पड़कर 13 महीनों के निचले स्तर 0.4% पर आ गई। सोमवार को आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) से जारी आंकड़ों के मुताबिक, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में वृद्धि दर सालाना आधार पर घटी है। एक साल पहले की समान अवधि में औद्योगिक उत्पादन 3.7% बढ़ा था। आईआईपी का पिछला निचला स्तर सितंबर, 2024 में दर्ज किया गया था जब यह स्थिर रहा था। इएनएसओ ने सितंबर, 2025 के आंकड़ों को संशोधित करते हुए वृद्धि दर को 4 से बढ़ाकर 4.6% किया है।

आंकड़ों के मुताबिक, अक्टूबर में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर घटकर 1.8% पर आ गई, जबकि साल भर पहले यह 4.4% रही थी। आलोच्य महीने में खनन क्षेत्र के उत्पादन में 1.8% की गिरावट आई, जबकि गत वर्ष यह 0.9% बढ़ा था। इस दौरान बिजली उत्पादन में भी 6.9% की गिरावट दर्ज की गई जबकि पिछले साल यह दो प्रतिशत बढ़ा था। वित्त वर्ष 2025-26 के पहले सात महीनों (अप्रैल-अक्टूबर) में देश के औद्योगिक उत्पादन में कुल 2.7% की वृद्धि दर्ज की गई जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह 4% थी। विनिर्माण क्षेत्र में शामिल 23 में से नौ उद्योग खंडों ने अक्टूबर में सालाना आधार पर सकारात्मक वृद्धि रही।

उपयोग-आधारित वर्गीकरण के मुताबिक, पूंजीगत उत्पाद खंड में 2.4% की बढ़ोतरी हुई जबकि एक साल पहले यह 2.9% थी। टिकाऊ उपभोक्ता खंड में आलोच्य माह के दौरान 0.5% की गिरावट आई, जबकि एक साल पहले इसमें 5.5% की बढ़ोतरी हुई थी। अक्टूबर, 2025 में गैर-टिकाऊ उपभोक्ता खंड में उत्पादन 4.4% गिर गया जबकि एक साल पहले इसमें 2.8% की वृद्धि हुई थी। ढांचागत क्षेत्र/ निर्माण उत्पादों के खंड में उत्पादन बढ़कर 7.1% हो गया जबकि पिछले साल की समान अवधि में 4.7% बढ़ोतरी रही थी। आंकड़ों से पता चला कि प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन अक्टूबर माह में 0.6% घटा है जबकि एक साल पहले यह 2.5% बढ़ा था। मध्यवर्ती उत्पाद खंड में इस महीने 0.9% की बढ़त रही जबकि एक साल पहले इसमें 4.8%की वृद्धि हुई थी।

विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां नौ माह के निचले स्तर पर

- पीएमआई अक्टूबर के 59.2 से घटकर नवंबर में 56.6 पर आया

नई दिल्ली। देश की विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां नवंबर में नौ महीने के निचले स्तर पर आ गईं। चुनौतीपूर्ण बाजार स्थितियों की खबरों के बीच बिक्री एवं उत्पादन में धीमी वृद्धि इसकी मुख्य वजह रही। सोमवार को जारी एक मासिक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) अक्टूबर के 59 .2 से नवंबर में 56 .6 पर आ गया। यह फरवरी के बाद से परिचालन स्थितियों में सबसे धीमी गति का संकेत देता है। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर का अंक विस्तार जबकि 50 से नीचे का अंक संकुचन दर्शाता है। एचएसबीसी के मुख्य भारत अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा कि नवंबर के पीएमआई आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि अमेरिकी शुल्क के कारण विनिर्माण विस्तार धीमा हुआ है। इसमें कहा गया कि कंपनियों ने हालांकि सुझाव दिया कि अंतर्राष्ट्रीय बिक्री का रुझान अनुकूल बना हुआ है जो अफ्रीका, एशिया, यूरोप और पश्चिम एशिया में ग्राहकों को अधिक बिक्री को दर्शाता है।

कोयला व लिग्नाइट की खोज की अनुमोदन प्रक्रिया हुई सरल

- कारोबार सुगमता और कुशल एवं टिकाऊ अन्वेषण को बढ़ावा देने के लिए उठाया कदम

नई दिल्ली, एजेंसी

कोयला मंत्रालय ने कोयला एवं लिग्नाइट ब्लॉक से संबंधित अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट के लिए अनुमोदन प्रक्रिया को सरल बनाया है। इस कदम का मकसद कारोबार सुगमता को बढ़ाना और कुशल एवं टिकाऊ अन्वेषण को बढ़ावा देना है। नई प्रक्रिया में अब 2022 में इस उद्देश्य के लिए गठित सरकारी समिति से मंजूरी की आवश्यकता नहीं है।

मंत्रालय के अनुसार, कोयला मंत्रालय ने पहले की कार्यप्रणाली की समीक्षा की है। क्यूसीआई-एनएबीईटी द्वारा मान्यता प्राप्त एवं अन्य एपीए द्वारा समकक्ष समीक्षा प्राप्त अधिसूचित मान्यता प्राप्त अन्वेषण एजेंसियों (एपीए) द्वारा तैयार कोयला एवं लिग्नाइट ब्लॉक के लिए अन्वेषण कार्यक्रमों व भूवैज्ञानिक रिपोर्ट (जीआर) के अनुमोदन के लिए तंत्र को सरल बनाया है। देश की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए कोयला एवं लिग्नाइट संसाधनों का तेज, अधिक कुशल और प्रौद्योगिकी रूप से मजबूत अन्वेषण आवश्यक है।

कोल इंडिया का उत्पादन घटकर 45.35 करोड़ टन

नई दिल्ली। सरकारी कंपनी कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) का कोयला उत्पादन चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-नवंबर के दौरान 3 .7% घटकर 45 .35 करोड़ टन रह गया। सरकार देश में कोयला उत्पादन बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने के लिए कई कदम उठा रही है, इसके बावजूद यह गिरावट आई। देश के कुल कोयला उत्पादन में 80% से अधिक हिस्सा रखने वाली कोल इंडिया ने पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 47 .1 करोड़ टन का कोयला उत्पादन किया था।

सोने में आया 3,040 रुपये का उछाल

नई दिल्ली, एजेंसी

- मजबूत वैश्विक रुख और शादियों के मौसम से आभूषणों की मांग से कीमती धातु को मिला समर्थन

मजबूत वैश्विक रुख और कमजोर डॉलर के कारण सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोने की कीमतें 3,040 रुपये उछलकर 1,33,200 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गईं। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने कहा कि चल रहे शादियों के मौसम के बीच आभूषणों की सतत मांग से कीमती धातु को समर्थन मिला।

व्यापारियों ने कहा कि सोना अब अपने सर्वकालिक उच्च स्तर 1,34,800 रुपये प्रति 10 ग्राम (99.9% शुद्धता) और 1,34,200 रुपये प्रति 10 ग्राम (99.5%) के करीब है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में वरिष्ठ विश्लेषक (जिंस) सौमिल गांधी ने कहा कि सोने ने पिछले हफ्ते की तेजी को आगे बढ़ाया, जिसे डॉलर के कमजोर होने, अगले हफ्ते फेडरल रिजर्व के द्वारा ब्याज दर कटौती की बढ़ती उम्मीदों, बड़े बैंकों के अच्छे अनुमानों और सेंट्रल बैंक की मजबूत खरीदारी से समर्थन मिला, ये सभी बाजार को ऊपर ले जाने में मदद कर रहे हैं।

सर्राफा संघ के अनुसार, चांदी पांचवें दिन ऊपर चढ़ती रही, जो 5,800 रुपये बढ़कर 1,77,000 रुपये प्रति किग्रा (सभी टैक्स) हो गई। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में हाजिर सोना 42.29 डॉलर या 1% बढ़कर 4,261.52 डॉलर प्रति औंस हो गया, जबकि डॉलर सूचकांक 0.19% घटकर 99.27 रह गया, जिससे सर्राफा कीमतों को समर्थन मिला। साल की शुरुआत से सोने की कीमत 63.6%बढ़ गई है। लगातार छठे दिन बढ़ते हुए, हाजिर चांदी 2% बढ़कर वैश्विक बाजारों में 57.85 डॉलर प्रति औंस के नए रिकॉर्ड पर पहुंच गई। पिछले हफ़्ते चांदी 15.7% उछली और 2025 में अब तक दोगुनी गई गई। ऑगमोंट में शोध प्रमुख रेनिशा चैनानी ने कहा कि चांदी की कीमत सिर्फ़ 11 महीनों में दोगुनी हो गई है और सोने से ज्यादा बढ़ी है, भले ही वर्ष 2025 में सोना सबसे लोकप्रिय जिंस था।

शेयर बाजार रिकॉर्ड ऊंचाई से नीचे फिसला

- वित्तीय शेयरों में मुनाफावसूली से दोनों सूचकांक में आई गिरावट
- सत्र के दौरान सेंसेक्स 452.35 और निफ्टी 122.85 अंक चढ़ा

मुंबई, एजेंसी

स्थानीय शेयर बाजार सोमवार को रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने के बाद अंत में मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। उच्चस्तर पर मुनाफावसूली और विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी से दोनों मानक सूचकांक... बीएसई सेंसेक्स में 65 अंक की गिरावट आई जबकि एनएसई निफ्टी 27 अंक के नुकसान में रहा।

बीएसई का सेंसेक्स शुरुआती बढ़त गंवाकर 64.77 अंक की गिरावट के साथ 85,641.90 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, 452.35 अंक चढ़कर 86,159.02 अंक के रिकॉर्ड उच्चस्तर पर पहुंचा था। वहीं, एनएसई का निफ्टी 27.20 अंक की गिरावट के साथ 26,175.75 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान, यह 122.85 अंक चढ़कर 26,325.80 अंक के उच्चस्तर पर पहुंचा था। विशेषज्ञों के अनुसार, दूसरी तिमाही में उम्मीद से बेहतर जीडीपी वृद्धि के बाद इस सप्ताह आरबीआई के प्रमुख ब्याज दर में कटौती की उम्मीद कम होने से बाजार में उच्चस्तर पर गिरावट देखी गई। जीएसटी संग्रह में धीमी वृद्धि और उच्चस्तर पर मुनाफावसूली से भी बाजार नुकसान में रहा। बाजार शुरुआती कारोबार में अपने रिकॉर्ड उच्चस्तर पर पहुंचा था। इसका कारण जुलाई-सितंबर में भारत की अर्थव्यवस्था के अनुमान से अधिक 8.2% की दर से बढ़ने के बाद निवेशकों की धारणा सकारात्मक थी। यह छह तिमाहियों में सबसे तेज वृद्धि है।

मिडकैप नीचे, स्मॉलकैप में मामूली बढ़त

मझोली कंपनियों से संबंधित बीएसई मिडकैप सूचकांक 0 .19% नीचे आया जबकि छोटी कंपनियों से संबंधित स्मॉलकैप सूचकांक मामूली 0 .05% की मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ। एशिया के अन्य बाजारों में, चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंग सेंग सकारात्मक दायरे में बंद हुए, जबकि दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और जापान का निक्की गिरावट के साथ बंद हुए। यूरोप के प्रमुख बाजारों में दोपहर के कारोबार में गिरावट का रुख था। शुक्रवार को अमेरिकी बाजार बढ़त के साथ बंद हुए थे।

डीआईआई ने 4,148.48 करोड़ के शेयर खरीदे

शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शुक्रवार को 3,795 .72 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 4,148 .48 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 1 .96 प्रतिशत बढ़कर 63 .60 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। शुक्रवार को सेंसेक्स 13 .71 अंक की मामूली गिरावट के साथ 85,706 .67 अंक पर बंद हुआ था। वहीं निफ्टी 12 .60 अंक के नुकसान में रहा था।

राष्ट्रीय

वक्फ संपत्ति विवरण पर समय सीमा बढ़ाने से सुप्रीम इन्कार

उम्मीद पोर्टल पर विवरण अपलोड करने संबंधित याचिका पर हुई सुनवाई

- पीठ ने याचिकाकर्ताओं से कहा- समय सीमा से पहले संबंधित न्यायाधिकरणों से करें संपर्क

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को 'उम्मीद' पोर्टल पर 'वक्फ बाय यूजर' सहित सभी वक्फ संपत्तियों के अनिवार्य पंजीकरण के लिए समय बढ़ाने से इन्कार कर दिया। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने याचिकाकर्ताओं से कहा कि वे समय सीमा से पहले संबंधित न्यायाधिकरणों से संपर्क करें।

हमारा ध्यान धारा 3बी के प्रावधान की ओर आकर्षित किया गया है। चूंकि आवेदकों के पास न्यायाधिकरण के समक्ष उपाय उपलब्ध है इसलिए हम सभी आवेदनों का निपटारा करते हुए उन्हें छह महीने की अवधि की अंतिम तिथि तक न्यायाधिकरण का रुख करने की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड (एआईएमपीएलबी) के अलावा ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन (एआईएमआईएम) नेता असदुद्दीन ओवैसी और कई अन्य ने सभी वक्फ संपत्तियों के अनिवार्य पंजीकरण के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध करते हुए शीर्ष अदालत का रुख किया है। इससे पहले एक वकील ने कहा था कि वक्फ के अनिवार्य पंजीकरण की छह महीने की अवधि समाप्त होने वाली है। उच्चतम न्यायालय ने 15 सितंबर को वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 के कुछ प्रावधानों पर रोक लगा दी, जिनमें यह भी है कि केवल वे लोग ही किसी संपत्ति को वक्फ के रूप में दे सकते हैं जो पिछले पांच साल से इस्लाम का पालन कर रहे हैं। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा था कि केंद्र ने दुरुपयोग को देखते हुए 'वक्फ बाय यूजर' प्रावधान को हटा दिया और प्रत्याशित रूप से यह 'मनमाना' नहीं था। वक्फ बाय यूजर से आशय ऐसी संपत्ति से है, जहां किसी संपत्ति को औपचारिक दस्तावेज के बिना भी धार्मिक या धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए उसके दीर्घकालिक उपयोग के आधार पर वक्फ के रूप में मान्यता दी जाती है, भले ही मालिक द्वारा वक्फ की औपचारिक, लिखित घोषणा न की गई हो।

असम में विशेष संक्षिप्त संशोधन कराने के चुनाव आयोग के फैसले को दी चुनौती

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में चुनाव आयोग के उस फैसले को चुनौती दी गई है, जिसमें असम में चुनाव नामावली का केवल विशेष संक्षिप्त संशोधन करने का निर्णय लिया गया है, जबकि बिहार सहित 12 अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में विशेष गहन संशोधन कराया जा रहा है। यह याचिका गुवाहाटी हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष मृणाल चौधरी ने दायर की है। याचिका में 17 नवंबर को जारी चुनाव आयोग के आदेश पर सवाल उठाया गया है। याचिका में कहा गया है कि जहां एक ओर छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप और पुडुचेरी में विशेष गहन संशोधन का निर्देश दिया गया है, वहीं असम में कम स्तर का संशोधन चुना गया है। यह फैसला आयोग के अपने ही रुख के खिलाफ है।

आपदा तैयारियों के मुद्दे पर केंद्र व अन्य को नोटिस

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केंद्र और अन्य से उस याचिका पर जवाब मांगा, जिसमें अग्निशमन सेवाओं, सड़क आपातकालीन प्रतिक्रिया और आपदा तैयारी में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे और कर्मियों की कमी का आकलन करने और उसे पूरा करने के लिए निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। न्यायमूर्ति विक्रमनाथ और संदीप मेहता की पीठ ऐसे व्यक्ति की याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसने 2019 में सूरत में आग लगने की घटना में अपनी बेटी को खो दिया था। शीर्ष न्यायालय ने केंद्र और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) सहित अन्य को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में याचिका पर जवाब दाखिल करने को कहा। पीठ ने कहा कि नोटिस जारी करें, जिसका जवाब चार हफ़्तों के भीतर दिया जाए। याचिकाकर्ता व्यक्तिगत रूप से पेश हुआ और उसने दावा किया कि भारतीय राष्ट्रीय भवन संहिता, 2016 का सख्ती से पालन नहीं किया जा रहा है और देश भर में आग लगने की घटनाएं हो रही हैं।

बिश्नोई गिरोह से सुरक्षा पर विचार से इन्कार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के व्यक्ति की याचिका पर विचार से इन्कार कर दिया, जिसने लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से धमकी मिलने का दावा करते हुए 24 घंटे सुरक्षा मुहैया देने मांग की गई थी। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता की पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील से पूछा, आपको कौन धमकी दे रहा है? लॉरेंस बिश्नोई उत्तर प्रदेश में भी काम करता है? वकील ने कहा कि याचिकाकर्ता 24 घंटे सुरक्षा की मांग कर रहा है। जब पीठ ने कहा कि बिश्नोई गिरोह राजस्थान और पंजाब में सक्रिय है, तो वकील ने कहा, वह हर जगह सक्रिय है।

ईडी ने मसाला बॉण्ड मामले में सीएम विजयन व इसाक को भेजा नोटिस

नई दिल्ली/तिरुवनंतपुरम। ईडी ने केआईआईएफबी मसाला बॉण्ड मामले में केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन, पूर्व वित्त मंत्री थॉमस इसाक और मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव के. एम. अब्राहम को 467 करोड़ के फेमा उल्लंघन से संबंधित कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

अधिकारियों ने बताया कि ईडी ने विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) के प्रावधानों के तहत यह नोटिस 12 नवंबर को जारी किया था। उन्होंने बताया कि यह नोटिस केरल इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड (केआईआईएफबी) व उसके प्राधिकारियों द्वारा फेमा प्रावधानों और आरबीआई के मुख्य निर्देशों के कथित उल्लंघन से संबंधित है, जिसकी राशि 466.91 करोड़ है। केआईआईएफबी के अध्यक्ष के रूप में विजयन, बोर्ड के उपाध्यक्ष पूर्व वित्त मंत्री इसाक व केआईआईएफबी के सीईओ अब्राहम के अलावा संस्थान को भी नोटिस जारी किए गए हैं। केरल सरकार ने मामले में गड़बड़ी से इन्कार किया है।

नए सभापति सभी को दें बोलने का अवसर

नई दिल्ली, एजेंसी

राज्यसभा में सोमवार को प्रधानमंत्री, सदन के नेता, नेता प्रतिपक्ष सहित विभिन्न दलों के नेताओं ने नये सभापति सी पी राधाकृष्णन को यह दायित्व संभालने के लिए बधाई देते हुए उम्मीद जतायी कि सांसद के रूप में उनके अनुभव से सदन के कुशल संचालन में मदद मिलेगी। कई दलों के सदस्यों ने सदन के सभी पक्षों को बोलने का समान अवसर देने का अनुरोध किया।

राधाकृष्णन का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि साधारण पृष्ठभूमि से उठकर सी. पी. राधाकृष्णन का उपराष्ट्रपति पद तक पहुंचना भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति को प्रदर्शित करता है।

सितंबर में चंद्रपुरम पोनुसामी (सी. पी.) राधाकृष्णन देश के 15वें उपराष्ट्रपति चुने गए थे। प्रधानमंत्री ने कहा, मैं आपको बधाई देता हूं और भरोसा है कि इस सदन का हर सदस्य इसकी परंपराओं का सम्मान करेगा और आपकी गरिमा को बनाए रखेगा।

संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन राधाकृष्णन का स्वागत करते हुए सदन के नेता जेपी नड्डा ने उम्मीद जतायी वह संसद के उच्च सदन का कुशलतापूर्वक संचालन करेंगे।

विपक्ष की ओर से खरगे ने सभापति का स्वागत करते हुए कहा कि कांग्रेस संवैधानिक मूल्यों और सदन की परंपराओं के साथ दृढ़ता से खड़ी है और कार्यवाही के सुचारू संचालन में सहयोग करेगी। पूर्व प्रधानमंत्री एवं जनता दल (एस) के एचडी देवेगौड़ा ने उम्मीद जतायी कि वह इस सदन की लम्बी परंपरा के अनुसार इसका संचालन करेंगे। टीएमसी के डेरेक ओ ब्रायन ने कहा कि विपक्ष को सदन में अपनी बात रखने का मौका दिया जाना चाहिए। द्रमुक के तिरुचि शिवा, आप के राघव चड्ढा, माकपा के जान ब्रिटास, जद(यू) के रामनाथ ठाकुर, सपा के जावेद अली खान, राकंपा के प्रफुल्ल पटेल और राकंपा (एसपी) की फौजिया खान ने सभापति से सदन में बोलने देने की उम्मीद जताई।

डब्ल्यूएमओ को हवाईअड्डे पर जीपीएस स्पूफिंग के स्रोत का पता लगाने का सरकार ने दिया निर्देश

नई दिल्ली। सरकार ने सोमवार को कहा कि दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, अमृतसर, हैदराबाद, बैंगलोर और चेन्नई हवाई अड्डों पर 'जीपीएस स्पूफिंग' होने की खबर है, और वायरलेस निगरानी संगठन (डब्ल्यूएमओ) को 'स्पूफिंग' के स्रोत का पता लगाने का निर्देश दिया गया है। नागर विमानन मंत्री के राममोहन नायडू ने राज्यसभा को बताया कि कुछ उड़ानों ने नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के आस-पास जीपीएस स्पूफ़िंग की सूचना दी, जब वे रनवे 10 पर पहुंच रहे थे, और जीपीएस आधारित विमान उतारने की प्रक्रिया का इस्तेमाल कर रहे थे। नायडू ने कहा, दूसरे रनवे पर, जहां पारंपरिक नौवहन प्रणाली चालू थी, उड़ानों के परिचालन पर कोई असर नहीं पड़ा। इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा देश का सबसे हवाई अड्डा है।

चुनाव सुधारों पर चर्चा की मांग को लेकर संसद परिसर में प्रदर्शन की तैयारी में विपक्षी दल

नई दिल्ली। विपक्षी गठबंधन के घटक दल संसद के वर्तमान शीतकालीन सत्र के दौरान चुनाव सुधारों के विषय पर चर्चा की मांग करते हुए मंगलवार को संसद परिसर में प्रदर्शन कर सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि विपक्षी दलों के सांसद मंगलवार सुबह संसद भवन के मकर द्वार के निकट एकत्र होकर विरोध प्रदर्शन की तैयारी में हैं। विपक्षी सदस्यों ने विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के मुद्दे पर सोमवार को लोकसभा में हंगामा किया जिससे सदन की कार्यवाही बाधित हुई। विपक्षी दलों के नेताओं ने सोमवार को संसद के शीतकालीन सत्र के लिए अपनी रणनीति पर चर्चा की।

प्रेमी के शव से शादी करने वाली युवती ने पुलिस पर मढ़े आरोप

नांदेड, एजेंसी

- कहा- प्रेमी की हत्या के लिए उसके भाई को पुलिस ने ही उकसाया था

महाराष्ट्र के नांदेड जिले में प्रेमी के शव से शादी करने के एक दिन बाद 21 वर्षीय युवती ने सोमवार को इतवारा थाने के दो पुलिसकर्मियों पर युवक की हत्या के लिए उकसाने का आरोप लगाया। युवती के दावे पर पुलिस की ओर से अब तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है।

मृतक के घर पहुंची आंचल ममीदवार ने प्रेमी की हत्या के लिए अपने भाई को फांसी देने की अपील की। आंचल ने बताया कि हत्या वाले दिन, मेरा भाई हिमेश मुझे सुबह इतवारा थाने ले गया और सक्षम के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने को कहा। उसके इन्कार करने के बाद पुलिस के दो अधिकारियों ने उसके भाई को यह कहकर उकसाया कि उसे दूसरे लोगों से लड़ने के बजाय उस आदमी को मार देना चाहिए जिससे मैं प्यार करती हूं। हिमेश ने सक्षम की हत्या के बाद थाने वापस आने की चुनौती दी थी। उसने पुलिस से कहा कि वह सक्षम की हत्या करने के बाद थाने आएगा। फिर उसने उसे (सक्षम को) मार डाला। मेरी बस यही मांग है कि आरोपियों (उसके भाई और पिता) को भी उसी तरह मारा जाए जैसे सक्षम को मारा गया।

प. बंगाल : बीएलओ के प्रदर्शन के बीच सीईओ कार्यालय के बाहर तनाव

कोलकाता, एजेंसी

प. बंगाल में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया में लगे बीएलओ के एक वर्ग ने गणना प्रक्रिया के दौरान कथित अत्यधिक कार्यभार को लेकर सोमवार को सीईओ कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया, जिसके बाद अधिकारियों को प्रदर्शन स्थल पर पुलिस की तैनाती बढ़ानी पड़ी। विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में भाजपा का प्रतिनिधिमंडल चुनाव अधिकारियों के साथ बैठक के लिए वहां पहुंचा तो प्रदर्शनकारियों ने विरोध में नारे लगाए और पुलिस बैरिकेड तोड़ने का प्रयास किया। हालांकि, अधिकारी और कई अन्य भाजपा विधायकों ने अधिकारियों के साथ बैठक जारी रखी।

बैरिकेड तोड़ने का प्रयास करते प्रदर्शनकारियों को रोकती पुलिस।

पुलिस ने शुभेंदु के दौरे से पहले कई स्तर पर बैरिकेड लगाए थे और अतिरिक्त बल तैनात किया था। भाजपा प्रतिनिधिमंडल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय परिसर में प्रवेश करने के कुछ ही मिनट बाद प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड तोड़ने की कोशिश की और इस बात पर जोर दिया कि उन्हें भी ज्ञापन सौंपने के लिए अंदर जाने दिया जाए। समिति के सदस्य बीएलओ के लिए बेहतर कार्य स्थितियों की मांग को लेकर कुछ दिनों से सीईओ कार्यालय के बाहर प्रदर्शन कर रहे हैं।

यहां बर्फ ही बर्फ...

सर्दियां शुरू होने के साथ ही जम्मू-कश्मीर की वादियों में बर्फ भी पड़ने लगी है। पेड़ों और घरों पर यह बर्फ मनोहारी दृश्य भी उपस्थित कर रही है। शोपियां में एक ठंडे दिन में पड़े पाले ने सूखे पत्तों को इस तरह ढक लिया जैसे किसी ने चित्रकारी की हो।

जीपीएस स्पूफिंग : विमानों की सुरक्षा से खिलवाड़

जीपीएस स्पूफिंग की ताजा घटना इसी महीने के शुरू में भारत में हुई थी। इसकी वजह से दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आठ सौ से ज्यादा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें प्रभावित हुई थीं। इस घटना से भारतीय उड्डयन उद्योग के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। दरअसल, जीपीएस स्पूफिंग के कारण कई बार आधुनिक नेविगेशन सिस्टम भी निष्क्रिय साबित हो जाते हैं। आसमान में पायलट को रनवे ढूंढने में भी दिक्कत होती है। जाहिर है कि ऐसे में हजारों यात्रियों की जिंदगी दांव पर लग जाती है। कई बार यात्रियों की सुरक्षा के लिए फ्लाइट को डाइवर्ट करना पड़ता या लंबा इंतजार करना पड़ता है। जीपीएस स्पूफिंग स्मार्टफोन एप्स और लोकेशन डाटा में भी गड़बड़ी कर सकता है। इसके अलावा जीपीएस डाटा पर निर्भर नेटवर्क सिस्टम और महत्वपूर्ण ढांचों पर भी इसके जरिए साइबर हमले किए जा सकते हैं।

जीपीएस स्पूफिंग कितना बड़ा खतरा

जीपीएस स्पूफिंग एक साइबर हमला है जिसमें नकली जीपीएस सिग्नल का उपयोग करके नेविगेशन सिस्टम को गुमराह किया जाता है। इससे विमान को गलत स्थान, दिशा या समय की जानकारी मिलती है, ऐसे में विमानों के लिए यह एक बेहद गंभीर सुरक्षा खतरा बन जाता है। जीपीएस स्पूफिंग के कारण विमान को लगता है कि वह किसी दूसरी जगह है। हालांकि वह हकीकत में असल जगह से कई किमी दूर होता है। जीपीएस स्पूफिंग विमानों के नेविगेशन को गड़बड़ कर सकता है, इनर्शियल रेफरेंस सिस्टम जैसे बैकअप ऐसी स्थिति में मददगार होते हैं।

क्या है जीपीएस स्पूफिंग

यह एक साइबर हमला है जिसमें जीपीएस रिसीवर को गलत उपग्रह संकेत भेजकर धोखा दिया जाता है। यह जीपीएस सिग्नल को जाम करने से अलग है, इसमें सिग्नल रोकने के बजाय गलत जानकारी दी जाती है। जीपीएस स्पूफिंग के परिणामस्वरूप विमान, जहाज और वाहन गलत स्थान पर होने की रिपोर्ट दे सकते हैं।

कैसे की जाती है स्पूफिंग

अमेरिका का जीपीएस सिस्टम (नेवस्टार) 31 सैटेलाइट के समूह से बना है, ये सैटेलाइट पीआरएन कोड नागरिकों और अमेरिकी सेना दोनों को प्रसारित करते हैं। सेना के लिए भेजे जाने वाले कोड एन्क्रिप्टेड होते हैं, लेकिन नागरिकों को भेजे जाने वाले कोड एन्क्रिप्टेड नहीं होते। इसी वजह से वे साइबर हमले के शिकार हो जाते हैं। सबसे पहले हैकर यह पता लगता है कि किस जीपीएस सैटेलाइट का सिग्नल स्पूफिंग के समय आसपास होगा। इसके लिए सैटेलाइट की ऑर्बिट को देखा जाता है।

विमानों की सुरक्षा में भूमिका

- स्पूफिंग विमानन सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है क्योंकि यह नेविगेशन सिस्टम को भ्रमित कर सकता है, जिससे विमान गलत रास्ते पर जा सकता है।
- विमानों में इनर्शियल रेफरेंस सिस्टम जैसे बैकअप सिस्टम स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। जीपीएस विफल होने पर इनका इस्तेमाल किया जाता है।
- स्पूफिंग केवल वाणिज्यिक विमानों को ही नहीं बल्कि निगरानी विमानों को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा होता है।
- जीपीएस जैमिंग के विपरीत स्पूफिंग का पता लगाना कठिन होता है क्योंकि इसमें रिसीवर को यकीन दिलाया जाता है कि सब कुछ ठीक है।

वार जोन में भी इस्तेमाल

स्पूफिंग और जैमिंग वार जोन में भी होती है, मिडिल ईस्ट में यह कई बार हो चुका है। युद्धरत देश स्पूफिंग में महंगी और शक्तिशाली मशीनों का इस्तेमाल करते हैं।

वर्ल्ड ब्रीफ

अतीत की गलतियों पर आत्ममंथन करे जापान

बीजिंग। चीन ने जापान से अपने अतीत पर गहराई से आत्मनिरीक्षण करने, अपनी अनाप-शनाप टिप्पणियों को वापस लेने और ठोस कार्रवाई के माध्यम से चीन के प्रति अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धताओं को प्रदर्शित करने का आग्रह किया है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने सोमवार को एक नियमित समाचार ब्रीफिंग में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा, अत्यधिक महत्व के मुद्दों पर, जापानी पक्ष को यह भ्रम नहीं पालना चाहिए कि वे टाल-मटोल कर सकते हैं।

तेल टैंकरों पर यूक्रेन के हमलों की निंदा की

मास्को। रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया ज़खारोवा ने काला सागर में दो तेल टैंकरों और एक बंदरगाह पर हाल ही में हुए यूक्रेनी हमलों की निंदा की। मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार ज़खारोवा ने कहा कि गाम्बिया के झंडे तले रूसी बंदरगाह नोवोरोस्सिएस्स्क जा रहे दो टैंकरों पर शुक्रवार और शनिवार को हमले में मानवरहित नावों का इस्तेमाल किया गया। उन्होंने कहा कि यूक्रेनी खुफिया सेवाओं ने इन हमलों की ज़िम्मेदारी ली है। प्रवक्ता ने कहा कि लक्षित नागरिक ऊर्जा अवसंरचना वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सैन्य बल मुख्यालय पर हमले की कोशिश

कराची। पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में अर्धसैनिक बल के मुख्यालय पर हमले की कोशिश को सुरक्षाकर्मियों ने नाकाम करते हुए प्रतिबंधित संगठन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) के तीन चरमपंथियों को ढेर कर दिया। अर्धसैनिक बल के एक प्रवक्ता ने बताया कि रविवार रात चगाई जिले के नोकुंडी कस्बे में फ्रंटियर कोर के मुख्यालय पर एक आत्मघाती हमलावर द्वारा हमला किए जाने के बाद चरमपंथियों ने वहां घुसने का प्रयास किया।

खालिदा जिया को वेंटिलेटर पर रखा

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की हालत बहुत खराब है और उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया है तथा स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा विशेषज्ञ उनके इलाज की निगरानी कर रहे हैं। यह जानकारी उनकी पार्टी के नेताओं ने सोमवार को दी। बीएनपी की अध्यक्ष जिया को 23 नवंबर को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था।

जैविक हथियार: चुनौती से निपटने को खाका तैयार करने की जरूरत

जैविक हथियार संधि की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित सम्मेलन में बोले जयशंकर

- बीडब्ल्यूसी में अब भी बुनियादी ढांचे की कमी : विदेश मंत्री

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत ने सोमवार को अनिश्चित अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा माहौल को देखते हुए जैविक हथियारों के संभावित दुरुपयोग पर रोक लगाने के लिए एक वैश्विक तंत्र की जरूरत बताई। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि सरकार से इतर तत्वों द्वारा जैविक हथियारों का दुरुपयोग किया जाना अब दूर की बात नहीं है और ऐसी चुनौती से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जरूरी है। उन्होंने जैविक हथियार संधि (बीडब्ल्यूसी) की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि जैविक आतंकवाद एक गंभीर चिंता का विषय है, जिसके लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को पूरी तरह से तैयार रहना होगा।

हालांकि, बीडब्ल्यूसी में अब भी बुनियादी संस्थागत ढांचे की कमी है। विदेश मंत्री ने कहा कि इसमें कोई अनुपालन प्रणाली नहीं है, कोई स्थायी तकनीकी संस्था नहीं है और नए वैज्ञानिक घटनाक्रमों पर नजर रखने के लिए कोई तंत्र नहीं है। भरोसा मजबूत करने के लिए इन खामियों को दूर करना आवश्यक है। मंत्री ने कहा कि भारत ने लगातार बीडब्ल्यूसी के अंदर मजबूत अनुपालन उपायों की मांग की है, जिसमें आज की दुनिया के अनुरूप सत्यापन भी शामिल है। उन्होंने कहा कि भारत शांतिपूर्ण इस्तेमाल के उद्देश्य से सामग्री और उपकरणों के आदान-प्रदान को संभव बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं मदद का समर्थन करता है। विदेशमंत्री ने कहा कि हमने वैज्ञानिक और तकनीकी विकास की व्यवस्थित समीक्षा की मांग की है ताकि शासन वास्तव में नवाचार की गति के साथ तालमेल बिठा सके। जयशंकर ने कहा कि भारत ने लगातार बीडब्ल्यूसी के भीतर मजबूत अनुपालन उपायों का आह्वान किया है, जिसमें आज की दुनिया के लिए तैयार की गयी सत्यापन व्यवस्था भी शामिल है। उन्होंने कहा कि भारत शांतिपूर्ण उपयोग के लिए सामग्रियों और उपकरणों के आदान-प्रदान को संभव बनाने में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सहायता का समर्थन करता है। विदेश मंत्री ने कहा कि भारत ने एक राष्ट्रीय कार्यान्वयन मसौदा प्रस्तावित किया है जिसमें उच्च जोखिम वाले किरदारों की पहचान, दोहरे उपयोग वाले अनुसंधान की निगरानी, घटना प्रबंधन और निरंतर प्रशिक्षण शामिल है। उन्होंने कहा कि बीडब्ल्यूसी 50 वर्षों से एक साधारण विचार पर कायम है कि मानवता इसे अस्वीकार करे। लेकिन मानदंड तभी जीवित रहते हैं जब राष्ट्र उनका नवीनीकरण करते हैं। अगले 50 वर्षों में ठोस कार्रवाई की आवश्यकता होगी। विदेशमंत्री ने कहा कि हमें संधि को वर्तमान के अनुरूप बनाना होगा, हमें विज्ञान के साथ तालमेल रखना होगा और वैश्विक क्षमता को मजबूत करना होगा ताकि सभी देश जैविक जोखिमों का पता लगा सकें, उन्हें रोक सकें और उनका जवाब दे सकें।

नई दिल्ली में जैविक हथियार संधि की 50वीं वर्षगांठ पर आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते विदेश मंत्री एस जयशंकर।

भारत अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार

जयशंकर ने कहा कि भारत ग्लोबल साउथ के लिए एक विश्वसनीय भागीदार और वैश्विक जैव सुरक्षा के प्रतिबद्ध समर्थक की भूमिका के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा वातावरण अधिक अनिश्चित हो गया है और प्रौद्योगिकी में तीव्र विकास के कारण परिष्कृत जैव प्रौद्योगिकी उपकरणों की उपलब्धता और सामर्थ्य में वृद्धि हुई है तथा निर्माण की लागत में कमी आई है। जयशंकर ने कहा कि कोविड-19 महामारी सहित हाल के प्रकोपों ने सभी को प्रभावित किया है।

श्रीलंका में ऑपरेशन सागर बंधु के तहत चक्रवात प्रभावित क्षेत्र से लोगों को निकालते हुए भारतीय वायुसेना के जवान।

सकारात्मक रही अमेरिका-यूक्रेन के बीच बातचीत

हॉलैंडेल बीच। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध के समाधान की संभावनाओं को तलाशने के लिए अमेरिका और यूक्रेन के अधिकारियों ने रविवार को लगभग चार घंटे तक बातचीत की। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने बाद में बताया कि बातचीत सकारात्मक रही लेकिन शांति समझौते को अमल में लाने के लिए अब भी काम किया जाना बाकी है। रुबियो ने कहा, यह केवल उन शर्तों की बात नहीं है जो लड़ाई को खत्म करती हैं। बल्कि यह उन शर्तों की भी बात है जो यूक्रेन को दीर्घकालिक समृद्धि के लिए तैयार करती हैं। मुझे लगता है कि हमने आज उस दिशा में प्रगति की है, लेकिन अभी और काम किया जाना बाकी है। फ्लोरिडा में यह उच्च स्तरीय बातचीत हुई।

श्रीलंका में फंसे भारतीयों को निकाला, राहत कार्य में तेजी

कोलंबो, एजेंसी

- तिरुवनंतपुरम पहुंचा 104 भारतीयों का अंतिम समूह

भारत ने श्रीलंका में चक्रवात दितवा के कारण मची तबाही के बाद कोलंबो में बचाव अभियान में तेजी लाते हुए वहां फंसे भारतीय नागरिकों के आखिरी समूह को सोमवार को निकाल लिया। कोलंबो में भारतीय उच्चायोग ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में बताया कि भंडारनायके अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर फंसे 104 भारतीयों का आखिरी समूह 'ऑपरेशन सागर बंधु' के तहत भारतीय वायु सेना के विमान से सुबह करीब साढ़े छह बजे तिरुवनंतपुरम पहुंचा।

उच्चायोग ने कहा कि श्रीलंका के बचाव प्रयासों में भारत ने अपनी मदद तेज कर दी है और अभियान का विस्तार कई प्रभावित क्षेत्रों तक किया है। अधिकारियों के अनुसार चेतक हेलीकॉप्टर ने कई लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जबकि वायु सेना के कई हेलीकॉप्टर ने कोटमाले में तलाश अभियान संचालित किया जो सबसे ज्यादा प्रभावित मध्य पर्वतीय क्षेत्र है तथा भूस्खलन एवं बाढ़ के कारण यहां सड़क संपर्क टूट गया है। कहा कि खोज एवं बचाव अभियानों के लिए भारत की विशेषीकृत आपदा प्रतिक्रिया एजेंसी एनडीआरएफ और एचएडीआर की टीम कल कोलंबो पहुंची। उन्होंने श्रीलंका के अधिकारियों के साथ मिलकर कोच्चिकाडे में बचाव अभियान संचालित किया।

ईसा मसीह पर बनी पेंटिंग 27 लाख डॉलर में बिकी

वर्सलीज। बारोक काल के महान चित्रकार पीटर पॉल रूबेन्स की एक लंबे समय से खोई हुई पेंटिंग रविवार को वर्सलीज में हुई नीलामी में 27 लाख डॉलर में बिकी। यह पेंटिंग चार सदी से अधिक समय बाद हाल में पेरिस के एक निजी टाउनहाउस में मिली थी। इसमें ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने का दृश्य दर्शाया गया है। यह एक फ्रांसीसी संग्रह का हिस्सा थी और शुरू में यह माना जा रहा था कि यह उस समय मौजूद रूबेन्स की कई कार्यशालाओं में से किसी एक में बनाई गई कृति है। नीलामीकर्ता जीन-पियरे ने बताया कि पेंटिंग को रुबेनियानम से प्रमाणित कराया।

जमीन घोटाला मामले में हसीना को 5 साल की सजा

ढाका, एजेंसी

- बांग्लादेश की पूर्व पीएम की बहन और भांजी को भी सुनाई सजा

बांग्लादेश की एक अदालत ने अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना को जमीन घोटाला मामले में सोमवार को पांच साल की जेल और उनकी भांजी एवं ब्रिटिश सांसद ट्यूलिप सिद्दीक दो साल जेल की सजा सुनाई। ढाका के विशेष न्यायाधीश की अदालत-4 के न्यायाधीश मोहम्मद रबीउल आलम ने हसीना की बहन शेख रेहाना को भी सात साल जेल की सजा सुनाई। भ्रष्टाचार के इस मामले में 17 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। कोर्ट ने तीन आरोपियों की गैरमौजूदगी में यह फैसला सुनाया। शेष 14 आरोपियों में से प्रत्येक को पांच साल की जेल हुई। अदालत ने हसीना, रेहाना और सिद्दीक समेत सभी 17 दोषियों में से प्रत्येक पर एक लाख टके का जुर्माना भी लगाया और जुर्माना नहीं भरने पर उन्हें छह महीने की अतिरिक्त जेल काटनी होगी।

पाकिस्तान में एक आत्मघाती हमले में पुलिसकर्मी की मौत

पेशावर। उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा में सोमवार को एक पुलिस वाहन के पास हुए आत्मघाती हमले में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई जबकि तीन अन्य घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह घटना लक्की मारवात जिले में हुई। ताजोरी पुलिस थाने की एक पुलिस वैन के समीप एक आत्मघाती हमलावर ने खुद को विस्फोट से उड़ा लिया। विस्फोट में हेड कांस्टेबल अलाउद्दीन की मौत हो गई जबकि घायल हुए अन्य पुलिसकर्मियों को अस्पताल ले जाया गया। हमलावर का साथी भागने में सफल रहा।

भारतीयों से अमेरिका को हुआ फायदा

न्यूयॉर्क, एजेंसी

- मस्क बोले-एच1बी वीजा बंद करने से यूएस को होगा नुकसान

अमेरिका की एयरोस्पेस कंपनी 'स्पेसएक्स' के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एलन मस्क ने एच1बी वीजा का पुरजोर समर्थन करते हुए कहा कि अमेरिका को भारत से आए प्रतिभाशाली लोगों का अत्यंत फायदा मिला है और चेतावनी दी कि यदि इसे बंद कर दिया गया तो यह अमेरिका के लिए बहुत बुरा होगा।

अमेरिका के प्रौद्योगिकी क्षेत्र के अरबपति कारोबारी ने एक पॉडकास्ट के दौरान यह टिप्पणी की, जो रविवार को प्रसारित हुआ। मस्क ने कहा कि हां, मुझे लगता है कि अमेरिका को उन प्रतिभाशाली भारतीयों से बहुत

लाभ हुआ है जो अमेरिका आए... अमेरिका, भारत की प्रतिभा से अत्यंत लाभान्वित हुआ है। एच-1बी वीजा को लेकर टेस्ला के सीईओ ने कहा कि भले ही इस कार्य वीजा कार्यक्रम का कुछ दुरुपयोग हुआ है लेकिन इसे बंद नहीं किया जाना चाहिए।

अवैध आव्रजन से नकारात्मक प्रभाव

मस्क ने आरोप लगाया कि पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन के कार्यकाल में बड़े पैमाने पर अवैध आव्रजन हुआ, जिसने नकारात्मक प्रभाव पैदा किया। उन्होंने कहा अगर अमेरिका में अवैध रूप से आने और सरकारी लाभ पाने का बड़ा आर्थिक प्रलोभन होगा, तो स्वाभाविक रूप से लोग अमेरिका आने की कोशिश करेंगे। यह पूरी प्रोत्साहन संरचना ही गलत थी। जब उनसे पूछा गया कि भारत के युवा उद्यमियों के लिए उनका संदेश क्या है, तो मस्क ने कहा कि वह उन सभी का सम्मान करते हैं जो कुछ बनाना चाहते हैं। कहा कि आप जो पाना चाहते हैं, उससे अधिक देने का लक्ष्य रखें।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 2 दिसंबर, मंगलवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, द्वादशी 03 .57 तक तत्पश्चात त्रयोदशी।

आज का पंचांग

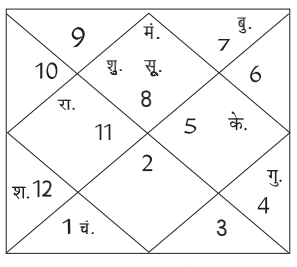

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल- मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-अश्विनी 08 .51 तक तत्पश्चात भरणी।

मेष — आज आप कारोबार को लेकर मित्रों से सहायता ले सकते हैं। रुके हुए कार्य पुनः से प्रारम्भ होंगे। छात्र पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। बेरोजगार लोगों को नई नौकरी मिल सकती है। किसी मांगलिक उत्सव में आप सम्मिलित हो सकते हैं।

वृष — आज कार्यक्षेत्र को लेकर मन में उत्साह की कमी देखने को मिलेगी। नजदीकी लोगों के साथ आपके रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। आज आपको धैर्य और संयम के साथ अपने काम पर ध्यान देना चाहिये। दूसरों की सलाह पर अधिक ध्यान न दें।

मिथुन — आज कार्यक्षेत्र में आपको पदोन्नति मिल सकती है। संतान के विवाह में आ रही बाधा दूर होगी। जीवनसाथी और बच्चों से आपको प्रेम और सम्मान दोनों ही प्राप्त होंगे। आपके विचारों से लोग प्रभावित रहेंगे। सरकारी मामलों में आपको सफलता मिलने की संभावना है।

कर्क — आज परिवार में उत्सव का वातावरण रहेगा। सहकर्मियों की तुलना में आपका प्रदर्शन विशेष और अच्छा रहेगा। किसी बहूमूल्य वस्तु को खरीद सकते हैं। कच्चे माल के आयात-निर्यात में उत्तम धन लाभ हो सकता है। आपकी भावनाओं का अनादर हो सकता है।

सिंह — आज आपकी कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। निजी समस्याओं का निराकरण होगा। कुछ कठिन काम आसानी से अचानक बनने से मन प्रसन्न होगा। गैस और एसिडिटी की समस्या हो सकती है। सामाजिक कार्यों में आपकी प्रशंसा होगी।

कन्या — आज पारिवारिक आयोजन किसी कारणवश टल सकते हैं। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। किसी के उकसावे में आकर काम न करें। अन्य दिनों की अपेक्षा दिन कुछ कमजोर रहेगा। अधीनस्थ कर्मचारियों पर नाराज हो सकते हैं।

तुला — आज आपकी कोई मनोकामना पूर्ण हो सकती है। कोई भी बड़ा काम शुरू करने से पहले बड़ों की राय अवश्य लें। भोग-विलास का भरपूर आनंद उठायेंगे। आपका मनोबल बढ़ा हुआ रहेगा। व्यवसाय में सारी परिस्थितियां आपके अनुकूल रहने वाली हैं।

वृश्चिक — आज आपके व्यक्तित्व में तीव्र आकर्षण रहेगा। इसके कारण आप लोकप्रिय रहेंगे। खर्च करने से पहले बजट का ध्यान अवश्य रखें। गले में खराश और बुखार जैसी समस्या हो सकती है। अनुसंधान संबंधी कार्यों में सफलता मिल सकती है।

धनु — आज कार्यक्षेत्र में आप अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। प्रेम संबंधों में कुछ अनबन हो सकती है। लोग आपकी बातों को अत्यन्त गंभीरता से लेंगे। विद्वान लोगों से भेंट हो सकती है। शाम के समय मित्रों के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करेंगे।

मकर — आज नई परियोजनाओं में सफलता देर से मिलेगी। मानसिक स्थिति नकारात्मक हो सकती है। व्यर्थ में अपने शुभचिंतकों पर संदेह न करें। अधिक भागदौड़ से आपको बचना चाहिए। धन को लेकर दिक्कतें उत्पन्न हो सकती हैं।

कुंभ — आज कारोबारी यात्राओं से आपको लाभ मिलेगा। दूसरों की बातों में आकर अपना समय बर्बाद न करें। रचनात्मक गतिविधियों में सुखद समय बीतेगा। वैवाहिक जीवन में मधुरता बनी रहेगी। परिवार में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन के अवसर मिलेंगे।

मीन — आज नए व्यावसायिक संपर्क विकसित होने के योग बन रहे हैं। आपके विनम्र व्यवहार से विपरीत लिंगी लोग आपसे आकर्षित रहेंगे। दूसरों के कार्य में हस्तक्षेप न करें। घर में कुछ रिश्तेदार आ सकते हैं। विदेश में व्यापार कर रहे लोगों को कारोबार में विस्तार के अवसर मिल सकते हैं।

सुडोकू -178

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

			1			2		
		1						
8								3
7								
				9				
		2					6	
	4							

सुडोकू - 177 का हल

1	2	8	6	5	3	4	9	7
5	7	4	1	8	9	2	3	6
6	9	3	7	2	4	8	1	5
4	1	5	8	9	6	3	7	2
9	8	2	3	7	1	5	6	4
7	3	6	5	4	2	1	8	9
8	6	9	4	3	5	7	2	1
2	5	7	9	1	8	6	4	3
3	4	1	2	6	7	9	5	8

कप्तान के रूप में रोहित हमेशा टीम को यह दिखाते रहे हैं कि वह उनसे क्या चाहते हैं। टी20 और वनडे क्रिकेट में भारत जिस आक्रामक अंदाज की बल्लेबाजी से गुजरा है उसका बहुत सारा श्रेय रोहित और राहुल भाई को जाता है।

-आर अश्विन

स्टेडियम

लखनऊ, मंगलवार, 2 दिसंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

सिफत को राष्ट्रमंडल में निशानेबाजी की वापसी की उम्मीद

जयपुर : ओलंपियन सिफत कौर सामरा को भरोसा है कि भारत 2030 में जब राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी करेगा तो निशानेबाजी को इन खेलों में शामिल किया जाएगा और इससे देश के पदकों की संख्या में काफी इजाफा होगा। राष्ट्रमंडल खेलों के बर्मिंघम 2022 और 2026 ग्लास्गो 2026 दोनों सत्र के लिए निशानेबाजी को पदक प्रतियोगिता के रूप में शामिल नहीं किया गया लेकिन भारत की मेजबानी में देश के निशानेबाजों को अपनी प्रतिभा दिखाने और घरेलू दर्शकों के सामने पदक जीतने का मौका मिलेगा।

पीएनबी की ब्रांड एंबेसडर बनीं हरमनप्रीत

नई दिल्ली : पब्लिक सेक्टर के पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने सोमवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर को अपना पहला महिला ब्रांड एंबेसडर बनाया है। यह घोषणा बैंक के कॉरपोरेट कार्यालय में 'बैंकिंग ऑन चैंपियंस' थीम के तहत समारोह में हुई। इस अवसर पर हरमनप्रीत कौर को उनके नाम और नंबर वाली एक फ्रेमयुक्त पीएनबी जर्सी, साथ ही एक कस्टम-उत्कीर्णित पीएनबी बैट भेंट किया गया।

फुटबॉल में रुकावट को खत्म करने का प्रयास

नई दिल्ली : खेल मंत्रालय ने फुटबॉल की मौजूदा रुकावट को खत्म करने के लिए इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) और आई-लीग क्लबों समेत सभी स्टेकहोल्डर्स के साथ तीन दिसंबर को बैठक बुलाई हैं। ऐसा माना जा रहा है कि केन्द्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया इन बैठकों की अध्यक्षता करेंगे। इसको लेकर खेल मंत्रालय ने सोमवार को ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन (एआईएफएफ) को एक पत्र जारी किया है। मंत्रालय के पत्र में कहा गया इस मामले पर असरदार तरीके से बातचीत के लिए सभी संबंधित स्टेकहोल्डर्स -आईएसएल क्लब, संभावित कमर्शियल पार्टनर्स, एफएसडीएल, ब्रॉडकास्टर्स और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स, आई-लीग और लोअर डिवीजन क्लब्स वगैरह की मौजूदगी जरूरी होगी।

चैंपियनशिप 16 हजार निशानेबाज करेंगे स्पर्धा

नई दिल्ली : 68वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी चैंपियनशिप प्रतियोगिता (एनएससीसी) की राइफल, पिस्टल और शॉटगन स्पर्धाओं की अलग-अलग कैटेगरी में क्वालीफाई करने वाले 16 हजार से अधिक निशानेबाज सोमवार से डॉ. कर्णी सिंह रेंज में शुरु हुई प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे हैं। दोहा में चार से नौ दिसंबर तक चलने वाले आईएसएसएफ विश्व कप फाइनल को ध्यान में रखते हुए इस चैंपिनशिप को महत्वपूर्ण माना जा रहा है।आईएसएसएफ विश्व कप फाइनल के लिए 15 भारतीयों ने क्वालिफाई किया है। शॉटगन में क्वालिफ़िकेशन राउंड आज डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में शुरू हुए। शॉटगन के साथ-साथ पिस्टल स्पर्धाएं भी डॉ. कर्णी सिंह रेंज में होंगी, जबकि राइफल इवेंट भोपाल में मध्य प्रदेश स्टेट शूटिंग एकेडमी में होंगे। पिस्टल स्पर्धाएं 11 दिसंबर से शुरू होंगी और चार जनवरी, 2026 तक चलेंगे।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में होगा गिल की फिटनेस का आकलन

नई दिल्ली, एजेंसी

भारत की टी-20 अंतर्राष्ट्रीय टीम के उप कप्तान शुभमन गिल अनिवार्य फिटनेस आकलन के लिए सोमवार को बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में पहुंचेंगे। इस आकलन के नतीजे के आधार पर नौ दिसंबर से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शुरू हो रही पांच मैच की सीरीज में उनकी वापसी पर फैसला किया जाएगा।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कोलकाता में पहले क्रिकेट टेस्ट के दूसरे दिन बल्लेबाजी करते हुए गिल की गर्दन में चोट लगी थी और इसके बाद वह दूसरे टेस्ट और मौजूदा एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सीरीज में नहीं खेल पाए। भारत की टी20 अंतर्राष्ट्रीय टीम में किसी हैरान करने वाले नाम को जगह मिलने की उम्मीद नहीं है, बशर्ते कोई खिलाड़ी चोटिल नहीं हो। अजित अगरकर की अगुआई वाली चयन समिति को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की खेल विज्ञान टीम से गिल की फिटनेस रिपोर्ट का इंतजार है।

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर पीटीआई को बताया, ''गिल को इंजेक्शन लगाया गया था और उन्हें 21 दिन के आराम और रिहैबिलिटेशन की सलाह दी गई थी जिसमें चोट से प्रभावित मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए विशिष्ट व्यायाम शामिल थे। सूत्र ने कहा ट्रेनिंग के दौरान खेल विज्ञान टीम के उनकी मूवमेंट का आकलन करने तक कुछ नहीं कहा जा सकता। यह भी नहीं पता कि बल्लेबाजी करते हुए वह बिल्कुल भी असहज नहीं है। मौजूदा स्थिति को देखते हुए दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 श्रृंखला के लिए गिल की वापसी की संभावना 50 प्रतिशत है।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में चीजों की जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने बताया 21 अक्टूबर से 30 नवंबर तक हार्दिक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस से बाहर भी नहीं निकले और उन्होंने अपना रिहैब और 'रिटर्न टू प्ले' प्रोटोकॉल पूरे किए। उन्हें टी20 में खेलने की पूरी स्वीकृति (बल्लेबाजी और गेंदबाजी करने की) मिली है और वह पंजाब के खिलाफ मैच के लिए बड़ौदा टीम से जुड़ भी गए हैं। वह चार दिसंबर को गुजरात के खिलाफ खेलेंगे और अगर भारतीय टीम प्रबंधन उन्हें पहले नहीं बुलाता है तो वह छह दिसंबर को हरियाणा के खिलाफ मैच में खेलने की भी योजना बना रहे हैं।

टी-20 प्रारूप में खेलेंगे हार्दिक पंड्या

भारतीय प्रशंसकों के लिए हालांकि अच्छी खबर भी है क्योंकि हार्दिक पंड्या को टी20 प्रारूप में खेलने की स्वीकृति मिल गई है और वह मंगलवार को हैदराबाद में बड़ौदा के लिए पंजाब के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी मुकाबले के साथ लगभग ढाई महीने बाद अपना पहला मैच खेलेंगे। उनके चार दिसंबर को बड़ौदा और गुजरात के बीच होने वाले मैच में भी खेलने की संभावना है। राष्ट्रीय चयनकर्ता प्रज्ञान ओझा दोनों मैच के दौरान उपस्थित रहेंगे जिसके कि टीम की घोषणा से पहले उनकी फिटनेस को परख सकें।

विराट कोहली की तारीफों के बांधे पुल

बल्लेबाजी कोच ने कहा- विराट के भविष्य को लेकर सवाल ही नहीं उठता, उनकी फिटनेस और फॉर्म बरकरार

रांची, एजेंसी

भारतीय बल्लेबाजी कोच सीतांशु कोटक का मानना है कि विराट कोहली के वनडे में भविष्य को लेकर अटकलें नहीं लगनी चाहिए क्योंकि इस दिग्गज खिलाड़ी की 50 ओवर के क्रिकेट में फिटनेस, फॉर्म और प्रभाव पहले की तरह बरकरार है। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैच की सीरीज से पहले सवाल उठाए जा रहे थे कि क्या कोहली और रोहित शर्मा 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप के लिए मुख्य कोच गौतम गंभीर की योजना में शामिल हैं या नहीं। कोटक ने नाराजगी जताते हुए कहा कि उन्हें समझ नहीं आ रहा कि कोहली के भविष्य को लेकर बहस क्यों हो रही है।

कोटक ने रविवार को यहां दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे में भारत की 17 रन की करीबी जीत के बाद कहा मुझे वास्तव में नहीं पता कि हमें इन सब बातों पर गौर करने की जरूरत क्यों है। वह बहुत अच्छी बल्लेबाजी कर रहे हैं और हमें उनके भविष्य के बारे में बात करने की क्या जरूरत है। वह जिस तरह से प्रदर्शन कर रहे हैं, उनकी फिटनेस जिस तरह से है उसे देखकर किसी भी चीज को लेकर कोई सवाल ही नहीं उठता। कोटक ने कहा कि भूमिकाओं को लेकर स्पष्टता, वास्तविक समय में सीख और सीनियर खिलाड़ियों का अनुभव इस समय भविष्य की योजनाओं से कहीं ज्यादा मायने रखते हैं।

उन्होंने कहा वह वाकई शानदार है यार। जब तक वह इसी तरह बल्लेबाजी करता रहेगा, किसी और चीज़ के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है। बल्लेबाजी कोच ने जोर देकर कहा कि न तो खिलाड़ी और न ही टीम प्रबंधन विश्व कप के बारे में सोच रहे हैं और सीनियर खिलाड़ियों के बारे में इस संदर्भ में चर्चा करने की तो बात ही छोड़ दीजिए। मुझे नहीं लगता कि इस बारे में चर्चा होनी चाहिए। रोहित और कोहली दोनों शानदार हैं। वे अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और टीम में योगदान दे रहे हैं। एक बार जब टीम आ जाती है और अभ्यास शुरू हो जाता है, तो हम बस उसका आनंद लेते हैं। हम 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप के बारे में कोई बात नहीं कर रहे हैं।

कोटक ने कहा कि रविवार को कोहली का वनडे करियर का 52वां शतक न केवल उनकी विरासत की याद दिलाता है, बल्कि यह इस बात का भी उदाहरण है कि जिस प्रारूप को वह अब प्राथमिकता देते हैं, उसमें वह कितनी सहजता से जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

कोटक ने कहा यह एक शानदार पारी थी। उन्होंने वास्तव में अच्छी बल्लेबाजी की, जिम्मेदारी ली और एक बार फिर दिखाया कि वह कितने असाधारण खिलाड़ी क्यों हैं। पारी के दौरान कोहली की पीठ में मामूली तकलीफ के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा जहां तक मुझे पता है, वह ठीक हैं।

कोटक ने टेस्ट सीरीज में हार के बाद रोहित शर्मा और कोहली दोनों की टीम में वापसी पर भी बात की। उन्होंने कहा वे अनुभवी खिलाड़ी हैं और जिस तरह से वह बल्लेबाजी कर रहे हैं और साझेदारियां निभा रहे हैं उससे बहुत फर्क पड़ता है। वे अपना अनुभव युवा खिलाड़ियों के साथ साझा करते हैं, और यह अपने आप में एक बड़ा फायदा है। कोटक ने इसके साथ ही मैच के बारे में बात करते हुए बाएं हाथ के तेज गेंदबाज हर्षित राणा की विशेष प्रशंसा की, जिनके कठिन परिस्थितियों में शुरुआती झटकों ने दक्षिण अफ्रीका को मैच जीतने से रोक दिया।

उन्होंने कहा शुरुआती विकेट लेने का बहुत सारा श्रेय हर्षित को जाता है। कूकाबुरा गेंद से आपको केवल शुरुआती दो से पांच ओवर तक ही स्विंग मिलती है और उसने इसका पूरा फायदा उठाया।

दूसरे एकदिवसीय मैच के लिए विराट कोहली रांची एयरपोर्ट से रायपुर के लिए रवाना हुए। एजेंसी

इस उम्र में भी खेलने की भूख के लिए स्टेन ने खुशी जताई

रांची : अपने कैरियर के सर्वश्रेष्ठ दौर से गुजरने के बाद अधिकांश खिलाड़ी घर पर अपने परिवार और कुत्ते के साथ रहना पसंद करते हैं, लेकिन 37 वर्ष के विराट कोहली अभी भी मैदान पर चुस्ती के साथ दौड़ते और डाइव लगाते देखे जा सकते हैं और दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज डेल स्टेन खेलने को लेकर उनके इसी जुनून के कायल हैं। टी-20 और टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने वाले कोहली ने दिखाया कि वनडे क्रिकेट में अब भी उनका कोई सानी नहीं है। कोहली ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे में यहां अपने करियर का 52वां शतक लगाया। स्टेन ने जियोस्टार से कहा जब आप 37 या 38 साल के अधिकतर खिलाड़ियों से बात करते हैं तो वे कहते हैं कि उन्हें घर, अपने कुत्ते, अपने बच्चों को छोड़ना पसंद नहीं है। लेकिन कोहली मानसिक रूप से ऐसी स्थिति में हैं जहां वह पहले की तरह भारत के लिए खेलने के लिए उत्सुक हैं। आप इसे विकेटों के बीच दौड़, फ़ील्डिंग करते और डाइव लगाते हुए देख सकते हैं। वह मानसिक रूप से युवा और तरोताज़ा हैं और क्रिकेट में बने रहना चाहते हैं। उन्होंने कहा कोहली ने पिछले 15-16 साल में 300 से अधिक वनडे खेले हैं इसलिए वह काफी अनुभव रखते हैं। यह उनके शरीर और दिमाग में है। अगर वह तीन दिन की बारिश के बाद भी यहां पहुचते तो भी उनकी तैयारी पर कोई असर नहीं पड़ता। वह मानसिक रूप से मजबूत हैं, अच्छी तरह से सोच सकते हैं और गेंद को बल्ले पर आते हुए देख सकते हैं। दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी यही करते हैं। स्टेन ने कहा वह स्वयं पर भरोसा रखते हैं क्योंकि वह पिछले लंबे समय से खेल रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह अब भी पहले की तरह खेलने को लेकर उत्साहित रहते हैं।

रायपुर के लिए रवाना होते दक्षिण अफ्रीका के खिलाड़ी। एजेंसी

कोहली को जमने के बाद रोकना लगभग असंभव : यान्सेन

रांची : दक्षिण अफ्रीका के हरफनमौला मार्को यान्सेन ने कहा कि विराट कोहली जैसे विश्वस्तरीय बल्लेबाज को एक बार जम जाने के बाद रन बनाने से रोकना लगभग असंभव हो जाता है तथा स्वीकार किया कि इस भारतीय स्टार की सूत्रधार की भूमिका निभाने की क्षमता उन्हें गेंदबाजी करने के लिए सबसे कठिन प्रतिद्वंद्वियों में से एक बनाती है। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच यहां खेले गए पहले वनडे में कोहली ने शतक लगाया जिससे भारतीय टीम यह मैच जीतने में सफल रही। यान्सेन ने कहा कि विश्वस्तरीय बल्लेबाजों के सामने गेंदबाज के पास शुरू में ही कुछ अवसर होते हैं। जब आप विश्वस्तरीय बल्लेबाजों को गेंदबाजी करते हैं तो उन्हें आउट करना काफी मुश्किल होता है। मैं हमेशा बल्लेबाज को उसकी पहली 10 या 15 गेंदों पर आउट करने की कोशिश करता हूं क्योंकि वह तब विकेट से सामंजस्य बिठाने की कोशिश कर रहा होता है। उन्होंने कहा लेकिन एक बार जब वह लय हासिल कर लेते हैं तो उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में आप प्लान बी या सी पर चलते हैं। कोहली ने रविवार को अपना 52वां वनडे शतक जड़कर भारत को 17 रन से जीत दिलाई जिससे मेज़बान टीम ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली। यानसन ने भारत के 2017-18 के दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान 17 वर्षीय नेट गेंदबाज के रूप में पहली बार कोहली को गेंदबाजी की थी।

आक्रामक बल्लेबाजी का श्रेय रोहित और द्रविड़ को : अश्विन

नई दिल्ली : भारत के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने सीमित ओवर प्रारूप में भारत की आक्रामक बल्लेबाजी की रणनीति का श्रेय पूर्व कप्तान रोहित शर्मा और पूर्व मुख्य कोच राहुल द्रविड़ को दिया। टीम को इस रवैये से पिछले कुछ वर्षों में काफी सफलता मिली है।

अश्विन ने कहा कि इन दोनों दिग्गजों ने ना केवल अधिक आक्रामक शैली अपनाने पर जोर दिया बल्कि खुद भी उदाहरण पेश किया। इससे टी20 अंतर्राष्ट्रीय और वनडे में भारत के रवैये में बदलाव आया। अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल 'ऐश की बात' पर कहा कप्तान के रूप में रोहित हमेशा टीम को यह दिखाते रहे हैं कि वह उनसे क्या चाहते हैं। टी20 और वनडे क्रिकेट में भारत जिस परिवर्तनकारी बल्लेबाजी से गुजरा है उसका बहुत सारा श्रेय रोहित और राहुल भाई को जाता है।

शाहरुख खान ने रसेल को योगदान के लिए शुक्रिया कहा

नई दिल्ली : बॉलीवुड सुपरस्टार शाहरुख खान ने आईपीएल टीम कोलकाता नाइट राइडर्स से संन्यास लेने वाले वेस्टइंडीज के क्रिकेटर आंद्रे रसेल के योगदान की तारीफ करते हुए सोशल मीडिया पर उनके लिये लंबा संदेश लिखा है।

आक्रामक हरफनमौला रसेल ने 16 दिसंबर को होने वाली मिनी नीलामी से पहले रविवार को आईपीएल से संन्यास की घोषणा के साथ बताया कि वह तीन बार की विजेता केकेआर के कोचिंग स्टाफ में पावर कोच के तौर पर शामिल होंगे। शाहरूख ने एक्स पर लिखा बेहतरीन यादों के लिये शुक्रिया आंद्रे। चमकते कवच में हमारा शूरवीर। केकेआर के लिये आपका योगदान इतिहास में दर्ज हो गया और अब एक खिलाड़ी के तौर पर नये अध्याय की शुरुआत। पावर कोच, जो अपना ज्ञान, अनुभव और ताकत का राज केकेआर के खिलाड़ियों के साथ साझा करेगा।

स्विट्जरलैंड के खिलाफ कमजोरियों को दूर करना चाहेगी भारतीय टीम

जूनियर हॉकी विश्व कप

मदुरै, एजेंसी

भारतीय टीम बेहतरीन फार्म में चल रही है लेकिन अभी तक उसे असली चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा है और ऐसे में वह मंगलवार को यहां एफआईएच जूनियर पुरुष विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट के नाकआउट चरण से पहले अपने अंतिम ग्रुप लीग मुकाबले में स्विट्जरलैंड के खिलाफ जीत की लय जारी रखने और अपने कमजोर पक्षों को दूर करने की कोशिश करेगी। भारत और स्विट्जरलैंड दोनों ही पूल बी में दो-दो मैच जीतकर अजेय हैं, लेकिन भारतीय टीम बेहतर गोल अंतर के आधार पर तालिका में शीर्ष पर है। चेन्नई में पहले दो मैच में भारतीय टीम ने गोल की बरसात करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उसने पहले मैच में चिली को 7-0 से और फिर ओमान को 17-0 से हराया। दूसरी ओर स्विट्जरलैंड ने ओमान को 4-0 से हराया और फिर चिली पर 3-2 से जीत हासिल की। भारतीय टीम से उम्मीद की जा रही है कि वह अपना विजय अभियान जारी रखकर नॉकआउट से पहले बड़ी जीत हासिल करने की कोशिश करेगी।

सोमवार को चेन्नई में मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम में जापान और न्यूजीलैंड के बीच रोमांचक मुकाबला हुआ।

जापान (लाल) और न्यूजीलैंड के खिलाड़ी चेन्नई में मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम में हॉकी पुरुष जूनियर वर्ल्ड कप के दौरान मुकाबला करते हुए। एजेंसी

भारत हांगकांग मास्टर्स एशिया कप हॉकी में जीता

नई दिल्ली : भारत ने हांगकांग में आयोजित हांगकांग मास्टर्स एशिया कप 2025 में 40 वर्ष से अधिक उम्र के पुरूष और महिला मास्टर्स वर्ग में स्वर्ण पदक जीते। हांगकांग फुटबॉल क्लब पर 26 से 30 नवंबर तक हुई विश्व मास्टर्स हॉकी एशिया चैम्पियनशिप में भारतीय पुरुष टीम ने ग्रुप चरण में हांगकांग को 4-0 और 5-4 से तथा सिंगापुर को 4-0 और 3-2 से हराकर शीर्ष स्थान हासिल किया।

महिला वर्ग में भारत ने ग्रुप चरण में सिंगापुर को 7-2 से हराया जबकि हांगकांग से 1-1 से ड्रॉ खेला। न्यूजीलैंड के खिलाफ उसे 2-4 से पराजय झेलनी पड़ी लेकिन फाइनल में हांगकांग को 2-0 से हराकर खिताब जीता। हॉकी इंडिया ने दोनों टीमों की तस्वीरें साझा करते हुए एक्स पर लिखा चैम्पियंस ऐसे दिखते हैं।

अप्रत्याशित घटना | निजी कारणों का हवाला दिया, सूत्रों ने टीम का खराब प्रदर्शन बताया

महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच ने दिया इस्तीफा

नयी दिल्ली, एजेंसी

एक अप्रत्याशित घटनाक्रम में भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने निजी कारणों का हवाला देकर तुरंत प्रभाव से पद से इस्तीफा दे दिया है।

हॉकी इंडिया ने देर शाम जारी बयान में खबर की पुष्टि करते हुए कहा भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने निजी कारणों से पद से इस्तीफा दे दिया है। हरेंद्र सिंह ने अप्रैल 2024 में ही पद संभाला था और समझा जा रहा था कि वह लॉस एंजिलिस ओलंपिक 2028 तक टीम के साथ रहेंगे। सूत्रों ने बताया, टोक्यो ओलंपिक 2020 में चौथे स्थान पर रही टीम के मुख्य कोच नीदरलैंड के शोर्ड मारिन की भारतीय टीम में इस पद पर वापसी हो सकती है।

अचानक हुए घटनाक्रम में हरेंद्र सिंह ने हॉकी इंडिया को ईमेल भेजकर सूचित किया है कि वह तुरंत प्रभाव से पद छोड़ रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह विशुद्ध रूप से उनका 'निजी फैसला' है।

सूत्रों ने बताया कि मारिन की भारतीय महिला हॉकी टीम के कोच के रूप में वापसी हो सकती है जिनके मार्गदर्शन में भारतीय टीम तोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए चौथे स्थान पर रही थी। मारिन ने अगस्त 2021 में महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच के पद से इस्तीफा दिया था। सूत्रों ने इस्तीफे का कारण टीम का खराब प्रदर्शन बताया है। हॉकी इंडिया के एक सूत्र ने कहा पिछले डेढ साल में टीम ने अपेक्षित नतीजे नहीं दिये हैं जबकि सारी मनचाही सुविधायें कोच को दी गई।

फिटनेस भी बड़ा मसला रहा है और टीम में दर्जन भर खिलाड़ी चोटिल हैं। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने बयान में कहा हम हरेंद्र सिंह को उनकी सेवाओं के लिये धन्यवाद देते हैं। भारतीय हॉकी के लिये उनकी प्रतिबद्धता जगजाहिर है। हम जल्दी ही उनके विकल्प की घोषणा करेंगे।

हरेंद्र सिंह लखनऊ विश्व कप 2016 विजेता भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के कोच रहे थे। वह भारतीय महिला टीम के मुख्य कोच के रूप में वापसी से पहले 2021 से 2024 तक अमेरिका की राष्ट्रीय पुरुष हॉकी टीम के कोच थे। वह सितंबर 2017 में भारतीय सीनियर महिला टीम के मुख्य कोच बने जिसने उस साल महिला एशिया कप जीता था।

2024 अप्रैल में संभाला था पद

2028 लॉस एंजिलिस ओलंपिक तक रहना था टीम के साथ

- **नीदरलैंड के शोर्ड मारिन की हो सकती है वापसी**

भारतीय महिला हॉकी टीम का कोच रहना मेरे कैरियर की बड़ी उपलब्धि रही है। मैने निजी कारणों से इस्तीफा देने का फैसला किया है लेकिन मेरा दिल हमेशा इस बेहतरीन टीम के साथ रहेगा। हॉकी इंडिया के साथ सफर मेरे लिये खास रहेगा और मैं भारतीय हॉकी को शीर्ष स्तर तक ले जाने के उनके प्रयासों में सहयोग करता रहूंगा।

-हरेंद्र सिंह